

राजनयाचक्र॥ अथादि॥ वाक्॥ ॐ लि वं लि वं क नं ॥ सिद्धि वस्तु ॥ यथा वान ॥ पूषा राजनं तनयं पर्यामि ॥
 पूजावालिश को सुखानविषय ॥ यशर्वदायराजं द्वाज ॥ अग्राय ॥ दमा स न नमः ॥ पूषा नमः ॥ अर्चनीं दि
 कं धनं आचार्यस्तु ॥ ॥ ब्राह्मणस्य सूर्यार्घ्यं ॥ अथादिवाक् ॥ अमृकस्तु विवाहादि कर्मणि नान्दि कपू
 जानि मित्रार्थं कर्तुं ॥ सूर्याय नवाधनिमः ॥ पूषा नमः ॥ कतन ॥ ॐ आ कृष्ण ॥ गुरु नमस्तु ॥ अर्चनी
 मधुलाकानं ॥ ॥ न्यास ॥ अर्घपात्रपूजा ॥ तिलकनिधाय पूषा नमः ॥ आसनं ॥ ब्राह्मणस्य वदा
 ननयाय ॥ ॐ तत्त्वायामि सादि ॥ ॐ आ ऊरु कल ॥ ॐ पीवनयः सनस्वमी ॥ ॐ नमस्तु ॥ ॐ लि ता जि
 त ॥ ॐ उयद्वन ॥ ॐ नमः सरावाय च ॥ ॐ श्रीमालखी ॥ ॐ सद्यो जागाम नमः ॥ ॐ सद्यो जागो वमिमीतः
 धमिम् ॥ अदिवदिव दाममस्तु ० सावी ॥ वामस्तु हि कयस्तु दवस्तु ननयाधिया वामराज ॥ अम ॥

ॐ अथा नाथनमः॥ ॐ यातनूद निवातनूनया नापावका णिनी। तथानस्तुवा ४१ नमया णिनि ४१ ना रि
वाक ४१ हि॥ ॐ गत्पूरपायनमः॥ ॐ यत्पूरषवा द ४१ कति ४१ वाक ल्ययन्मूर्खी किमस्माँति। लिम्वा
हूकिमूत्रपादा उच्यता। ॐ ॐ ४१ नाय २॥ ॐ ॐ ४१ न ऊगातस्तुस्वस्यति धियं जी न्वमवस हूमरु
वयम्। पूषा १६ भय ४१ वदसामस्तद् १६ नक्षिता पायू नद ४१ स्वस्त्य ॥ आवाहनादि॥ ॐ न्यायनमः॥
ॐ अग्रय २॥ ॐ यमाय २॥ ॐ ने ज्ञाय २॥ ॐ वरुणाय २॥ ॐ वायव २॥ ॐ कृवनाय २॥ ॐ ॐ ४१ नाय २॥
ॐ विष्णवे २॥ ॐ ब्रह्म १६ २॥ ॐ ग्रातां नमिन्दु॥ ॐ अग्निमूर्द्धा॥ ॐ यमनद हं॥ ॐ यन्त दवी॥ ॐ ॐ ममवा॥
ॐ कृविद हूज॥ ॐ अरित्या ४१॥ ॐ ग्राहि पदा॥ ॐ ब्रह्म नस्यतय॥ आवाहनादि॥ ॐ अस्तुस्वाम्नमः॥ ॐ वः
लय २॥ ॐ वासाय २॥ ॐ हनूमत २॥ ॐ विरीषनाय २॥ ॐ कृपाचार्याय २॥ ॐ पशुनामाय २॥ ॐ मार्क

(ह्र)याय २॥ वद ॥ (ॐ) अस्वस्त्यवा ॥ (ॐ) महि यो शायि स्य कूर्मा ॥ (ॐ) ती वान्धा ॥ (ॐ) नन्द सांता ॥ (ॐ) अय ६ स
 रुम् ॥ (ॐ) प्रजापता ॥ (ॐ) सप्त ऋषयः ॥ आवाहनादि ॥ (ॐ) मा ~~२॥~~ (ॐ) पद र्पा २॥ (ॐ) नन्द गृत्पा २॥ (ॐ)
 पथि यो २॥ (ॐ) कन (धर)पा २॥ (ॐ) या (ग)पा २॥ (ॐ) सवत्स नरपा २॥ (ॐ) मषादि द्वादश नासि र्पा २॥ (ॐ) उच्चैः
 ध्रवाय २॥ (ॐ) कुमानाय २॥ (ॐ) मलुलाय २॥ (ॐ) गन्धुलाय २॥ (ॐ) पञ्च नदी र्पा २॥ (ॐ) नल्लगरायि २॥ (ॐ) च
 तुष्टं गाय २॥ (ॐ) चतु द्वाप नरपा २॥ (ॐ) अर्द्धमासा ॥ (ॐ) अग्रपक्षि ॥ (ॐ) नन्द गृत्पा ८ स्वाहा ॥ (ॐ) सर्व कृपा ॥ (ॐ) क
 लसि षु ॥ (ॐ) या (ग) या (ग) ॥ (ॐ) सवत्स नासि ॥ (ॐ) अस्वस्त्यपना ॥ (ॐ) अर्च्यपना ॥ (ॐ) वाक्क दस ॥ (ॐ) अष्टि नागज
 सा ॥ (ॐ) आमन्त्रे नि ॥ (ॐ) यगवा दस ॥ (ॐ) उद्गर्प जाग ॥ (ॐ) पञ्च नय ॥ (ॐ) उप द्वा नगि ॥ (ॐ) हि नय ग कृ ॥ (ॐ) विष्ठा ८
 क ॥ (ॐ) नमः स्वस्व ॥ (ॐ) अजि यु ॥ (ॐ) चत्वारि ष्टं ग ॥ आवाहनादि ॥ ॥ सत्मान पूजा ॥ (ॐ) दधिया
 वकाय ॥ नमः सननमः ॥ पूष्य नमः ॥ (ॐ) वसा ॥ पति ॥ (ॐ) दधि का वा ॥ (ॐ) दी र्घा यस्त्रो ॥ (ॐ) यद शक ॥

ॐ लक्ष्मिविष्टदा ॥ ॐ श्री ग्वन ॥ ॐ नमः पद्मयव ॥ ननापीव वलि पूजा ॥ स्वस्मानक्षुपा लाघ ॥ दमासनी
नमः ॥ पृथ्वी नमः ॥ ॐ स्वस्मानक्षुपा लाघ ॥ दमासनी ॥ ॐ ग्वन नीला ॥ ॐ ज्ञानवदस ॥ ॐ
मानदाया ॥ ॐ घृणं घृतपा ॥ स्नानलख पूजा ॥ ॐ नभावज्ञम ॥ ॐ कलाख पूजा ॥ ॐ अर्चस्वना ॥ यनमा
लकवि ॥ गपधवल पूजा ॥ ॐ अम्भ अम्भिके म्वा ॥ दखापिखा पूजा ॥ ॐ समस्थदद्याधि ॥ ॐ दीर्घा
प्रसाय ॥ दधि ॥ ॐ दधिकावा ॥ रुल ॥ ॐ यारु लीनी ॥ अन्न ॥ ॐ अन्नपन ॥ वनामाध ॥ ॐ ॐ ॐ नन ॥ नना
सूर्यादि पूजा ॥ ॐ आकृष्ट ॥ ॐ विद्यानवाठमसि ॥ ॐ नमः सरुवायव ॥ ॐ श्री ग्वन ॥ ॐ वरुस्यन ॥ आवारु
नादि ॥ गव ॥ गम ॥ गसादि पूजा ॥ ॐ नमाग ॥ ॐ आय ॥ ॐ ज्ञानवदस ॥ ॥ यववायुध पूजा ॥
ॐ महीश्री ॥ ॐ अस्वकन ॥ ॐ नञासि ॥ ॐ नवबाय ॥ ॐ यान नृद गिवा ॥ ॐ अस्माकमिन्द्र ॥ ॐ इन्द्रस्यैत
धन ॥ ॐ नञाकन ॥ वलिस ॥ सासार ॥ ॥ सिन्दूर मूद पूजा ॥ ॐ श्री ग्वन ॥ ॐ स्नान पूजा ॥ ॐ समिन ॥ ॐ सी ॥ ॐ

वसुधैव कुटुम्बकम् ॥ ॐ स्वस्ति नमो भगवते ॥ ॐ पयःपृथिव्यां ॥ ॐ विष्णो नमः ॥ ॐ अग्निदेवता ॥ ॐ शोभनम् ॥ ॥
धूप ॥ ॐ धूपति ॥ दीप ॥ ॐ तज्जाति ॥ ॥ रुत ॥ ॐ या रुतिनी ॥ नैवया ॥ ॐ अन्नपत्र ॥ प्रतिष्ठा ॥ ॐ मनाः
कृति ॥ तायहाला ॥ ॥ मल्लुल जाप स्कार्य ॥ ॐ निर्वनिर्वकनी ॥ अग्नान्धदि ॥ ॥ गतावाक्कवपूजा ॥
अथादि ॥ वाक् ॥ सूर्यार्घ्य ॥ र्थकादिस्थी ॥ निवादि स्थान कृत्वा लाय ॥ दमासर्ननमः ॥ ॐ वीर्यरुः
वैदायरात्रदात्र ॥ गमशायवस्त्रदेवताय ॥ दमासर्ननमः ॥ ॐ वीर्यपूषे नन्दिक ॥ पत्रनिवावाया
य ॥ ॐ वीर्यादाद्यैः पूषां रुकार्यैः वन्दन ॥ पूषे पक्षपवीर ॥ धूप दीप ॥ अग्नान्धदि ॥ गमनिकयुष्टिक ॥
षष्ठिपूज ॥ ॥ ॐ स्वस्ति नाममीना ॥ ॐ कनिकेन्द्रा ॥ ॐ प्रदक्षिणता ॥ ॐ आशुः गिम्भना ॥ ॐ यज्ञाय
ता ॥ ॐ सूर्यमुनीर्षा ॥ ॐ विदुः ॥ ॐ नमस्तनुद ॥ ॐ वसुधैव साम ॥ ॐ नृषन्तु रागा ॥ ॐ रुषन्तु मसि ॥
ॐ अवनत ॥ ॐ श्रवकीजतामर ॥ ॐ नृत्त ॥ ॐ शाययी ॥ ॐ निवातामासि ॥ ॐ स्वस्ति नमः ॥ ॐ पयःपृथि

वा॥ ॐ विश्वनाथा॥ ॐ अग्निदेवता॥ ॐ श्रीः भक्ति॥ भक्तिकस्वान्त्रक भन्र्थकादिस्तुविश्वलेनदका
कर्मयायकस्तुत्तमस्तु॥ ॥ यिलिनीनमिर्तरुंगा उवात्त (भननत्वाय॥ वाक् (वनस्वस्तिवाः
चनप (०त्॥ चन्दनादि आशीर्वाद॥ ॐ नमः सरवायव॥ भक्तिकस्वानविश्व॥ ॐ श्रीः भक्ति॥ वा
क्रधा अत्रसंकल्प॥ वाक् क्रधादक्षिणदानं॥ वाचनी॥ पवित्रानपूजाकाय॥ न्यासलिकाय॥ विसर्जन॥ ॐ
उदयगतम॥ पूजापतिस्वस्तिकस्तु॥ र्थकादिस्मिपूजापतिया हस्तस्तीखनहाय॥ पूजनी॥ पूजापतिमू
र्त्येव दमासननमः॥ पृथ्वी॥ ॐ हस्तार्धचन्दनयस्त्रापदीतपूषादक्षिणार्ध॥ अग्रगंभीदि॥ ॥
र्थकादिस्मिनीदीकपूजायानागुवात्ताकज्ञाय॥ ॐ श्रीः भक्ति॥ पञ्चवायुदधुमर्तकिस्तसामाधुमः
स्वशुद्धिआदिनदकालडाज्ञाय॥ पूजाकाय॥ वास्यनका॥ अरिसेकचन्दनादि आशीर्वादस्त (भननस
हित॥ च्यातवाग॥ दाकविश्वक॥ सर॥ ॐ श्रीः रुलिनी॥ श्रवति॥ ॐ तजसि॥ गायहाल॥ ॐ मनोहामि॥ य

मिष्टा॥ चिलिनी॥ समयवियक॥ लख अनथया केंडो प्रजापति चाय॥ ॐ असुन द्रुमिन्द्र॥ सूर्यसाकि
नं कुर्यात्॥ ॥ नूतिना न्दिक पूजा विधिः समाप्तः॥ ॥ तत्ता गृहं गत्वा यवा दकं कात्रयन्॥ यवा
दकं शमालकवसप॥ षाठ्ठा माह कादि॥ सफ दान माह कादि गृहं गत्वा सको मानी सूर्यादि स्थनः
स्नान सवसप॥ ॥ धी कादि सी पृष्ठा राजनी कृत्वा॥ अथादि वाक्॥ यथोद्देशः आस्य दे कवृद्धि मध्यवा
दक पूजानि मि त्थर्थ कर्तुं पृष्ठा राजनी समर्पयामि॥ ॐ सिद्धि त्र सुयथा वादा॥ तत्ता अजमान न सूर्यार्थ
कृत्वा॥ अथादि वाक् पूर्ववत्॥ आ कृषु॥ माह पितामहि प्रपितामही प्रिह पितामह प्रपितामह माताम
प्रमातामह वृद्ध प्रमातामह स्वः इन्द्र मासनी वृद्धिः पृथी वृद्धिः॥ ॐ गृह पतयद्गर्भये विषुव सदा शिवाय
इन्द्र मासनी वृद्धिः॥ पृथी वृद्धिः॥ षाठ्ठा माह कास्यः इन्द्रादि नवदवना स्यः सफ दान माह कास्यः ॐ क
मासनी वृद्धिः॥ पृथी वृद्धिः॥ विष्णु स्यादवस्था इन्द्र मासनी वृद्धिः॥ पृथी वृद्धिः॥ नन्दिके ग्वत्राय शिव वायवा

यद्दमासनीवृद्धिः पूषीवृद्धिः ॥ नृवीयादार्घ्यं कात्रयन् ॥ विष्णुदवादि सकलस्य ॥ ॥ गमयन्ती मन्त्रदा ॥
 कनार्द्धमासः ॥ ॥ उलपाय पूजा ॥ ॐ वक्र (त) नमः ॥ ॐ विष्णुवश ॥ ॐ नृदाय ॥ ॐ सदागिवाय ॥ ॐ वनः
 मूर्त्यवन्दना कृतपूषी नमः ॥ धनमृदान्दर्शयन् ॥ कृष्णदयनालादनी ॥ ॐ ॐ ममावन्तः श्रुवी ॥ पुनः
 प्रकृ (त) त्यादि ॥ लैखर्धनः ॥ आत्मनसि श्रयन् ॥ तिलकं निधाय पूषं च ॥ आसनतय ॥ आत्मा सुनाय नमः
 ॥ सिति न ॥ आत्ममूर्त्य नमः ॥ पूजा जय ॥ सफेयाध ॥ गयाये श ॥ गदाधनाय श ॥ पूषुनीकाय नमः ॥ शु
 काननाखी हाय ॥ अपविशुपविशुवा ॥ जलदयानू ॥ ॐ नन्नादवी ॥ विष्णुदवादि पूषी दयातु ॥ कन
 वनमः ॥ दकाय श ॥ एतेनीपद्मा श्री मध ॥ सावित्री विजया जया ॥ देवसना स्वध ॥ स्वाहा ॥ मातृनासकि
 मातृनः ॥ कृष्णपूषी तथा तुष्टि ॥ आत्मा देवतया सह ॥ नन्दानन्द निवासस्य ॥ वसुधैव कुटुम्बकम् ॥ ॐ
 याचविजया येव सफेता दानमाहकाः ॥ अष्टवसूतयः पूषी स्वध ॥ ॐ त्यादि ॥ अपसव्य नृजनं

॥ वाक् ॥ कर्तुं स क्रिया दग ॥ वि० श्व द वा हु नी ॥ उ० उ मा स श्व र्ष ती थ ना वि० श्व द द्वा स श्रा गतः ॥ दा
 ॥ सा दा स र व ४ स न म ॥ ॐ ह्या वा रु नी ॥ ॐ स रु स गी र्षा पू ज नी ॥ मा ह श्रा वा रु नी ॥ ॐ ॐ दी वि षू ॥ ॐ
 वि षू र्धु की ॥ ॐ न दि प्रा सो वि पी न्य वा ज्ञा ग्वा ५ स ४ स मि ध न ॥ वि षू र्धो त्र मी प द म ॥ ॐ ह्या वा रु नी ॥ वि०
 द वा दि न स र्वे त्या य व द्वा व द ली द्ध मि श्रि न य वा द क रु सार्ध वृ द्धि ॥ प्र ह्य र्ध वृ द्धि ॥ न वी च न द न
 य स्ता प वी त पु ष्य धू प दी पा न म ॥ अ ग न्ध दि ॥ वि० श्व द वा दि क्र म द न्न स र्क र्ण का य नू ॥ म धुः
 ली का त्र य नू ॥ स्ना न क डा वा वा य ॥ ॐ म ध्वा ना ॥ अ शा दि वा क् ॥ ॐ वि० श्व द वा दि न्न स र्क र्ण का य दि ॥ पू
 ज नी ॥ ॐ द व स वि त ४ प्र स व ॥ अ न्न स र्क र्ण पू जा वि धा नी न स र्व वि धि प त्रि षु म सु ॥ अ न्न स र्क र्ण वि
 द म सु ॥ ॥ त ना ग वा र्च नी क या नू ॥ क पि ला दि प ५ ॥ मा ह ह्या ॐ द मा स नी वृ द्धि ४ पु ष्य वृ द्धि ४ ॥
 ॐ वृ क्का ध्म दि न्न षू मा ह का ह्या ॐ द मा स नी वृ द्धि ४ पु ष्य १ ॥ ग द प ति मूर्त ह्या ॐ द मा स नी वृ द्धि

म न्नो व स व य न्न प ति न गा य दि यो गं च र्ध के त नः १

॥पूष्यं वृद्धिः॥ गुनवत् दमासर्न वृद्धिः पूष्यं वृद्धिः॥ वनूनागनाजाय दमासर्न पूष्यं वृद्धि
॥वर्हिर्द्वानागै नर्या दमासर्न वृद्धिः पूष्यं वृद्धिः॥ षाठ्ठमाहकार्या दमासर्न वृद्धिः पूष्यं
वृद्धिः॥ सफदानमाहकार्या दमासर्न वृद्धिः पूष्यं वृद्धिः॥ ॐत्यादयः सर्वे॥ आवाहनी वृ
द्धिः॥ पूऊनी॥ वृद्धा ल्ये शामाह ग्वय्ये॥ कोमार्ये॥ वेष्वय्ये॥ वात्राक्षे॥ ॐन्द्रो ल्ये॥ त्वा
मूढुये॥ महालक्ष्म्ये॥ गलपतये॥ हनम्वाय॥ विघ्नो जाय॥ विनायकाय॥ लम्बाय
नाय॥ उनयश्च॥ द्विष्टुश्च नर्या॥ ॥ गलपतये॥ गुनर्या॥ वनूनागनाजाय॥ वर्हि
र्द्वानागै नर्या॥ षाठ्ठमाहकार्या॥ रज्जोत्रीपद्मा गवीध्रत्यादि॥ कपिलादिपंचगमाह
कार्याः॥ अर्घ्यं वृद्धिः॥ नवदधिद्वीवदत्रीमिश्रितयवादकहस्तार्घ्यं वृद्धिः पार्श्वार्घ्यं वृद्धिः॥
उत्पार्श्वं वृद्धिः॥ नवचन्दनयक्षापवीतपूष्यपदीपताम्ररुलनेत्रयादिसंकल्पसिद्धि

वमु॥ मधुल॥ जाय॥ ॥ रुंदीस्यीगाववदारावनु॥ साग्र॥ ॐ गं वीदिता ॥ वसिष्ठापादि॥ अग्रगं ध
दि॥ ॐ स्रष्टाकृतमनु॥ दीर्घानिन्दा ॥ नय ॥ ॥ पादि॥ जरीदयात्॥ सर्वस्य ॥ निवा आपसनु॥ पृथीद
यात्॥ ॐ लक्ष्मीवसतिपृथ्यापादि॥ अकरीदयात्॥ वि ॥ ॥ धर्मादवानां दलमन्नमदकमदीयमनु॥ भाः
रूपकादि सर्वस्य ॥ दलमन्नमदकमदीयमनु॥ रुक्मां जरीव ॥ ॐ अस्मिन् ॥ भगनावर्द्धतां॥ मधुल
म ॥ ॥ जल ॥ नदीदयात्॥ ॐ दातावन्ना विवृ॥ मात्पक्ष जलनसिचयत्॥ ३ गान्वा आनिष ॥ सनु॥ स
पाणिष ॥ सनु॥ यजमान ॥ स्वाहावाचयिषा॥ वाक्म ॥ दन॥ वाच्यतां॥ ॐ आधरुपितनागार्ह कृमानं
पूस्कनमुजम्॥ ॐ ति ॥ भग्नससु रुलपूर्य गृहात्वा॥ ॐ य ॥ धरुपुन्रधासत्॥ पृथीकनसिपूष्क॥ ॐ उ ॥ ऊ
वहनी नमृतीद्युतीयय ॥ कीलालीयनिर्मुक्तम्॥ स्वधसु गय्ययतमपिरुन्॥ ॐ ति जल ॥ नदीदयात्॥

॥ ॥ मतायथ कर्म क्रियाणि ॥ ॥ र्थकादिनका नानकर्म याय श्रीलाला लाडा हौं ॥ स्वस्तिकस्तपी ॥ ॥
पनि, वीक्षितकी गय ॥ निर्मन्त्रु न कृत्वा ॥ ॐ नमो हनी वलि ॥ ॐ अथ वाय ॥ दीप ॥ ॐ गतास्ति ॥ ॥ निपयन
॥ ॐ गय वाय ॥ रीखन हाय ॥ ॐ दवस्यत्या ॥ स्वानक ॥ ॐ गगानक ॥ ॐ उसमाए कादि ॥ ॐ न्द्रादिनवदव
तारणा, कपिलदिपिच ॥ ॐ गमाए कारणा ॥ ॐ दमाहर्न वृद्धि ॥ ॐ पूषा वृद्धि ॥ ॐ वीचन्दनयक्षाय वात, धूप
दीप दयात् ॥ ॥ मितां रुता उवाच ॥ ॐ गननेत्वाय ॥ स्वस्ति वाचनेय ॥ ॐ न ॥ ॐ गतवन्दका वाय ॥ ॐ नक्षो
रुही ॥ काठ १०८ ॥ वन्दनादि, आगीर्वाद विय ॥ ब्राह्म ॥ ॐ नव दार्चने कुर्यात् ॥ ॐ श्राय ॥ ॐ ४ ॥ ॐ जा
तवदस ॥ ॐ नमो ग ॥ ॐ हस्या ॥ ॐ गहनीत्वा ॥ ॐ वृहस्पति ॥ ॐ नमो सुसर्ग्या ॥ ॐ समरथ ॥ ॐ श्री
माल ॥ ॐ तिव दार्चनी ॥ अरिषक ॥ ॐ दवस्यत्या ॥ वन्दनादि आगीर्वाद ॥ सरु ॥ ॐ या ४ रुसिनी ॥

८२
 आत्रि॥ ॐ नमोऽसि॥ ॐ मनाः रूति॥ प्रतिष्ठा॥ ॥ यथा दकवि सङ्ग न कृत्वा॥ ॐ दवा गभ पु॥ ॥
 उगमा एका सतया सिद्ध न काय॥ सकल मूना॥ ॐ ॐ ॐ ॐ वि॥ ॥ गम ग्रासादि पूजा तय कल द्वा
 य॥ तना सूर्य साधि र्द कृ यो न्॥ ॥ मिसार्थ कादि स्थी ला सा ला डा मा स ध ॐ या का डा र्थ ता य न॥
 ॐ सखात्र थि॥ स्वस्तिक सन॥ रुज मया न के॥ वाक्क नादि रुज नी॥ गत वृन्द का रु ल लि स द्वि स्थ
 ता ॥ ॥ थन दु स लया विधि समा फ ॥ ॥ अथ वा द्वा म स द ॥ कर्म शु र्ग ॥ रंग रू धि न र्प शु व
 र्म जी न का त य नी ग थ॥ जाग कर्म त ता नान् निष्कृ मा त्रा स नी त थ॥ चू डा वृ त वि वा हा दि प्रो का वि प्र द ॥
 क्रिया ॥ ॥ अथ सन्निकृ कृ वि वा हा या व स प वि धि ॥ लि ख्य त ॥ ॥ व द्वा अ वृ क त ॥ य द्वा य द्वा
 श्री ल द्वा ना ग य स प ना ग ना ग कृ त्वा ग मं ॥ गम ग्रा स को मा नी प शु व लि सूर्य आ दि य वा द क या स लि स
 तय व हि न इ म दि॥ अग्नि कृ द्वा या पू र्व स ल्प ल्प काने स्था प्य॥ द्वा पा र्श्व ना का य॥ द्वा न स ति प्वा त स हि

गदयकाडो, दानस, लास्यविधिधो॥ अग्निनीरुलिनीकाय॥ दानसलंसावकीह॥ विधिध्वंयवादकया
 य॥ ॥ शिवाचार्यनिबद्धा पूजायाचक॥ मिसार्थकादिस्पृष्टासचन्दनादिस्वरु, श्रान्तिस्त्रयाचकवि
 धिधो॥ स्रक्काय॥ दिष्टिविचक॥ वक्रादि, प्यंथनविधिधो॥ ॥ मिसार्थकादिस्पृष्टासालाडो, वाक्मदः
 वा, यंकुलिस, स्वस्ति कसर्वसाचक॥ शिवयान॥ ॐ गवद्याय॥ निर्मकनयाय॥ ॐ नकोहदी॥ वलि॥
 ॐ अश्वतो॥ दीप॥ ॐ गजासि॥ अर्घपागुजलनसिचयत्॥ ॐ देवसत्त्वा॥ स्नानगानक॥ वक्र (हदीसासना
 यब्दमासनेनमः॥ पूषीनमः॥ अश्वकल (गया, सपनागनाजाय, यद, यद, यद, वहिर्द्वीगमदिष्टदर्म
 सनेनमः॥ पूषी २॥ चर्वचन्दन, यक्षापवीत, धूप, दीप, नेवद्यादिसकल्यसिद्धिनकुनमः॥ जयस्तोत्र
 त्य॥ ॐ उद्ध वक्राद्युखधुं निजयवनलर्यवक्रयागीस्वनूप, देवानीश्वर, तगीसनसिजनयनं, वाज
 हीसासनहं॥ चंपा, कूलंगिवर्कु, गुजवनचतुर्नवा, कमालाजयन्तः॥ स्वदंदवहर्कं दिजडाघसक
 लचिन्मयत्वादिऊर्ध्व॥ अगुगिदि॥ मण्डलस्थितपुष्पांदयात्॥ मित, फंताडवा, सगुणानन्ताय॥ यं

कादिनस्रच्छालिविनत्वाय॥धनास्रच्छाय॥गुणिस्रच्छालासातस्रमागुत॥प्रिवानश्रु॥चकनमनु॥ॐ कां
ॐ कां ॐ ॥कां ॐ मनु॥ॐ दीर्घायुस्त्वा॥चन्दनादि श्रानिर्वाहद्वयं॥स्रु॥ॐ याः रुलिनीः॥श्रान
ति॥ॐ तं आसि॥ॐ मनारूतिः॥प्रतिष्ठा॥चन्द्रमण्डलतनत्वाय॥ॐ मंदवा॥नापिकपूजा॥रुमाघ
चन्दनयस्त्रापवीतपूष्यानि॥दक्षिण॥चन्द्रमण्डलनापिकपूजाय॥लासालावमासघदयावका॥ॐ स्र
खानथि॥लिवीसस्त्रिकासनस्रतया॥ॐ पूर्वसाचकं लिलसिपावकं॥स्नानयाचकं॥काठयावमु
नापिकविय॥भवगुवमुनतियक॥धनस्रच्छायविधि॥पूनलासाला॥यहमण्डपयावायव्यका
स्रस्त्रिकासनस्त्रि॥निर्मळनादिस्त्रागुर्त्वं प्रपायाथ्वयाय॥मण्डलयास्नानविय॥मनारु
ताउवांनत्वाय॥ॐ तं नमिदु॥रुलिनीनत्वाय॥ॐ तं ववायू॥लासानगल॥ॐ श्रुष्टु॥गः
तवृन्दिकानकाषायक॥ॐ प्रजापतनत्वा॥प्रसादपितिनीनत्वास्त्रिस्रुता॥विय॥ॐ दीर्घायुस्त्वा॥र्व

दावनचय॥सिराश्रानतिप्रतिष्ठा॥ॐमनारूति॥सलाउआनकावमासधउयावकाउथातायन
॥ॐसखानेपि॥तलसस्वस्तिकासमस्तय॥भनवन्दिकाकलिनीसहितनकाठायावसलालसगय
लाजासगुदधिसहितनऊनैकानयन॥वाह्वःस्वस्तिवाचनीप॥ॐ॥उच्छिष्टकलकेलैकेय
॥धनवाभ्रतयाकलिनीकायविधि॥केन्यायाश्लसालिलसिपाचकाउहानयावकंदय॥म
वगुवभुनतियक॥आसिनसिद्धनपूजायाय॥सिद्धनकाओलनवसप॥आम्बीनदितिया
ओलन२॥अथगतिल२॥गु३२॥हनिडा२॥श्रुडक२॥लवग२॥मत्स्य२॥लाजा२॥इर्वाकत२
॥सहितयसलाव२॥सगुनजातन२॥निफिसात्रत्वा२॥सिन्दुत्रिसात्रत्वा२॥मिमदलठपा१
॥सिंधमूठग्व२॥लंविनक२॥लंयाविनश्राकुलिपा१॥आकायापाद्यश्राकुलिपा१॥काउपा
ठलंपा१॥नायपातलंपा१॥मूलंठाखनगुपा१॥नायूकायलकु॥गाम्बूलपूगदल॥कल
ग॥ग्व१॥द्रुर्कसिन्दुनमूठ॥मनाकिरु१॥नायपागायधूंऊऊमकासिद्धनसहितकलग

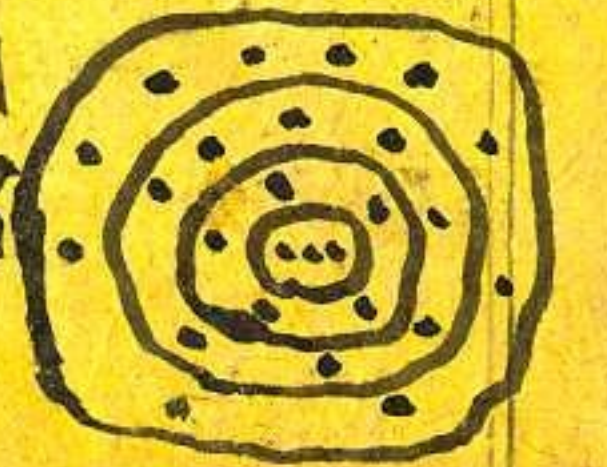
गवयः गमलकननः ॥ साक्षिः ॥ २

लिङ्गवन्ननामिका गमलावक ॥ ॐ नृलंकनमसि ॥ पादमूढसिन्धु नक्षाय ॥ ॐ श्रीगणेश ॥ व
न्दनादि आशीर्वादप्रतिष्ठा त्वं धनक ॥ दक्षिण ॥ गवयः गमलविषा ॥ ॥ वन्दनादि आशीः
वर्धप्रतिष्ठा ॥ द्रवापि रवावलिङ्गाय ॥ कलशसमृद्धपिनिनीक्षाया ॥ वन्दुसधुलसत्ताडसिन्धु
त्रविषा ॥ यदि सितसूर्यो गमकिर्दीकूर्यात् ॥ दयैव कन ॥ धनसिन्धुया विधिशातनासिन्धु
त्रमधुपन्नवहिर्गत्वा यद्रूमधुपयविगन्तु ॥ मिसार्थकादि स्यात्तासाताडयो कूलिसस्वस्ति
कासनसर्वसावकत ॥ मित्रपयत ॥ ॐ नववाय ॥ नृमं वुनयाय ॥ वलिमत ॥ ॐ अर्थपा
यलं रवनकाय ॥ ॐ देवस्यत्वा ॥ स्नानननक ॥ वस्त्रा आदिन ॥ धूषदीपकागृत्वा ॥ पूर्ववत् ॥ मि
नैरुगाठवा सगुननेत्वाय वस्तुकाटाया ॥ वन्दनादि आशीर्वादसंभनसूर्यतस्यैतया
वस्तुविषा ॥ ॐ वसा ॥ पविर्ग ॥ यासादपिठिनीरुलिनी गठवृदि कानकाखायके ॥ ॐ आकृ
धवस्तुयिदिहीयागविषा ॥ २ १ ग्याडात्वाय ॥ रुलिनीकाय ॥ ॐ

॥ गगर्बदिका ॥

[illegible]

यत्ना॥ कृष्णजलनसिचयत्॥ पुनारुद्रवज्रवत्तगादेत्पामहाम्ना॥ भिदास्युनिगापृथीनयाश्चायस्र
 कर्मसि॥ ४५॥ स्रनहगन्धवन्दननास्रुदही॥ मधुकेटरामदन॥ तनिगसिवस्रधनागदायसमनाधय॥ सि
 वामिठीधवाविष्ण॥ वामहस्तउपनिष्ठाप्राहस्तार्यी॥ तमिलेपनी॥ ४६॥ धिगाय॥ धिवीचैवगन्धवाविधि
 सपिगा॥ पूर्वजन्मकृतीयापद॥ कृतीस्रकृतीतवत्॥ ४७॥ रुजन्माधिकीयापद॥ हिजन्मगियत्कृती॥ वधिराकर्म
 स्रुदहजन्मजन्मानकनष्व॥ वधिराकर्मस्रुदहजन्मजन्मानकनष्व॥ कनपृष्टजलिक्त्वा॥ ग्रामयत्क
 नयगसा॥ अरवधुमधुलादृष्टजामात्त्व॥ विशिन्नया॥ पृष्टीचविविधकानाजायगविविधकूल॥ गत्स
 र्वक्रमगीदवन्कुरुगिवसर्वदा॥ स्रुपुमाहमधुलक्त्वा॥ पीगत्स्रुत्तुनमधुलं गिवधिराकर्मनिदि
 यत्॥ कवा॥ वाया॥ पिथु॥ रुद्रादि१०॥ दधुजयादि८॥ दधुस्रयाजातादि५॥ मधुगिदव३॥
 चन्दन॥ सिन्दूर॥ यक्ष्मापवाग॥ पृष्टी॥ वीज॥ रुत॥ पूग॥ रुत॥ १०॥ ताम्बूल॥ धतवा॥ लीताया॥ ४८॥



दिहम॥ ॥ गता पूजनी ॥ ॐ गद्यतयनमः ॥ ॐ गुन्ना ॥ ॐ दानपालाय ॥ ॐ कृष्णपालाय ॥ ॐ आ
धनवहाकाय ॥ ॐ अनीतासनाय ॥ ॐ कानासनाय ॥ ॐ कर्त्तुकासनाय ॥ ॐ कनकभय ॥
ॐ गुताय ॥ ॐ दानवयुग्मय ॥ ॐ कलिभय ॥ ॐ अम्बदाय ॥ ॐ यशुर्वदाय ॥ ॐ सामव
दाय ॥ ॐ अथर्वदाय ॥ ॐ वक्राक्षे ॥ ॐ माहर्ष्ये ॥ ॐ कोमार्ष्ये ॥ ॐ वेष्वर्ष्ये ॥ ॐ वानार्ष्ये ॥ ॐ
न्द्राक्षे ॥ ॐ वामर्ष्ये ॥ ॐ महालक्ष्म्ये ॥ ॐ रुद्राय ॥ ॐ अग्रय ॥ ॐ यमाय ॥ ॐ नैमिषाय ॥ ॐ व
रुणाय ॥ ॐ वायव्य ॥ ॐ कुवनाय ॥ ॐ शम्भनाय ॥ ॐ विष्णवे ॥ ॐ वक्राक्षे ॥ ॐ जयाय ॥ ॐ विजया
य ॥ ॐ अजिताय ॥ ॐ जम्भने ॥ ॐ रुम्भने ॥ ॐ माहिने ॥ ॐ आकर्षणे ॥ ॐ सञ्जागाय ॥ ॐ वाम
दवाय ॥ ॐ अद्यावाय ॥ ॐ गत्यनूषाय ॥ ॐ शम्भनाय ॥ ॐ वक्राक्षे ॥ ॐ विष्णवे ॥ ॐ रुद्राय ॥ ॐ सूर्य
महलाय ॥ ॐ साममहलाय ॥ ॐ वक्रिणमहलाय ॥ ॐ जामाण्यमहलाय नमः ॥ आवाहनादिरूप

ष्य. धूप. दीप. नेत्र. दक्षिण. अग्रगंधदि॥ ॥ जाय॥ स्नात॥ सर्वदयमयि स्तुति. सिद्धि. धर्म. किन्नरा॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय॥ जयायाः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय॥ स्याज्जागदिकापञ्च. वक्रायाः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय॥ जामाता
विष्णु. रूपासि. सामा. कर्ण. नल. मधु. ला॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय॥ स्याज्जागदिकापञ्च. वक्रायाः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय॥ जामाता
तत्वाधिपायचै॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय॥ स्याज्जागदिकापञ्च. वक्रायाः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय॥ जामाता
ताम. मधु. ला. र्जन. वि. ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय॥ स्याज्जागदिकापञ्च. वक्रायाः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय॥ जामाता
नस्या. द. ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय॥ स्याज्जागदिकापञ्च. वक्रायाः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय॥ जामाता
॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय॥ स्याज्जागदिकापञ्च. वक्रायाः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय॥ जामाता
स्मिन्. ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय॥ स्याज्जागदिकापञ्च. वक्रायाः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय॥ जामाता
स्यात्. ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय॥ स्याज्जागदिकापञ्च. वक्रायाः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय॥ जामाता

नक्षत्रं सूर्याः शक्रवर्माभिव्यक्तं यस्मिन्दिनविवाहस्यास्तदिनविजयीतव ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

दायमानाः॥ॐ ह्रीं द ह वि॥॥ॐ ह्रीं न ह सूर्यसादिदीप्यन्तु॥पूजा कन्यादानजामागामनुनपूजासं
पूरुर्थकर्तव्यकर्मनः॥सादि॥ह्रीं सूर्यायिपूष्यनमः॥ॐ नित्यामागामनुनविधिसमाप्तः॥ॐ॥ ॥
अथ कन्यादानविधिः॥ ॥ॐ ह्रीं न ह सूर्यायि॥वाक्॥ॐ आ कृष्ण॥ॐ सत्रा कृष्यातु॥ॐ व
दि॥सालाया मासनमाह्वयार्ह॥ॐ सत्र ह ह साश्रुलिवक्षय॥ॐ साधु व वाक्ता नाम च यिष्या
भारुवनी॥॥जामाताप॥ॐ॥ॐ सा व ह मास॥ॐ अर्चय॥॥ॐ सत्र ह विस्त्रय द द्या
तु॥ॐ विष्टुना विष्टुनः॥विष्टुनप्रतिगृह्णी॥॥जामाताप॥ॐ॥विष्टुने प्रतिगृह्णीमि॥
ॐ व त्रिषासि समातानामुद्यतमिव सूर्यः॥ॐ म न म ह ति षामि सो मा क ग्म हि दा स ति॥
न क मा स नी पु न न क पा दा स नी॥ॐ सत्र ह पा दार्घ्य द द्यातु॥ॐ पा दार्घ्य पा दार्घ्य पा दार्घ्य प्रति
गृह्णी॥॥जामाताप॥ॐ॥पा दार्घ्य प्रतिगृह्णीमि॥विना जा दा ह सि विना जा दा ह म गी य म

नैकताञ्ज

यिवाद्यायविनाजादाह॥३॥विधा॥ ॥ग्वग्त्रदपादप्रक्षालदी॥ग्वस्त्ररुषींजामावश्रावम
नदद्यात्॥ ॥जामातादुषिमावम॥ ॥ग्वग्त्रजलद्वग्धपूर्वुकृत्वाकृमगर्विनर्गखंगृही
त्वाप॥०॥ॐ अर्धोअर्धोअर्धोअर्धप्रतिगृह्णती॥ ॥जामाताप॥०॥अर्धप्रतिगृह्णामि
॥ॐ आयसूयुष्मारिःसर्वान्कामानवाप्नुयात्॥नस्यरुमोनिधायनिमन्तु॥ ॥ॐ समुन्नेव
॥प्रदि॥क्षामि॥र्षीयानिमरिगच्छन्॥नृत्रिषुस्माकीवीनामापनासक्तिमत्यय॥प्रिवा
॥॥ ॥ग्वग्त्रदजामातुःपादोवसूदसमाङ्गनी॥ ॥ग्वस्त्रदश्रावमनैदद्यात्॥ॐ श्रावम
नीयमावमनीयमावमनीयमावमनीयप्रतिगृह्णती॥ ॥जामाताप॥०॥ॐ श्रावमनीय
प्रतिगृह्णामि॥ॐ अमागम्यस्वसाम०सूजवर्चसा॥नीमाकृत्प्रियप्रज्ञानामधियर्त्तियमनी
मन्निष्टनननूनाम्॥३॥ग्वग्त्रदमधूपर्कप्रदानं॥ॐ मधूपर्कमधूपर्कमधूपर्कमधूप
र्कप्रतिगृह्णती॥ ॥जामाताप॥०॥ॐ मधूपर्कप्रतिगृह्णामि॥ ॥मधूपर्कस्यमृदिः

[illegible]

[illegible]

म्यायूधदीर्घायित्वायवलायवर्चसः॥ॐ भवियमनु॥ॐ यस्तेऽमेयावाच विधीयते सन्दायवृहस्यति॥
 यः॥ॐ भवियमनु॥ॐ यस्तेऽमेयावाच विधीयते सन्दायवृहस्यति॥
 विधीयते॥ॐ उष्णं दीर्घायित्वायवर्चसः॥ॐ यस्तेऽमेयावाच विधीयते सन्दायवृहस्यति॥
 कयउन्नयनित्वा॥ॐ भवियमनु॥ॐ यस्तेऽमेयावाच विधीयते सन्दायवृहस्यति॥
 नदध्वनिस्मि॥ॐ भवियमनु॥ॐ यस्तेऽमेयावाच विधीयते सन्दायवृहस्यति॥
 पवती॥ॐ भवियमनु॥ॐ यस्तेऽमेयावाच विधीयते सन्दायवृहस्यति॥
 बंजमदग्निः॥ॐ भवियमनु॥ॐ यस्तेऽमेयावाच विधीयते सन्दायवृहस्यति॥
 निदध्यात्॥ॐ भवियमनु॥ॐ यस्तेऽमेयावाच विधीयते सन्दायवृहस्यति॥
 हकनयोर्वादीर्घायित्वायवर्चसः॥ॐ भवियमनु॥ॐ यस्तेऽमेयावाच विधीयते सन्दायवृहस्यति॥

[illegible]

मूकबनहर्षं श्रमकनाम्नीं नमो कन्यास्वकीया लीकार्वापुजापतिदेवताकायवाद्यनीजनितासेषपाप
दयार्थपत्नीत्वनपुष्पमहर्षप्रददा ॥ ॐ गिदागाप ॥ ॥ ॥ जा मा गा पुं स्वस्ती गि पु ति व च नी ॥ ॥
गता श्री शक्ति कन्यामाता वज्रदग्ध ॥ नीडामा ए ह ह डू रो द या गा ॥ ॥ पुं अग्रये त्वाम श्री व नू ॥
ददा पु शा मृ ग त्व म सी या य द्वा प्र उ धि म या म श्री पु ति गृ हा स्वे नू डा य त्वाम श्री व नू ॥ ॥ ददा पु शा मृ ग त्व
म सी य प्रा ॥ ॥ दं द ह ॥ ॥ पु उ धि म या म श्री पु ति गृ हा प्र ह ह स्य त य त्वाम श्री व नू ॥ ॥ ददा
पु शा मृ ग त्व म सी य ॥ ॥ ददा प्र उ धि म या म श्री पु ति गृ हा प्र य ना य त्वाम श्री व नू ॥ ॥ ददा पु
शा मृ ग त्व म सी य ॥ ॥ ददा प्र उ धि म या म श्री पु ति गृ हा प्र ॥ ॥ पुं का दा त् क स्मा श्र दा त् का मा दा त् का मा
या दा त् का मा दा ता का म ४ पु ति गृ हि ता का मे ग र ॥ ॥ ॥ पुं अथ य द न्य द दा ति का मे ने व न द्वा दा ति द म्म
प्र मू ग्रा ह दि ति तत्पु ॥ ॥ ति का दा त् क स्मा श्र दा त् का मा दा त् का मा या दा त् का मा दा ता का म ४ पु ति गृ हा ता का मे ग र

ॐ नमो देवताया अदिगिठगितागदाइ न्न देवताया अदिदि (॥) दिदेवेया न्देवता ० समिध सादीयमाना ॥
 १४४ ॥ (॥) यारिवगीदमेयस्मिन्नयव रणीददंति सदीयमाना नव ४४ ॥ ४४ ॥ (॥) यारिवगी ४४ ॥ ४४ ॥ हवे (॥) या
 न्न वगिवविद्यान्युतिगृह्णागिताग्रथसमिध इद्रुयादवमगी इहातियामधायत ददागिगस्मादधीयनादि
 ति (॥) ॥ ॐ कर्मकाम इद्य धृक्मिप्रायव नृक्षयवा इन्द्राया धित्वा पूषू प्रजा रवः ३० धी रवः ॥ ॐ आ ४३ ॥
 हि ४४ नो वृष रानरा माघनाघन ४४ काशन ४४ वर्षमाना मासं क्रन्दन निमिष ३ कवीन ४४ ग ४४ सना अजयत्ता कमि
 न्द्र ॥ ॥ ॐ ध्रुवा सिधु वार्यय उमाना स्मिनायत प्रजया पशुरि र्त्यात् ॥ घृणन ग्रावाय धिवी पूर्यथ सिद्ध स च
 दिन सि वि ४४ जन सम ४४ या ॥ ॐ यै कर्म काम यत सोमे काम ४४ स न्द्रा ॥ ॐ मि जामाताय ॥ ॥ ४४ ४३ ४३ ॥
 जामाता प्रवर्तु दक्षिण दद्यात् ॥ कृते तत्क न्द्रा दान पुनि वार्थ स्वर्तु मग्नि देवती दक्षिण गुरम हरी प्रदद ॥ ॥
 जामाता ॐ स्व स्त्री ति प्रति वचनी ॥ ॥ कन्या वनस्पद दि दारा ॥ ॥ ग्राह्या ॥ ॥ जामाता ४४ ४३ ४३ नारि धी कं कुर्या

॥ ॐ देवताया ॥ ॐ अष्टिनाक्षरं पञ्चन ॥ ॥ चन्दनदद्यात् ॥ ॐ यदयं क ॥ ॥ सिन्दूरदद्यात् ॥ ॐ खड्गविष्टदा ॥ ॥
आशीर्वाद ॥ ॐ कन्याः स्ववहन्तु मंगला उग्रज्जातौ नाश्रित्वा कर्णानि यत्प्रशाम ॥ ॐ यत्कन्यायुगलं दद्यात् ॥
नाश्रित्वा लयवन्तः ॥ ॐ दीर्घायुस्तुताष्वधामिनायस्ते चत्वारः क्षमाः हीनः ॥ ॐ अथ दीर्घायुस्तुत्याः क्षमाः विना हः
ताम् ॥ ॐ दूद ० हविः ॥ ॥ गतावाक्क्षययुजां कुर्यात् उलोपको ॥ ॐ दमासनीपादार्थं हस्तार्थं चन्दनस्य क्षायवी
गपूष्यः पूषदायः दक्षिणदिक् दद्यात् प्रवाचनी ॥ अगुणीधदि ॥ ब्राह्मणेनाशिक्षकं चन्दनादिना आशीर्वाददद्यात्
॥ ॥ सूर्यसिद्धिर्दीर्घायुः ॥ गता चन्दनगीधपूष्यपूगारुलालिंदिक् चन्दनदद्यात् ॥ ॥ ॐ धनुना ॥ ॐ जामातायू
गारुलकस्तूनीवक्षः नितदवांठावर्तुदद्यात् ॥ ॥ गवपूगीप्रियामकी देवी ववूक्षुः गोपदिय ० ॥ ॐ अमृकदे
वी नाम गृहणी ॥ ॥ गतानि कुनदी ॥ ॐ जामाता कन्याया अगुषी ० हीत्याय ० ॥ ॐ यदेविमनसा दूर्वदि ० ॥
रूपवमानाया ॥ हिनक्षत्रवर्तुर्विवर्तुः ॥ सत्त्वावन्मनसा कन्यामि ॥ कन्यावनक्षत्रवामरा ० ॥ ॐ गताया ॥ ॥

दुर्गवलि॥ उद्युतघृतपावान॥ दिग्बलि॥ चन्दनाक्षतधूपदीपजापशुगुर्व॥ उं निरूपानन्दमयमिति॥ उं
पूर्वदक्षिणशूलि॥ अग्रगणितदिव्याश्चनवि॥ उं उद्योगन॥ वलिविसर्जनी॥ वलिक्रियगुणलि॥ ॥
तताग्निकुसुमस्तान॥ उं तजविष्टदा॥ लाजाविक्रयनी॥ गमयग्रीमकुसुमनिनीक्षणी॥ उं यद्यदादव॥
पविर्तमूहनी॥ उं मानसाक॥ उल्लखनी॥ उं त्वीवृत्ति॥ वज्राकनदी॥ उं गत्वाजामि॥ अष्टदक्षी॥ गमयग्रध्व
दी॥ यश्चिमेनदक्षिणमिति॥ समीकनदी॥ उं सदस्यमिति॥ अन्नविक्रयनी॥ उं ब्रीहयश्चम॥ ब्राह्मविक्रयनी॥ उं
दवस्त्या॥ अर्घ्याग्रादकनाष्टदक्षी॥ उं हिनक्षत्रगर्ह॥ विष्टनासनी॥ उं यद्मानन॥ पीतवृक्षनयम्रीलि
खत्॥ उं गजाति॥ घृतासनी॥ उं नक्षत्राहनी॥ यश्चिमेनदक्षिणमिति॥ उं यक्षनमनसा॥ वागीध्वनी॥ पूजनी॥
उं हिनक्षत्रवर्धु॥ लक्ष्मीपूजनी॥ उं त्वीवृत्ति॥ काष्ठग्रहणी॥ उं धूम्रानास्ता॥ यद्गन्तव्याजनी॥ उं अगवर्ह
मि॥ कुसुमपूजनी॥ उं अग्निमूर्ध्नी॥ अग्निमानाया॥ उं नक्षत्राहणी॥ निर्मन्त्रनी॥ उं अश्विनी॥ वलिप्रदानी॥ उं त

अति॥ दीप॥ यवतिलादुतन॥ ॐ कृपादाग्रयस्वाहा॥ ३॥ घृतं॥ ॐ कृपादमग्निं॥ कृपाप्रज्ञालयेत्॥
 कृपादानं हीय विष्णुः॥ विश्वा इति शूद्रयात्॥ उपसर्गनी॥ अर्घ्याणां दकनायू दती॥ अमुत सवत्स॥
 कवचनावर्गु॥ गमय ग्रीजयत्॥ धनं मूद्रायुदधर्ष॥ अग्निना स॥ ॐ नो भित्तिषु॥ ६॥ गमय ग्रीजयत्॥
 ॐ वेत्ताननाय विष्णुह॥ अनीर्विताय धामहि॥ तद्भाव क्रियु बो दयात्॥ १२० वज्रा ० वसेन्धनी योति
 नकी कृपा प्रतीतिवयत्॥ ॐ अग्निजविः॥ अग्नी भावदि॥ तताग्निं गृहीत्वा॥ ॐ अग्निं नृषा॥ अग्निः
 त्रिपुदक्षिणी॥ विवाहकर्मणि अग्नि स्थापनं मूद्रा र्त्तनम्॥ ॐ मयि गृहीत्वा॥ अग्नि स्थापनी॥ ॐ स्वस्ति वाचनं
 प॥ ॐ मम मां जिता॥ गृन्धनन अग्निपुत्राय॥ ॐ पृथ्वा दिवि॥ अयू दती॥ आसनपूर्वकी॥ ॐ अ॥ वदाम्य॥
 दमासनमिषादि॥ ४॥ ॐ अग्निमीला॥ पूर्व अक्षयातनी॥ ॐ गृध्रत्वा कृत्वा॥ पश्चिम अक्षयातनी॥ ॐ अग्नि
 या॥ पश्चिम अक्षयातनी॥ ॐ गन्ता दवी॥ उरुने अक्षयातनी॥ पूर्ण पूजनी॥ ॐ अ॥ वदाम्य॥ अग्निं गाय सान

[illegible]

[illegible]

[illegible]

जायतनत्वं॥ॐ श्रुत्वा कृतं वा॥ॐ मिवा नामाति॥ॐ हिनमगर्क॥ॐ उन्नविष्वा॥ॐ श्रानाराडा॥ कृतवा ऊनुवि॥ॐ
ताद आता अपविताह उद्दिद॥ॐ दवासाय धासदमिद्व॥ॐ अस्तन्नायुवान कितानादिवदिव॥ॐ धमन्
दग्नि विष्वा वक्रादवा वृहस्पति॥ॐ तवतसा वि॥ॐ दवाय हंप्रायकुन॥ॐ सुरा॥ॐ स्वस्तिनः॥ॐ रा उवदददि
हाता तदमृत्तनगावदरा उमदस्तात्रावदरा उन्नश्रावदरा उन्नसर्वतावद॥ अस्तपत्नीपूवस्तान्निर्विद
किदातस्तु वि॥ॐ नमः॥ॐ धत्य॥ॐ स्वपतिर्यग्वानमानमारावायव नूदायवनमः॥ॐ सर्वायवपशुपतयवनमः
नीलशीवायव शितिक ह्ययव॥ॐ सफ अषय॥ॐ वृहस्पता॥ अगर्ग धादिवक्ता॥ॐ निवि॥ॐ धात्सर्वपनिः
पूरुमकु॥॥ॐ ता॥ॐ सुकलश पूजनी॥ॐ धनायनमः॥ॐ यूक्ता मनः॥ॐ तयूक्ता विषया विषा विषयस्य वृहता वि
पश्चित॥ॐ विहृता द॥ॐ धवयूना विदकं नमहीदवस्तविगुपनिमुक्ति॥ॐ स्वाहा॥ॐ धनाय॥ॐ धर्दीविष्वा॥ॐ ध
माय॥ॐ धर्वावती॥ॐ धर्मताहि॥ॐ रत॥ॐ सूर्यवसिनी मनवदस्तस्याता वास्तु श्रावा दसि विष्वा वतदा धर्थपुथिवी

मरिगामनयूषः स्वाहा ॥ ॐ अस्मा २ ॥ ॐ दवगुणे दवघाया घापा वीप्रामधन कल्ययीते ऊर्ध्वय ह्रीं यतम्मा
जिह्वनतम् । स्वः ॐ गमवमावदतदवी इक्षु आयुर्मा निर्वदिह प्रजाम्मा निर्वदिह मप्रनम मथीवर्मा नृधिया
॥ ॐ अनलाय २ ॥ ॐ विष्णुर्नृकवीर्या निप्रवा वयः पार्थिव निविमं मम नञा ० शिवाया अस्मराय इह न ० सध
हृदिव कृतानस्तु ॥ ॐ अग्निनाय २ ॥ ॐ दिवा वा विष्णु उत वा पृथिव्या मरुता वा विष्णु उत वा
नीत विद्वात् । उता हि हस्तावहना पृथु स्वापु य इदं दिक्षु दातु वा विष्णु वत्वा ॥ ॐ प्रपूषाय २ ॥ ॐ प्रतपिषु
स्तु वत वीर्या इह नृ ० गमनरा मः कृवना निविष्ठा ० यस्या नृषु दिषु विक्रमन स धिदियीति युवना निविष्ठा ॥
ॐ प्रसाताय २ ॥ ॐ विष्णुवना टमसि ॥ अगर्गं अदि अष्ट कल ० अर्जुन वि ॥ ० तत्सर्व विधि पविर्लुमस्तु ॥ ॥
नाग कृत् पूजनी ॥ ॐ नागमय २ ॥ ॐ नमो कुरुप्य रिया यक वपृथिवी मनूय अन्त निक्षय दिवितर ० सूर्य
स्थानमः ॥ ॐ यक्षा य २ ॥ ॐ अग्ने अग्ने वदत नः प्रतिनः ० समनारय प्रनाय कुरुस्तु जित्वा ० हि धनदा अस्ति

स्वाहा॥ॐ यद्वा (१) ॥ॐ प्रनायक लयमाप्रपूषाप्रवृत्तस्यति॥ प्रवा (२) ददी ददागुनः स्वाहा॥ॐ शिष्ये ॥
 श्री ॥ॐ लक्ष्मी ॥ॐ श्रीमालरैवीनीतविद्महि ॥ॐ ह्यधिवासीराव। अयं ह्यहिल्यास्वधितिरुतिजान
 ॥ प्रतिनायमहत्तसोतमय। अतस्तदववनस्यतः शतव (३) विनाहसहस्रमुव (४) विवय ० इहम ॥ ॥
 प्रनायक पूजा॥ॐ वरुणाय ॥ॐ यादूषवायागुधनानीयवावनस्यती ॥ ननूयवावतव (५) नाग ॥ ॥
 परितानमः॥ अलिनयूजा॥ॐ शिवानामासि॥ रूनायक पूजा॥ॐ नमो (६) रा॥ अदि एादिनवग्रहपू
 जा॥ॐ अक्षपूपादि १०॥ रूनुदिदहालाकपालार्चनी॥ॐ ग्रातानमिन्दुपादि १०॥ॐ अक्षरुवा रूपादि ४॥
 मासादिपद्मा र्चनी॥ॐ अर्द्धमासदि २२॥ मममूल लीढतया उविधिर्धर्मसंगतपूजायाय॥ॐ वसा ४ पवित्र
 ॥ॐ दधिक्रा (७) ॥ॐ दीर्घा यस्तु॥ॐ यदयक॥ॐ त्वजविषदा॥ॐ यारुलिनी॥ श्री ॥ॐ नमः पर्यय॥
 ॥ॐ पंचवल्गार्चनी॥ॐ गहमर्चनी॥ॐ जातवदस॥ॐ रूमा नूदाय॥ॐ घृतीघृत॥ॐ नमो वरुणाय॥ॐ अ

अक्षरुमादि १४ विविदि विपूजा ॥ ४

म्वञ्ज्विक ॥ ॐ श्रुत्वा ता ॥ ॐ तनखा द ॥ ताता श्रुत्वा दियूजा ॥ ॐ आकृष्ट ॥ ॐ विष्णु नना ॥ ॐ नमः सप्त ॥
ॐ श्रुत्वा ता ॥ ॐ वृहस्पति ॥ ॐ नमो भक्तु सत्य ॥ गता एतन्मन्त्र कोमानी पूजा ॥ ॐ नमो वा (वस्था) ॥ ॐ श्रुत्वा (मो) ॥ ॐ ज
तव दत्त ॥ ॐ पृथ्वी धूम्रयूजा ॥ ॐ समित ० ॥ ॐ सीवामना ० हि ॥ ॐ श्रुत्वा ता ॥ ॐ वगुः खलि ॥ ॐ योऽर्थातिरिप
धूपदापे रुतने वयं जापका ॥ ॐ यवन्ना वनने नृ नृदमन्त्र ॥ ॐ तन्वीति दिव्योक्त वे वे दे ॥ ॐ सा स्यपद कुमा ॥
पनिषदे र्भयं तीर्यतामगा ॥ ॐ आना वस्ति गत दत्त नमन साय धर्म तीर्य यागिना यस्यानं न विदुः ॥ ॐ तना
सुवगा धा दवाय तस्मै नमः ॥ ॐ उर्ध्व वृक्षा (धुति) ॥ ॐ गृणी धा दि ॥ ॐ गति वृक्षा र्चना दि कत पूजा ॥ ॥
ताता ॥ ॐ पदा साधनी ॥ दक्षिण कमलु लूयुषा राउनी शी नृविगुच्छ दना दिष्टा कृती पार्श्व आश्रुताली ॥
वर्तमाना ऊन उपयमन कृ ॥ ॐ समिध दय उ दूषल मृ ॥ ॐ कृष्णी जिन सत्य आश्रु तिल तल्लु अग्नि वस्तु ॥
जापमाता हामपागु दक्षिण श्रेयथा क्रमेण स्थापयता ॥ ॐ देव सत्त्वा ॥ ॐ श्रुत्वा कृती ॥ ॐ याता याता ॥ ॐ य

[illegible]

दशक्रिया॥सुसफनश्रुत

शुभिकुमुपिप्रदक्षिणी॥ पुंशुदिषेयुन्दनमसि॥ यरूक (मु) रु रुयात्॥ (ग) धादकं प्रहातनिधाय॥ स
पविर्गुणनखर्जवग्गुग्गुपाचनी॥ ऊं वेक (ह) नमः॥ ऊं विष्णु वे २॥ ऊं नृ दाय २॥ ऊं शिष्ये २॥ ऊं लक्ष्मि २॥ ऊं वा
(ग) ग्वये २॥ ऊं विष्णु तनाटमसि॥ ऊं गृ कू पूजा॥ ऊं ग्रा ग्वनति॥ गृ कू पूजनं॥ ऊं धूतसि॥ ॥ उपयमनकू गमा
दाय॥ ननां रं गिनां॥ धू ननडा॥ ऊं क प्रस्य यानि॥ यानिक ल्यनी॥ ऊं ग वृ अस्थाषधीनी॥ ग वृ धानी॥ ऊं स्वसिः
न रु म्पु॥ पुं प्रवनी॥ ऊं मादि रू म्पु॥ गामना नयनी॥ ऊं प्रा धाय स्वादुति॥ जानक म्पु॥ ऊं वृ क य सनी॥
निक्रमही॥ ऊं काय स्वादुति॥ नामक न ही॥ याजका ग्नय स्वादा॥ ऊं या रु लिनी॥ रु ल प्रा सनी॥ ऊं अन्नपन
॥ अन्नप्रासनी॥ ऊं रु द्दु क (ह) रु रि॥ क र्मु रु दनी॥ ऊं वृ नी कृ द्दु न॥ वृ न वी धनी॥ ऊं अ कृ षू॥ समावर्तन॥ ऊं
श्रीवर्कडा॥ विवा दा॥ ऊं का धु का धु त्यगा॥ सिन्दूर जा ग्रा॥ ऊं वृ न नदी का॥ मन्त्रपु दानी॥ ॥ नना अग्ने
धनी॥ भवा नूरुति॥ ऊं समि धाग्नि न्दु॥ अस्माद गग मि धमा दाय॥ ऊं नदवग्निसदा॥ धादगसमि धदा

[illegible]

दवस्यः उरुन॥ ॥ अथ सव्यं न स्वधायि ह स्यशादकि (६॥) पि नानि द्यमान (॥) न न मादवस्य न न न्या
गं॥ उयस्य गनी॥ ॐ हूँ नः ॥ हूँ न्यासी र्म मा॥ न ना व रुक्ष मी त्या ग स द॥ ॐ अ न्न य स्वा दा॥ ॐ द म न्न य स्वा
ग॥ ॐ सा मा य २ हूँ द सा मा य॥ ॐ अग्नीषा मा र्म स्वा दा॥ ॐ द॥ ॐ अग्निर्जि का सि॥ स फ जि का दा मा॥
ॐ दि न र्वा ये श॥ ॐ द दि न र्वा ये श॥ ॐ द॥ ॐ अति न का ये श॥ ॐ द॥ ॐ कृष्ण ये श॥ ॐ द॥ ॐ ध
म्रा ये श॥ ॐ द॥ ॐ सृष्ट र्वा ये श॥ ॐ द॥ ॐ व दू नू पा ये श॥ ॐ द॥ ॐ स फ न अग्नि॥ ष र्जि का वू द
नी॥ अ क जि का स्वा य नी॥ त नः ॥ य व ग व द्वा मा॥ ॥ न ना व द्वा र्ति॥ ॐ अ न्न य स्वा दा॥ ॐ द म
ॐ पृथि वी श॥ ॐ द पृथि वी त्या ग॥ ॐ अ न्न य स्वा दा॥ ॐ द म न्न य॥ ॐ द व स्यः स्वा दा॥ ॐ द द
व स्य॥ ॐ म धि त्यः स्वा दा॥ ॐ द प्र जा॥ ॐ द न्दा त्यः स्वा दा॥ ॐ द दू न्दा॥ ॐ द द्वा ये स्वा दा॥ ॐ द
प्र द्वा यो॥ ॐ म धा ये स्वा दा॥ ॐ द म धा यो॥ ॐ स द स स्य न य स्वा दा॥ ॐ द स॥ ॐ द न्म न स्वा दा॥

[illegible]

सस्योष धयापुत्रसामुदा नाम तस्य १ स्वाहा ॥ ४० ॥ दमाषधीयापुत्रा मन्त्र ॥ २ ॥ ॐ स हं हिताविश्वसा
 न्नासूयोग न्वर्च १ सन ४० ॥ दवृक्षुर्गुया तु न स्मे स्वाहा वाट् ॥ ४० ॥ दस हं हिताय विश्वसाम्नासूययिग न्व
 र्वाय ॥ १ ॥ स हं हिताविश्वसूयोग न्वर्चस्य मन्त्री वयापुत्र सडं मन्त्री विश्वापुत्रस्य १ आयुष्य ॥ ४ ॥ ॐ
 सृष्ट १ सूर्यत्रस्मिन्नु माग न्वर्चस्य नक्षत्रा रुक्मिण्य ॥ ५ ॥ ॐ ४० ॥ पित्रा विश्वव्यवा वागा न
 स्मे स्वाहा वाट् ॥ ४० ॥ मिषित्राय विश्वव्यवसवानाय ग न्वर्वाय ॥ १ ॥ ॐ ४० ॥ पित्रा विश्वव्यवा वागा ग न्व
 र्वास्त्यायापुत्र सा सुको नाम तस्य १ स्वाहा ॥ ४० ॥ दमसाया उत्रत्य ॥ १ ॥ ॐ तु सु १ सूर्य ॥ ४० ॥ यस्तु ग
 न्वर्च १ सन ३ ४० ॥ दवृक्षुर्गुपा तु न स्मे स्वाहा वाट् ॥ ४० ॥ दतु सुवस्य १ ४० ॥ यस्तु यस्तु ग न्वर्वाय ॥ १ ॥ ॐ तु
 सु १ सूर्य ॥ ४० ॥ यस्तु ग न्वर्चस्य दक्षिणा पुत्र सावाना म तस्य १ स्वाहा ॥ ४० ॥ दक्षिणाया पुत्र सस्य १
 स्वाहा ॥ ४० ॥ दक्षिणाया पुत्र सस्य सावाकस्य ॥ १ ॥ ॐ पुत्रा पति विश्वकर्मामना ग न्वर्च १ सन

नामधियपतिं स्वाहा॥ १०८॥ इन्द्रमिन्द्राय जगन्नामधियपतये॥ १०९॥ ॐ यमः पृथिव्या नामधियपतिं स्वाहा॥
 इन्द्राय मायय पृथिव्या नामधियपतये॥ ११०॥ अर्घपाशादकनउसर्पगर्जन॥ ॥ ॐ वायुः त्रिदशानाम
 धियपतिं स्वाहा॥ १११॥ इन्द्राय वज्रं कृत्वा नामधियपतये॥ ११२॥ ॐ सूर्यादिनामधियपतिं स्वाहा॥
 ॐ सूर्यादिनामधियपतये॥ ११३॥ ॐ वन्दुमानकृत्वा नामधियपतिं स्वाहा॥ ११४॥ इन्द्रवन्दुमसनकृत्वा
 नामधियपतये॥ ११५॥ ॐ वृहस्पतये वृक्रः स्वाहा॥ इन्द्रवृहस्पतये वृक्रः स्वाहा॥ इन्द्रवृहस्पतये वृक्रः स्वाहा॥
 ११६॥ ॐ मित्रः सत्यानामधियपतिं स्वाहा॥ इन्द्रमित्राय सत्यानामधियपतये॥ ११७॥ ॐ वरुणः अ
 या नामधियपतिं स्वाहा॥ इन्द्रवरुणाय अया नामधियपतये॥ ११८॥ ॐ समुद्रः अग्नौ नामधियपतिं स्वा
 हा॥ इन्द्रसमुद्राय अग्नौ नामधियपतये॥ ११९॥ ॐ अन्नं साम्राज्ञा नामधियपतिं स्वाहा॥ इन्द्र
 सविश्वसवा नामधियपतये॥ १२०॥ ॐ सामतापधी नामधियपतिं स्वाहा॥ इन्द्रसामतापधेना

[illegible]

यथायद्यदस्योमदिदिविजानीयुगसैनदस्यास्तदविनीव (धदिविनुं स्वाहा॥ वृन्दम (अथ॥
॥ ॐ स्वगन्तव्यं धीपुदिगीनवद्विज्ञातिष्वा (धकृज्जननत्राय १ त्रयेतुनमृत्पुनमृत्नम (आगभदे
वग्यनानाश्रुयैक (धतुन १ स्वाहा॥ वृन्दमग्नयवेवग्यनाय॥ उदकस्य गर्भनीमुपुत्रयथाभा
थपुत्रपवेलसकन्यागमनख्यमालापुत्रपनीवकीतुनव॥ ॐ पनीमृत्पुत्रपनदिपनू
यस्तत्रन्यूननादवयानान् वद्विज्ञातिष्वा (धकृज्जननत्राय १ त्रयेतुनमृत्पुनमृत्नम (आगभदे
स्वाहा॥ वृन्दमृत्पुत्रपनागवगीन॥ ॐ अग्निननसस्वाहा॥ अर्घ्यपाशादकनउपस्य गर्भनी॥ ॐ
पुत्रमृत्पुत्रपतिविसष ॥ ॥ गीश्रवचनपुत्रीननिधाय॥ ॥ नगावकादिशृष्टकल (गस्य
रूपादिसर्वस्य १ पुत्रादितिरुद्रयान्॥ ॥ पुत्रादितिरुद्रयान्॥ ॐ सफनत्रय ॥ नगाव्रीदिपात्रपु
नयनी॥ ॐ दवस्यत्वा॥ त्रयुक्ती॥ ॐ पुत्रपुत्रं न द्या॥ कु (गनसंमा ॐ नी॥ यवतिलाकनगु

हीतापात्रनिधाय॥ गौरुलवसुत्रकमालासमिधद्वयचूनिधाय॥ कुंभघडीश्रुपत्न॥ कुंभद्वयं
रुवि॥ यजमाननपूजयन्॥ तिलादुतिसंकल्प॥ मण्यदादितिलादुतिरुदुयात्॥ पूर्ववन्मन्त्र
ह॥ ॥ ननागद्यपतिदुग्धदिक्कलमर्कस्य स्वमन्त्रेष्टसर्वस्य शतिलादुतिरुदुयात्॥ ॥ ग्रेवद
घृतीरुदुयात्॥ ॥ वृकोकलमर्कसर्वस्य स्ववदसहितनपुतिष्ठा॥ पुनर्ग्रेवेन रुदुयात्
॥ कुंभनाशति॥ सीर्यादुति॥ कुंभसीर्या॥ ॥ ननायथकर्मकात्रयत्न॥ ॥ मृपुत्रेष्वेते
दलाजाधर्मकात्रयत्न॥ ॥ ऊलासलाजासमिधघृत्ननयाअदये॥ वाक्॥ कुंभकर्मार्था
शनाशमीपलागमिग्रीलाजानैजलिनाऊलावापयतिनारुदामिसंरुननतिष्ठत्॥ लार्ज
ऊलासंथनस्त्रीपुत्रेष्वेष्टदुला॥ समिधघृत्नदोममन्त्र॥ कुंभश्चमिनीदर्वकन्यात्रिम
यक्ष्ण॥ सनात्रयमादवश्युनामृक्षुमापत्तत्वात्॥ पुनश्चघृतीरुदुयात्॥ रुदमग्नयत्ना

[illegible][illegible]

पुंस्त्रिंशत् रुवः॥ मूर्तिरितिष्टपुनन्मनावबोधस्वपुननायन्॥ ॥ अथ मंगलं लीति॥ अतूदमवत्रा ग
मयति॥ ॥ कुं सत्रस्वनीपुदमवसरु (ग बाजिनीपति॥ यात्वा विग्धस्वरुनस्य पुजायामस्याग
नशा यस्यां रुन ६ समरुवद्य स्या विग्धमिदं जगन्॥ नामद्युगमर्थां गमस्यामि यामि कुं ॥ मूरु मयग ॥
गुंतिगमथा॥ अथ मग्निपत्रिकामन॥ ॥ तासां लोकां अग्निमहोपद्रुयके॥ ॥ कुं पुदक्षिददरिगृध
न्दि॥ कुं स्वस्तिनाममीता॥ ॥ वीकुलीका दसप्रसादपिठिनीनत्वाय॥ कुं दुखम (ग्रपथ्यं नृदं सू
र्यावरुदुनासरु॥ ॥ पुनः पतिस्थाज्यां द (ग्रपुजयासरु॥ ॥ अलीनीनत्वाय॥ कुं मिवा
न्ममाग्नि॥ ॥ जादासानगभेले॥ कुं नवपायवृत्त॥ वृत्तं एनीयकर्म॥ ॥ तज्जाहमग्निरु॥ ॥
शुशुषुगुरुदीप्तिरु॥ ॥ वदुर्वात्रे सूर्यकाष्ठलाज्जाहति॥ ॥ धनस्वत्वाकधुनडाडा॥ जा
ललासासलाजामसीलाम॥ कुं रुग्मयस्वाहा॥ रुंदरुग्मयस्याग॥ कुं पुजापनयस्वाहा॥ रुंदपु

जापनयस्याग॥ ॥ सफयदनि न्न न्न न्न स वा क रु न क वा य ॥ ग्व व ग्व २ वा ल वा क य नि न ॥
सफयथजाय ॥ ॐ न क मि थ वि षु स्ता न य तु ॥ ॐ द ॥ ॐ य वि षु स्ता न य तु ॥ ॐ त्री द्वि त्रा य स्ता थ वि षु
स्ता न य तु ॥ ॐ व त्ता त्रि मा धा रु वा य वि षु स्ता न य तु ॥ ॐ प ऋ पे गु र्था वि षु स्ता न य तु ॥ ॐ ष ट्ठ रु र्था
वि षु स्ता न य तु ॥ ॐ स ख स फ प दा रु सा मा म न्न व न रु व वि षु स्ता न य तु ॥ ॥ ॐ नि स फ प दा रु ॥
॥ ॥ वि क लि का न स ज उ व क्रा ज ल न मूर्द्धि न्नि र्धि व नि म न्नु ॥ ॐ आप १ गि वा १ गि व न मा १ ग
का १ ग न न मा सा स द्वा व नु रु व र्ज ॥ आपा कि षु ॥ ॐ या प १ गि व न मा ॥ ॐ न स्मा न्न नै ग मा ॥ ॥
व धू स र्वा मु दी क द म न्नु ॥ ॐ न च कृ द्द व दि नै पु त्र सा षु क म्ब न नू ॥ प ॥ म म न द १ ग नै जी व म
ग न द १ ग नै ५ ग द १ ग नै पु व वा म ग न द १ ग न म दी ना १ स्था म ग न द १ ग नै रु य ग्व ग
न द १ ग नान् ॥ ॥ व धू सि द्वा ना ना रु र्ध ॥ पु न्म द सि द्वा ना ना ॥ ॐ नै वि षु दा ॥ ॐ सि न्दू रै स व

सिद्धार्थसिन्धुसाधनलया॥स्वामिनादीर्घमायुर्त्वंप्रथमायुर्गिर्विक्रम॥ ॥मिमहलीठविष॥कुंव
सा१पवित्रमसि॥कुंस्वस्तिवावर्नप०तु॥ ॥॥गमत्रथावाक्यरू॥ ॥वधदुदयानैरुदामनुभाकुं
ममबुननदुदयदधामिममविरुमन्विहंत॥असु॥ममवावमकमनारुषस्वयजापतिष्ठाति
यूनकुमर्क॥ ॥पुनःउठवक्राजलनसिंघयतिमनु॥कुंस्मदलीयनुवधूत्रिमा०समन
पग्धन॥सोलाग्धमस्येदत्वायथास्वीविपननन॥ ॥उपवगयति॥कुंरू०रुग्मवानिषीदं
स्त्रिकाग्धरू०रूप्रया॥रू०रुसकसुदकि०य०रू०रूप्रयानिषीदनु॥ ॥कुंवदर्शनस
नु॥कुं००वमसि००वेत्वापग्धामि००वेधिया००मयिमर्क००त्वाकादुरु००स्यनिर्मयापत्यापुजापती
सम्प्रीवगत्रद०गती॥ ॥दधि००क००पी००दी००य००स्त्रा००पु००क००न००ध००व००म००ध००वि००ना००ध००स००नु॥ ॥षा००ना०॥
मनपन॥ ॥तताय००रू००सि००रू००स००न००सि००त्वा००घृ००ता००दु००नि००वि००य०॥तिला००दु००नि००वि००य०॥ ॥कुंपुजाप
नयस्वाका॥कुं००गृ००ष्टि००कृ००न००य००स्वा००का०॥तिला००दु००नि०॥कुं००म००ना००दु००नि०॥पु००नि००ष्टा०॥वि००वा००का००पु००नि००ष्टा०॥ ॥

वेदान्तद्वय॥ ॐ दीर्घाय स्वा॥ ॥ दग्धपाठन॥ कालापाठन॥ नित्यपाठनविय॥ वाक्पूजा॥ ॥ सम
स्तयान् श्रेष्ठतिविद्य॥ वक्रांगीर्वाह॥ ॐ बुद्धिस्तन॥ राजाङ्ग॥ ॐ नार्जुनमध्वराक्षम॥ ॐ पुजयः
न॥ पुजास्त॥ ॐ यस्तु कर्मा॥ ॥ स्वांगीर्वाह॥ ॐ श्रीग्वन्ताकन्यायान॥ ॥ शान्तिक॥ ॐ शोभानि
॥ पुष्टिक॥ ॐ शीवर्कज्जामरु॥ ॥ नगोवीरिहाम॥ यवधन्यलाजासमिधगुणदत्तदक्षदत्तवि
त्वरुत॥ जपलपमनु॥ ॐ रुद्रुवश्चः श्रीरुद्रुत्साहा॥ वरुलीरुलपियं गुस्मूरवगतपुष्प॥ ॐ
नतिलकृष्णतिलिन्नकतिलसर्षपनाजिकात्रिकुत्रिरुलानागकगत्रपद्रकगत्रचन्दनगुलि
गुञ्जुनसबोधनी॥ यवधन्यनथामर्ङ्गकलावमाषमवव॥ कृबुद्धकालमाषवसिद्धार्थवाष्टम
विदि॥ कद्युस्तुलपकात्रः ॐ रुद्रुवश्चः श्रीरुद्रुत्साहा॥ ॐ शोभानि॥ ॥ वाक्पूजा
॥ वसुक्तल्य॥ ॥ दिग्भवन॥ ॐ शानात्रमिनु॥ ॐ धृत्तुष्टनपावानेशवतिपूजा॥ ॥ दनदी
पट्टिका॥ जपन्॥ मरुवाहूनिमनु॥ ॐ शोभानि॥ ॐ सर्वप॥ ॐ ॥ प्रायश्चित्तकामाउपः

यमनकुलगनउपसर्गन॥ ॥पंचवात्र॥स्वस्वग्नयस्वाहा॥ॐ त्वं नाः प्र॥ॐ सत्वन्नाः प्र॥
॥ॐ श्रयाग्न॥ ॥ॐ यनगनी॥ॐ उड्डुमी॥वतुषादिहाम॥ॐ पादिना विग्ववदसस्वाहा॥ॐ
यद्वादिना विरुवसस्वाहा॥ॐ सर्वयादिस्विष्टकृतयः॥ॐ नूनानि त्रिकं रुकामिस्वा॥ॐ नूति
त्रिकं रुकामिस्वाहा॥ॐ नूनानां नूनानां नूनानां नूनानां नूनानां नूनानां नूनानां नूनानां नूनानां नूनानां
यथादिनस्वाहा॥ ॥ॐ वेग्नानां यविग्वरुनकायधीमहि तवावक्रिपवाक्यानुस्वाहा
॥ ॥ॐ दवकृतस्येन सावयजनमसिस्वाहा॥ ॥ॐ मृन्मृकृतस्येन सावयजनमसिस्वा
हा॥ॐ पिरुकृतस्येन सावयजनमसिस्वाहा॥ॐ आत्मकृतस्येन सावयजनमसिस्वाहा॥ॐ
नूनानां नूनानां नूनानां नूनानां नूनानां नूनानां नूनानां नूनानां नूनानां नूनानां नूनानां नूनानां नूनानां नूनानां नूनानां
सावयजनमसिस्वाहा॥ ॥ॐ स्वस्ति नू॥ॐ पयः पृथिवी॥ॐ विश्वानाम॥ॐ श्र

मिद्वत॥ कुं शोभनिक॥ ॥ वाग्मदक्षिणनी॥ वावनी॥ ॥ दगवलिहृत्तनी॥ गीप्रवद्युन
प्रागनी॥ कुं कामकामदुध॥ ॥ कुं सुमिप्रिया॥ पविप्रदायुना॥ ताचसिबलिसिबयत॥ ॥
तता॥ पूरुका॥ नयत॥ ॥ काक्॥ जूस्मत्विवाहा॥ कर्मदिकृष्ण॥ दीयहृत्पूष्पार्थ॥ पूष्पद्वि
तिस्रसूक्तमसु॥ कुं देवागमहु॥ ॥ कुं दआसीसाप॥ ॥ कुं आयायसा॥ कुं श्रमिअपिशात्र
म्हमीवादि॥ स्वागीवादि॥ कुं यस्यकृष्ण॥ कन्यासु॥ कुं ग्रीष्मता॥ ॥ कुं उरिष्ठवृक्षदस्यनी॥
वृक्षाविसर्जनी॥ कुं विष्णुनाटमसि॥ पृथीनविसर्जनी॥ ॥ कुं कस्त्राविमुञ्चति॥ वृक्षाद
र्त्तमावनी॥ ॥ अथाश्वीववात्रिषधु॥ पृथीनारिषक॥ कुं संवर्द्धितङ्गा॥ कुं नृपातउपयमनक
गवराहूयानु॥ कुं ननूपा॥ अस्मिन्नन्वीमपाश्चायुर्दोत्र॥ अस्यायुर्मोददिवर्वादात्र॥ अस्मिन्नन्वीमपाश्चायुर्दोत्र॥
कि॥ अस्मिन्नन्वीमपाश्चायुर्दोत्र॥ अस्यायुर्मोददिवर्वादात्र॥ अस्मिन्नन्वीमपाश्चायुर्दोत्र॥
बाधनीपुस्कनग्रजो नृगमनिव॥ आयायनी॥ वाक्सा॥ वदः॥ अग्रजसावली॥ दससप्तवनी॥ कुं

श्रायुषं यमदग्ने॥ रुस्मनानिलकंकानयन्॥ सितसिललाटः उज्जुत्वा ॥ ॐ यरूयर्दंगवुः
यरूपनिगवुस्वीथानिगवुस्वाहा॥ नृषनयक्षयरूपनसरूसूकावाकः सर्ववीनसूरुषस्वस्वाः
हा॥ अर्घपात्रादकेनग्निक्वपुपदक्षिन॥ ॥ ॐ गवुगवुसूत्रः ॥ अष्टान्माससात्रवारुनः ॥ यत्रवक्रा
दयादवातत्रगवुदुतासनः ॥ ॥ यरूविसर्जनी॥ अग्निनामूलदद्यात्॥ उद्वयनमसस्युतिस्रिः
काकाष्टरूदुयात्॥ ॐ कृतायकर्म॥ ॐ अकृतायकर्म॥ ॐ गवकामं कुर्यात्॥ रुसपु
कात्वाश्रयम्॥ न्यासः ॥ तन्मासुनविसर्जनी॥ ॥ वक्राखावातं उवर्तुर्थदिन॥ ॥ वायेन्यादक
नश्रुषिषः॥ वन्दनादिश्रीगीर्वादभासुयासाकिर्धकुर्यात्॥ ॥ कृपुनृषनर्कनकिनीनलासा
लाशयनसरूक्षयावके॥ उद्विष्टकलं खद्याय॥ नृकसयागयनं कोनयन्॥ ॥ नृनिविवाहविधिः॥
॥ गुरु॥ ॥ सति श्रुथमद्ययागविधिलिखन्॥ ॥ मनु॥ ॐ नमात्रसुदेषयिसदवनस्य
तिसदगितिसदसकपि ह्युसदस्वस्मिमासं यादयः ॥ ॥ यिरूमद्युपप्रेविश्या॥ निर्मवुनक

र्यात्॥ वस्त्राश्च कलशपूजनं॥ धूपदीपस्तोत्रं॥ प्रत्यक्षं न सिन्दूरानां रुद्रं॥ वक्षुःश्रावणं॥
नगलमङ्गलयात्रा॥ ॥ गुरुद्वारा निर्मवुनामि॥ अग्निलाहृतं॥ लाकोपवार्तकत्वा॥ सरुःश्रा
वति॥ ॐ मनास्तुतिप्रतिष्ठात्वं कात्रयन्॥ लासालाडामधुर्यप्रविग्ध॥ यद्रुसालार्थासिद्धासनसि
त्वा॥ निर्मवुनादिपूर्ववत्॥ वस्त्राश्च कलशपूजनी॥ अग्निलाहृतं॥ ॥ वस्त्रासम्बन्ध
यादक्षिणावुय॥ वन्दनादिसंग्रहगीर्वाण॥ ॐ काष्ठागुकाष्ठागु॥ प्रतिष्ठात्वं॥ ॐ गिवा नामा
सि॥ अलिनीनत्वाय॥ ॐ नववायु॥ लासानगमत्वा॥ ॐ दीर्घायुस्त्वा॥ वंदनवुय॥ सरुःश्रावतिप्र
तिष्ठा॥ ॥ नकिनीनत्वालाताडथगायन॥ ॐ सुखानधिगम्य॥ स्वस्ति कोसनसिद्धत्वा॥ प्रादि
नश्रीनसमस्तं गमयवियक्ते॥ सरुःश्राव॥ ॥ इति प्रमदयात्राविधिसमाप्तं॥ गुरु॥
अथ निह्यमास्तारुलायायमाला॥ नगा॥ मृदुप्रत्यक्षतासालाडामधुर्यप्रविग्धगायन॥ निर्मवुना
मि॥ अर्घ्यपात्रादिकं नसिर्वयन्॥ वस्त्रापूजनी॥ ॐ वस्त्राहृतं सासनयः॥ दमासनशापुष्पं॥

[illegible]

कुंदाद्योयत्वाय॥ ॥सरुज्जाततिप्रतिष्ठा॥कुंमनारुति॥नायदात॥ ॥दक्षिणा॥श्रुतिनि
त्यमातारुताविधि॥ गुरु॥ ॥अथवर्थाकर्मकृत्यान्॥नित्यकर्ममालागतागन्धुलन
सरुकाजनी॥ ॥तनास्ययुत्रुषधकुंभद्विकर्मकृत्यान्॥ब्रह्माग्रेगह॥गमग्रसकोमात्री
सशुद्धपंचवत्तिकवावहिकिर्द्वांगक्षपितनसप्याशसदासकवायमिमदलीड॥ ॥
थकादिनयवादकविधिवत्कात्रयना॥ ॥तनाप्रुषधकुंभद्विकर्मकृत्यान्॥यथयथा
विधिमग्रधव्रह्मादिब्रह्मकलेगमर्चयेववत्॥ ॥अर्थपदासार्धनान्कचलसोधन॥केका
या॥कुंभान्यमसिधिनुरिधवीप्राक्षयत्वादानोयत्वायाक्षयत्वा॥दीर्घामन्युसितिमायुष
धीदवावःसविताकिनेधपादिःप्रतिगृह्यात्वचिदधपादिना॥वक्ष्यत्वामदीनीपयासि॥
नीपुल्लेखनयत्॥कुंभकृतासिमधुजिह्वः॥शुषमूर्जमावदत्वयावयधंसंघातधंजय॥
कृदनी॥कुंवर्षवृद्धमसिप्रतित्वावर्षवृद्धवत्॥सूर्यनक्षत्रनिधाय॥ ॥कुंपनायूकधं

कःपत्रापूर्णाश्रुतानथापरुतं त्रकावायुर्धविविनक्तु॥पुत्रीषक्तयेत्॥ ॥ॐॐवावःसविता
हिरण्यपादिःप्रतिगृह्यत्विद्वद्वापादिना॥संस्तुतं ह्यलनिधय॥ॐतिवलसाधनी॥ ॥
वलपूजनी॥चन्दनसिन्दूरषण्णवा॥ॐप्रजापते॥ॐश्रुतपते॥ॐमनारुतिप्रदा॥ ॥द्युतपा
त्रवलपात्रश्रुतिकुलनिधय॥वलसविन्दुनय॥मनु॥श्रुतिगवुस्वथडानामनदुधन
विन्दुगवुस्वाहा॥ॐविष्णुगवुस्वाहा॥थडानामनदुधन॥ॐविन्दुगवुस्वाहाप्रजापतेतयः
स्वाहा॥ ॥नमोऽश्रुतपुदानीवल॥मनु॥ॐश्रुयाध्वंरसमृद्धयसध्वंसूर्यसत्त्वध्वंसमाहित
म॥श्रुयाध्वंरससंवागक्राम्पुहमम्॥ ॥ॐॐषत्वाङ्गत्वा॥सुलीवलपाके॥श्राववक्तृपूर्वव
त्॥संस्तुतं गुरुकुम्भवावर्चनी॥ ॥मधुगुहदुग्धमिश्रकंवलवुनडाडाप्राससयाकथासने॥ ॥
उपेयमनक्तुगयादाय॥नमोऽश्रुतिदशविद्या॥श्रुतनाम॥शिषानयस्वाहा॥ॐॐन॥ॐॐ

वीर्यम॥ ॥ॐ ह्यहनाधन॥ चलरुम॥ विदाहति॥ पञ्चवानुद॥ ॥ कष्टु॥ ग्रउदकमानुमर्क
साय॥ ननुपूजनै॥ ॐ कपालाय नमः॥ सनीनमभापूषीनमभा॥ ॐ कपालाय स्वाहा॥ ननमकुधः
दृताहति॥ ॐ अग्नप्रायश्चित्तं त्वं दानीप्रायश्चित्त्रसिवाकृदस्त्वनोथकामउपक्षवासि
यास्येपतिष्ठीतनूनामस्येनागयस्वाहा॥ ॐ दमग्नयस्वाहा॥ ॥ ॐ वायाप्रायश्चित्तं त्वं
दानीप्रायश्चित्त्रसिवाकृदस्त्वनोथकामउपक्षवासिमास्येप्रजापतिनूनामस्येनागयस्वा
हा॥ ॐ दमग्नये॥ ॐ सूर्यस्यप्रायश्चित्तं त्वं दानीप्रायश्चित्त्रसिवाकृदस्त्वनोथकामउ
पक्षवामियास्येपशुप्रीतनूनामस्येनागयस्वाहा॥ ॐ दसूर्याय॥ ॥ ॐ वन्दुप्रायश्चित्ति
नसिवाकृदस्त्वनोथकामउपक्षवामियास्येगुरुप्रीतनूनामस्येनागयस्वाहा॥ ॐ दवन्दु
मस॥ ॐ गीधर्वायप्रायश्चित्तं त्वं दानीप्रायश्चित्त्रसिवाकृदस्त्वनोथकामपक्षयोमिव
स्येय॥ गीधर्वाप्रीतनूनामस्येनागयस्वाहा॥ ॐ दगन्धर्वाय॥ स्तुलीपाकम॥ स्तुहानि॥ ॥

ॐ प्रजापतय स्वाहा ॥ इन्द्र प्रजापतय ॥ अग्नि सृष्टि कृतय स्वाहा ॥ इन्द्र अग्नि सृष्टि कृतय ॥ ॥
 गीश्वर वृषा दीनानि धाम ॥ वक्राष्टकं लग्नादि गणपति रुक्मिणी सवत्यष्टना रुक्मिणी दद्यात् ॥
 घना रुक्मिणी रुक्मिणी ॥ ॐ पूर्युर्दवि ॥ ॥ नमो निला रुक्मिणी विधिवत् सर्वथा रुद्रया न ॥ ॥ कलेज
 प्रतिष्ठा स्यात् ॥ ॥ नमो यथा कर्म कातयेत् ॥ प्रयुपता सेन रुद्रा ॥ नृयुगे नृजंसा ॥
 निपतिसा तन उच्यते ॥ ॥ पुरुषोत्तम धूत्रानयेत् ॥ लासा लाडा रुद्रा ॥ यद्रु सिंहा सवस्था
 रुद्रा गस सिंहा सन उपविश्य पूर्वमुखी ॥ पुरुषोत्तम धूत्रानयेत् ॥ अर्घ्यपात्राद
 कना स्यात् ॥ वक्राष्टकं ॥ मितं रुद्रा उवाच त्वया ॥ ॥ नमो वलानुक्रमेण सा पा
 नमस्तुता ॥ सरुत्तम ॥ ॐ स्वसिवा वनं प ॥ ॥ वधूति न त्वेन साध ॥ अधयेत् ॥ ॐ
 वक्रयष्टनं ॥ सितमि ॥ ॐ विष्णु त्रना ठमसि ॥ रुद्रि ॥ ॐ नमः ॥ गीरुवाय ॥ पादो ॥ ॥ नमो

नृषदाकृष्णः (गुहाधितरुदकं नवमूर्द्धिभ्रुविषिं वति मंत्रः) ॥ कुं यानपतिद्या गुरु प्री प्रजा
प्री प मु प्री गुरु प्री यः ॥ श्री निर्दिता ननु जी न प्री न न प्र नी क शा सा जी यै वै तं मया स
रु सा विति ॥ अमु कद वी स वि क धा पु नु व ती क व ॥ ॥ व नु म सु ल न लो य ॥ कुं स्व मि ना
म मी ना ॥ व सा पो व सा ष य ॥ कुं व य फं सा म ॥ द न क क यी न व न ॥ कुं दी र्घा म् स्त्रा ॥ उ व न ना
न कं स पा ल प्या व क ॥ कुं व क य स न ॥ ॥ वा ल व न्ध न म नु ॥ कुं नृ य म म र्घ सा वृ क उ जी व
रु ल नि रु व ना व धा नि ॥ नृ ति व ल व न्ध नी ॥ ॥ सि न्द्र न मू उ न लो य ॥ या लै न उ पा दू य क
॥ ॥ प्र नृ ष ष सि न्द्र ना ना रु नी ॥ ॥ कुं लं ज वि षु दा ॥ सिं दू तं स र्व सि द्ध र्थ सि त सा ध य नै त्व
या ॥ स्वा मि ना दी र्घ मा य त्वं पु नु मा य जि वं कृ त ॥ सि न्द्र न मू उ द्वा य ॥ कुं ग्री म्ब न ॥ की मा त्री
सू नृ ह सि त सि व पू य नू ॥ कुं न क्का रु नं ॥ पा का न दि न ॥ कुं प वि नृ ष ॥ प ला स सि ॥ कुं मि

वानामासि॥कुम्पुष्प॥कुं पवित्रुम्॥समिध॥समिधग्नि॥दन्वलि॥ ॥कुं नमः॥सम्बुवाय
व॥नृपा मार्ग॥कुं नृपाय स पकि लिषा॥जला खपा लू खपा जहा खपा न य॥कुं दिन द्यव
स्तु॥कुं जल न उ यके॥कुं न र्व क द्द व दि न॥ ॥विन्द नानि स गुप्त गीर्वादि॥मिम दल तंड
विघा॥कुं व सा ४ पवित्रुम्॥सरू आ न तिष्ठा त्वं धु न के॥पू नृष न ला सा ला उ र्ध ना य ना य
डाडा॥वल्पा स नै का न य न॥वल्पा ग न म नु॥कुं या १० सु या ता न सं द धा मि नृ सि रु त्रः
स्त्री मा ६ स्त्री मा ६ सा नि त्वा वा त्व वा मि॥कुं स्व सि वा च नं प १० न॥उ विष्णु क लं ख द्वा या॥ग
पव त् न दी वा र्क॥प्रा स ना न्क य द्द सि रु स ना रु त्ता १० व धू स्य त्त्रो स न उ प वि ग्ग्या॥श्रा द्द ति॥
कुं श्री ग्ध न॥कुं म ना रु ति प्रै मिं प्र तिष्ठा॥ ॥व धू रु द या ल म्भे न म नु॥कुं य रु स सी म द्द द य
दि वि व न्द्र म सि ग्नि न॥वि द्या ० रु न दि द्या न् प १० ध म स न द १ ग न म्॥ ॥न न १ श्रा द्द ति॥म रु द्या

[illegible]

वसया॥ धीकादि धिजवाककयायविधिर्था॥ प्रथमनकुशुभकर्मकथा॥ विधिवत् ॥ ॥
ततोपथशविधिमनुषकलभर्वनं॥ ॐ नत्वाजामित्यादि॥ दानपूजा॥ ॐ वृष्ण (६) प्रजोयति
सूर्यं स मासं नमः॥ ध्यानं॥ यीनं यीनं वरुवाहं वक्रानं वरुना ननी॥ हंसयानं वरुहं
दधुमि मृकमंतुलं॥ पूजनं॥ ॐ प्रजापतये श॥ ॐ वरुना ननाय नमः॥ ॐ हंसवाकनाय
शविदः॥ ॥ ॐ वृष्णयस्तु न॥ ॐ प्रजापतये ॥ ॐ वृष्णं तस्य तस्य यं तासूकस्य वाधिन
मं वज्रिन्वा विष्णुं न द्रुपयद्वीति दवावृद्धनमरिद (थेस्वीनां) ॥ ॐ धामवृद्धग्निरिः
न्दावृष्णादवावृद्धस्यति॥ सवतसा विष्णवे वायवे प्रावतु नः गुरु॥ ॐ वृष्णं धामपि
नमः॥ साम्यासः गिवनाद्यावापृथिवी मृन रुसा॥ पूषानः पातु द्रुतिनावृ (धत्रकामाकि
र्त्तन्मृगसः सयी सन॥ ज्वाकनादि॥ ॥ नना मृकल गपूजा॥ ॐ धनाय नमः॥ ॐ य
ऊनमन॥ ॐ धनाय श॥ ॐ दं विष्णुर्विदुम॥ ॐ सामाय श॥ ॐ नूनावती॥ नृणां श॥ ॐ देव

[illegible]

[illegible]

दय॥ स्वस्ति कासन पूर्वमूर्खस्ति त्वा॥ तिविस॥ प्रवर्षनमूर्धनकृत्वा॥ कुं न द्वा रु ही॥ दीप॥
 न जाति॥ तति॥ कुं न द्वा वा व द धि॥ वदिर्धिपत्न॥ नृक त ग वि स रू न॥ न ना नृक क ल
 सन सान न का न य नृ प्रवर्ष न॥ इ त व प न्न व स हिते न॥ कुं न द्वा न द्या दि॥ नृ पा दि ष्टा॥ न उ
 न त् स प्या व क॥ नृ न्य ज त न सान॥ नृ न्य व स न नित्य क॥ प व ग यी द द्या न॥ कुं न द्वा व न॥ का
 ना त स त र व न या ड॥ नृ र्घ या व क॥ सूर्य पूजा धूप दीप त्वै कृ त्वा॥ कुं न द्वा वे ना रु क त्वा द्याः
 दि॥ कुं न द्वा म्र पा नृ व ग नृ व द्वा कृ त स स र्त्तु क॥ इ र्वा रु त स मा यु क ग द्वा ध र्घ दि वा क न॥
 कुं न द्वा दि स्थं ग र्क प्र य सा स म धि स रु म्र स्य प्र ति मी वि ग्ध रू प॥ प त्रि वृ द्धि रु त्र सा मा दि म धं
 स्म ॥ ग ना य र्व कृ द्दि वी य मा न॥ ॥ प्रवर्षे सूर्यस्य स्मरुप ॥ ८० ॥ ज वा कृ स म स्या दि
 ॥ ॥ का टा त स या ग्व त र व न द्या य॥ कुं न द्वा व स्य त्वा॥ ॥ पु न र्ता सा ता व ये न॥ य रू सि रू सः
 न स्य इ त्त्र रू ग सि त्वा॥ पु नः नि म्म र्क न कृ त्वा॥ व धू कृ ग न स्य स्ता सा ध न कृ त्वा॥ पु न र

नैपादनसित्रत्वं॥ सत्रघ्नपादत्वं॥ ॐ वक्रयस्तनं॥ सित्रसि॥ ॐ विश्वात्राटा॥ रुदि॥ ॐ नमः॥ सीरुयाय
॥ पादया॥ अर्घपात्रकुलनसिं वयन॥ ॐ दवस्यत्वा॥ नाकिसक॥ गन१॥ ॥ गर्हसाधनं कृत्वा॥
ॐ अरिर्न नरिनमन पूषारुगै प्रसेविते मे दधधुवृदुःक ल्ययामी निल लामं स्वस्व रूपानिः
म० सृजकलुजावेष्मनरादद्यात्॥ ॥ तज्जग्रा विसाधनं॥ ॐ गन्धामृगु विज कानि योनिप
विगयति दिन्द्रियं॥ गह्राजरायुना वृत्त उल्लंज कानि जन्मना॥ अरुन सत्यमिन्द्रियं विपान०
शुक्रमन्त्रसंस्तुत्य न्युयमिदं वपया मृगं मधु॥ ॥ आधानमन्त्रः॥ ॥ ॐ गर्ह (धरिः
मिनीवाली गर्ह (धरि पृथुक॥ गर्ह न अग्निना दवा वाध लीप्स्कर सुजो॥ नना रुदयात्र
रुतमन्त्र॥ ॐ यत्ति ससा मरुदेयं दिवि वन्दु मसि जिर्न वदार्ह नन्मा नदिद्यात्य (धम गत्र
दः सतं जीवेवमः गत्र दः सत ० ॥ ॥ द्या सत्र दः सतं पुपुवा मग वद गनं मदीना स्याम ग
त्र द गतं रुय ग्य सत्र द सना॥ पुत्र कामन॥ ॐ याडा वधी ग्रायमाना समना सत्र स्वनी॥ अरु वृ

त्याःपुनःपितृत्रिवनामजंगममिति॥ इयामर्तधुगुथसमात्ता॥ ॥मनारुणातवासगुननत्वा
या॥कुं स्वस्तिवावनीय॥०॥ ॥सिधुलंठविय॥कुं वसा॥पविर्तु॥वन्दुमद्युतनत्वाये॥ ॥वसा
पानसारिविय॥कुं वय॥०॥सामवर्त॥दककाकयिनदुने॥कुं दीर्घायुत्वा॥जडाननानकसप्या
वक॥कुं वृक्षयस्तनी॥ ॥वालवन्धनमकु॥कुं अर्थममर्थसावकउजीवरुलानिरुवना
वक्षति॥०॥तिवालवन्धनी॥ ॥पुरुषदासिन्दूनागारुमी॥सिधमूठनत्वाये॥कुं त्वंजविष्टका॥
सिन्दूतंसर्वसिद्धर्थसितसाधयनत्वाये॥स्वामिनादीर्घमायुत्वंपुनमायुगिर्वकु॥सिन्दू
तमूठकाय॥कुं गीर्धन॥कीमानीसूतदावद्वयन॥कुं नक्षारुनं॥पानकानेदिन॥कुं पविर्तु
॥पतागसि॥कुं गिवानामासि॥कुं गपुष्या॥कुं पेविर्तु॥समिध॥कुं समिधग्निस॥दम्बः
ति॥कुं नमःसंरुवायव॥सापीनसा॥कुं अलंकनदमसि॥लंखपाडाकाखमाजुडरिवडान
या॥अञ्जन॥कुं नचक्रुति॥वन्दनादिसगुधगार्वाक॥सदाशानिप्रनिष्ठात्वा॥वधूरुद

या लंरुनं॥ कुं यलुससीमकदयं दिवि वनु मसि गिनी॥ वदादं नदिद्यात्य (ग्यमगनदः गरी॥
॥ ॥ अरुति विर्य॥ ५४॥ कुं गकर्त्रा स्याषधीर्गकर्त्रा वनस्पतिर्दीर्गकर्त्रा विष्णुस्य रुतस्याः (ग्नग
र्क्षा न्यामसि स्वीकृता॥ पुन नादृति॥ कुं मना रूति॥ प्रतिष्ठा॥ ॥ लासा लाडाथ नायन॥ स्वस्तिका
सन सिला॥ गुरु ल (ग्वेवत्प्रो सने कृत्वा॥ स्वस्ति वावनीय (०॥ ॥ पुनः यद्दसिंहासन उप
वि (ग्या॥ ब्राह्म न पूजा॥ गभनिक प्रष्टु क यव धन्यादि॥ ॥ पूष्टु॥ न्ना ससा॥ आगीर्वा
द॥ अग्नि विगर्जनं॥ अरिषेक॥ वन्दनादि॥ स (गभन॥ आगीर्वाद्॥ सरु आत्रतिपुति
त्वात्वेयाय॥ नक्रासु प्रत्ययानं॥ कोमानादगर्जन॥ सूर्यसाक्षि दीकृयानि॥ समारविथ॥
तुश्चा उका न विथ॥ ॥ अन्तिगर्हा धान विधि समोय ४॥ ॥ ॥ अथ यं ग्रवन कर्म
विधितिरयानं॥ गुरु दिव सषष्ठमा सकृत्वा॥ सुप्रत्यसा नैकृयानं॥ क्रमात्कसे गमज्ञान
(थयाय॥ कुरुपताका गभनक न रुयके॥ ग्वस्त्रे न्थकादि संविधि ध्ये वादक याय॥ मूल

लङ्घनसकृमात्रयं तं सायविधिर्था॥ इति नमः॥ कृमात्रययथासखप्रतिपलवाय॥ सर्वलुगर्भक
त्वापस्विमातिमुखं स्नाप्य॥ ब्राह्मणं न उलूखत न कवसु सगुह्यत॥ दक्षिणं पश्य वलिनय॥ अग्नव
लि॥ इति वनलश्वाहायूमलककाजानवा॥ इति विलिवननय॥ ॥ नना ब्राह्मणं संसृयायै कृत्वा
॥ न्यासः॥ अर्घपात्रपूजा॥ आसनं॥ ॐ न त्वाजामीत्यादि १२॥ ॐ आद्यकलर्गं॥ पूजनं॥ ॐ क
मानायनमः॥ ॐ सिखित्तरायशावद॥ ॐ यत्र वा ए॥ ॐ यदक्रन्दः॥ आवारुनादि॥ ॐ आ
कृष्टुं॥ १०॥ ॐ शानात्रमिष्टुत्यादि १०॥ ॐ अग्नयत्तुवा॥ १॥ ॐ अर्द्धमासा॥ १२॥ आवारु
नादि॥ ॥ सग्ननपूजा॥ ॐ गधनां॥ ॐ जानवदस॥ ॐ नूमात्रदाय॥ ॐ घृतं घृतपा
वानः॥ ॐ नमावसुग्नय॥ अग्नवलि॥ ॐ विग्नयत्तुवा॥ इति॥ ॐ दीर्घायुस्त्याय॥ ॐ अ
स्माकमिन्द्र॥ वृष्टि॥ ॐ वृष्टस्य न वृष्टिर्नसि॥ इति स्वन॥ ॐ समित ६॥ सिन्धुनमूत्रं॥ ॐ ग्रीष्म
का॥ ॥ ॐ वरुणस्य॥ धूपदीपदलनेवद्य॥ ॐ मनारूतिप्रतिष्ठा॥ आपस्वि॥ अग्न्यादि॥

थनवाक्र (ननपूजन) ॥ थकादिसंवाक्र वपूजा ॥ भक्तिक ॥ पृष्ठिक ॥ ॐ स्वस्तिवाचनादि
षष्ठप (०५) ॥ ॥ वधूलासालाजकरुया ॥ प्ररुष ॥ स्वस्तिकासनसौत्वा ॥ पूर्वमुखं ॥ निम्नः
बुन ॥ अर्घपात्रजलनसिं वयन ॥ कल ग सस्नानननक ॥ भक्तिक स्नाने विधे ॥ ॐ शोः भ
क्ति ॥ मन्त्रं नुवा सगुणनत्वाया ॥ प्ररुषन ॥ त्रकवस्तु विधे ॥ वन्दनादिसत्तम ह न्नागी
र्वादि विधे प्ररुष ॥ ॥ थनासी प्ररुष सरुसित्वा ॥ कुमात्रकलगपूजी केर्या नू ॥ म्नात्रव
सरुया ॥ स्रयार्घ ॥ न्यास ॥ अर्घपात्रपूजां कृत्वा ॥ आत्मपूजां च ॥ त्रकवन्दनादि ॥ पूजन ॥
ॐ नत्वा यामि ॥ ॐ देव स्यत्वा ॥ ॐ गगनां त्वा ॥ ॐ वृहस्पते ॥ ॐ वत्वा त्रिगुण ॥ ॐ द्वात्रादवी
॥ ॐ स्माकमिन्दु ॥ ॐ वृहस्पते नदुदि त्रसि ॥ ॐ कर्तुं कर्तुं ॥ ॐ यन्त्रवा ॥ ॥ ॐ आधनगक
यश ॥ ॐ अनकासनायश ॥ ॐ पद्मासनायश ॥ ॐ कगनासनायश ॥ ॐ कर्तुकासनायश ॥
ॐ मयूनासनायश ॥ ॐ कनानायश ॥ ॥ न ॥ निखिद्यानसि तं त्रकं द्विजुर्जनकवासर्ग ॥ क

मात्रं चित्तयद्द्वंशकिं रुसं वत्र प्रदं ॥ क्रमानाथ नर्षनं मं ॥ ॐ स्कीदाय ॥ ॐ वाततृपि
नतमं ॥ ॐ वदकाय ॥ ॐ त्रकपधुय ॥ ॐ गकिरुसायन ॥ ॐ षजाननाय ॥ वद ॥ ॐ
घदक्रन्त्यथमं जोयमाना उद्यस्मृदादतवापनीषा ॥ ॐ नस्ययका रुति दस्यवादः ॥ ॐ
सुस्यं नमदिजाननं श्रवण ॥ ॐ स्यानायथिना ॥ ॐ अग्निमूर्धा ॥ ॐ मामनेत्रिनु ॥ ॐ व
स्रवमा ॥ ॐ यगुवा ॥ ॐ आवा रुनादि ॥ ॐ गजवधुयग्रहाधिपनयशापूर्व ॥ ॐ कर्कटायम
धुनाधिपनयशादकि ॥ ॐ यहाकधुयकलमधिपनयशापञ्चम ॥ ॐ तम्बादनाय
सात्मताधिपनयशाउल्लर ॥ ॐ क्रमानायमधुनाधिपनयशासंध्य ॥ ॐ रुतसनायशाक्रम
नाय ॥ ॐ रागद्वयस्याहा ॥ ॐ कायनकासनी ॥ ॐ दीर्घाय ॥ ॐ यारुलीनि ॥ ॐ कथं ॥ ॐ
अषा ॥ ॐ यद्यस्वविनमेन ॥ ॐ दि ॥ ॐ सी ॥ ॥ स्वसिवावनप ॥ ॐ न ॥ ॐ त्रकवन्दन ॥ ॐ यद
यक ॥ ॐ नकायस्यापवीन ॥ ॐ यहापवीन ॥ ॐ त्रकपथ ॥ ॐ या ॥ ॐ रुतिनी ॥ ॐ पूजन ॥ ॐ यगुवा

[illegible]

ग्रीमनकसंसाधयन्॥ पुनरुषदा॥ दक्षिणपाठसपूजा॥ ॐ अमरुदग्नित्रिभु॥ खडास॥ ॐ बुधकस
न॥ वीजकानिरुडागतप॥ विलानुक्रमदा॥ क्रोससथेन॥ सुयाकपुनरुषदा॥ ब्राह्म (नस्वस्तिः
वावनं प॥ ०॥ जवक्राससवतसिथेन॥ ॐ हिनधगर्ह॥ खडासकृगकाथेन॥ ॐ अरुः
वृन॥ गार्होपिथमनु॥ नका॥ ॐ सूप (सिगत्रत्मीस्तिवृत्तिगिगमयर्गवकृवृत्तुथ
ननपक्षोस्मामासावृदा॥ ० स्यं गमनिपहं पिनाम॥ सामनननृवामिदव्ययसूयानि यप
द्विधिया॥ ग॥ रु॥ ॥ सूप (सिगत्रत्मादिर्वगवृत्तुपन॥ अगीर्वाद॥ ॐ स्वस्तिनं नृन्दा॥ प्र
प्रवर्ग॥ ॥ ॐ मनारुकि॥ पुनिष्ठा॥ ॥ ब्राह्मधनसंकल्य॥ दक्षिण॥ कमानपयादडा नना॥
वावन॥ स्वातननके॥ ॐ समुखाय॥ ॐ नृदवनाये॥ ॐ गृहाधिपनय॥ ॐ नस्मैक
मात्रायनम॥ ॥ अगन्धदि॥ ॥ अरिषकवन्दनादि सर्वदद्यात्॥ सरुआनगी॥ मनी
रुतिप्रनिष्ठा॥ ॐ दिविथ॥ डाषधीरुसद्य॥ थसावक॥ ॥ पुनरुषदा॥ सत्यरुकादी॥ तदी

नगद कुत्र कर्म कुत्र कर्म दिन का नय नू ॥ नग सूर्य साक्षि दी कर्मा नू ॥ ॥ द्विर्थ क मान क
लग पूजा पूर्व व नू ॥ अथ गी म का नय नै क र्था नू ॥ अष्ट मा स क र्था ॥ नित्य क मान क लग पू
जा ॥ धी का दि स्य वि धि व नू य नो द की का नय नू ॥ दा त स ना रा य न टां लं सा य ॥ ता सा ता उ रु
थ ॥ क लग स्या ॥ गु स्म य ॥ वे द्वा ॥ अष्ट क लग पं वे व ति ग ॥ ६ ग म ग्र स को मा त्री व ति न ॥ स ग म
न सं या य र ॥ लं पा रु क डा हा पा रु का द म्ब ल सिं ॥ अ लग न सिं ॥ अष्ट मी ग लग या व सु स दि
न व सं य ॥ ग्र म मा ली का अ दिन वा य ॥ य र्ष ष ष क ग म लि क र्म का नय नू ॥ ॥ य थ श वि धि
म नु न क लग र्च न ॥ वृ ष ष पू जा ॥ ॐ प द्वा ग ना य श ॥ ॐ रुं सा स ना य श ॥ ॐ वे ष ॥ ६ न म ग ॥ ॥
अ ना ॥ ॐ पी नी पी तं व रु र्वा दं वृ ष ष ना न न ॥ रुं स या नी व वि ग ष दं द षु द ॥ १ गृ ष म लु
लं ॥ ॐ वृ ष ॥ ६ श ॥ ॐ प्र जा प न य श ॥ ॐ व रु ना न ना य श ॥ ॐ रुं सा स ना य श ॥ ॐ वृ ष ष पू ज न ॥
ॐ वृ ष ष ॥ ६ स ॥ १ पि त र ॥ ॐ ध म वृ द ग्नि त्रि न्द्रु ॥ अ वा रु ना दि ॥ अष्ट क लग पू ज न ॥ ॐ ध ना

[illegible]

कुं॥दर्भ नसरुवल्हाममनु॥ कुं प्रजापतय स्वाहा॥ कुं दीप्रजापतय स्वाहा॥ कुं अग्नयस्वि
ष्टकनय स्वाहा॥ कुं दमग्नस्विष्टकनय स्वाहा॥ तिलाकृति॥ कलगप्रतिष्ठा॥ संख्याकृति॥ ॥
तमापुत्रधववधूलासाताहा॥ स्वसिकासनपूर्वमुखं सित्वा॥ निम्बद्वनैकत्वा॥ कुं नक्षत्र
दी॥ वसि॥ अथवावदधि॥ दीप॥ नजासि॥ अष्टकलसनवधूस्नानैकाग्रयन्॥ कुं शसुनैव
दि॥ ॥ अथजलनस्नानैकत्वा॥ अथवसुनगयक॥ तासाताडाहा॥ यद्वसिंहासनैव
उरुवता॥ गस्तित्वा॥ अथपापुजलेनस्नित्वयन्॥ कुं दवसत्वा॥ ॥ कुं पुत्रधवहवाहा
आस्नानतना॥ भर्तृहताउवाह॥ गहननत्वाय॥ अथमङ्गलतयावक्तुविय॥ ह्य्यावक्तुम
ऊतिथि॥ लंखापा॥ आहाखापाप्रहृति॥ कुं हिवधगर्भ॥ कुं अयमूर्जवतावृद्धुऊ
वरुलानीरवत॥ वधू॥ नूयात्॥ चन्दनादिस्त॥ गहन॥ आभीष्टदि॥ आहृति॥ कुं सफतजु
॥ कुं मनाहृति॥ पुतिष्ठा॥ वलानूकमेवयलूपासनैकाग्रयन्॥ अथमङ्गलमारिपुयातले

सतयो॥ च० ल० शास्त्रं॥ ॐ स्वस्ति वाचनीयं ॥ ०॥ पुनः प्रहृष्टि हासनं उल्लसता ॥ ०॥
ग्रहमालिका वियं॥ ॐ स्वस्ति विष्टदा॥ कुमाने कलशं कृता हयं॥ आरुति॥ ॐ यजुवा ए॥ ॥
कुमानवाक्कलवा लीलाय॥ दानसर्थकादि स्मृ॥ क० ग० उ० ता० डा० ड० ब्रूया काय॥ वधून उ० ड० मू
द० तय॥ वाक्कलवा॥ तता वधू ०८ ब्रूयात्॥ वं ०१ ०१ द॥ आरुति॥ ॐ अथ हवीं गदिना वा
जान ०८ स गयता॥ यामाप्ता नावा न कव रेति नियुक्ता मय्य क० ग० भ० मूपा दा हवन्ति॥ ॥ वं ०१
द० आरुति॥ ॐ अथ वं ०१ भ० दयत्यग्निर्गर्वा श्रुतिर्ज्ञाना यूवस सा विमान॥ ०८ मम पा ५ स ग०
मे सूर्यस्य नि सन्न विप्रामतीति निहन्ति॥ गीत धवर्न॥ आरुति॥ ॐ वदा सियेन त्वं दद्वद ददवत्पा
वेदा तव त्वेन नमः वदा त्वयात्॥ ॥ पंचथ वक्॥ आरुति॥ ॐ नमः स तवायव॥ ॥ वाखा क्तावक
आरुति॥ ॐ त्वम० ग० सूर्यस्य वर्वसा ग० ध० स नृषी ना ०८ कृतान॥ सीपियेन ध० म्ना सम हमा युषा ६
संवर्त्तसा संप्रजया स ०८ वायस्यो वायवभिषाव्य॥ कुमान कलशं विसृज्य न कृत्वा॥ ॥ मती क
मान कलशं दा वं न का वरीत्॥ कुमानवाक्कलवा पूजा कुर्यात्॥ वकोपस्त्रं व॥ ॐ कुमानवाक्कलवा

[illegible]

अनन्य कथयति ॥ ॐ गङ्गासनाय ॥ ॐ विष्णवे ॥ ॐ नमः ॥ ॐ चतुर्बाहु धर नि एल लक्ष्मी वा
मा हस्त हितो । सदा देवो तर्क दव् । आयक्त स वृत्ति हि दा ॥ ॐ कथा वाय ॥ ॐ नाना यम य ॥ ॐ
श्री दय ॥ ॐ लक्ष्मी दय ॥ ॐ मंगलाय ॥ ॐ श्रयतात्पादि ॥ ८ ॥ ॐ सूप ॥ ॐ सि गन्तु स्त्री प्रिवृत्ति
नाम यत् वृत्त दुर्धत वप को । साम आत्मा च दा ॥ ॐ हि गमनिय य ॥ ॐ वि नाम ॥ सामा गमन नू चान
दव्य यस्तु यद्दिय पुन विष्णु ॥ १ ॥ ॥ सूप ॥ ॐ सि गन्तु स्त्री दिव गन्तु स्व ॥ ॐ अस्मि यमा
अस्मादित्या ॥ अर्चन सिन्धु ता गुण नव न ॥ असि साभन समया विष्टक ॥ अर्चन
श्रीति दिवि वंधनानि ॥ ॐ सूप ॥ ॐ पवित्र ॥ ॐ मिवा नामासि ॥ ॐ अस्माक
मिष्ट ॥ ॐ समित ॥ श्री गन्त ॥ ॥ यदु स्वस्ति ॥ धूप दीप ॥ ॐ मना हुनि प्रतिष्ठा ॥ उप ॥ सा
॥ ॐ तस्मिन् पते नमस्तु स्य सर्व संपत्ती दा यकी ॥ काम दीमा द्देव वधन दा पुत्र दा य
का ॥ ॐ सूप ॥ ॐ गता वकी गन्तु ॥ ॐ स्य वाद न ॥ समक ता पुक त्या दीप य नो रुतना

ईदी॥ पापादीमित्यादि॥ जगन्मदि॥ ॥ धवतं वन्दनादिकाय॥ पुनः यद्गसिंहा
सनउपविष्य॥ उरुनरुगावधू॥ ॥ गीमकानयनशक्ति॥ ॐ मादिसुम्रायुदाकृते
मरुशानाननवाप्रदि॥ एतस्य कृत्याउपनिनस्यपथ्यं नृत्वाहा॥ पुनवाकृति॥ ॐ म
नारुतिप्रतिष्ठा॥ ॥ वधूश्रुत्वा॥ नमस्कदेवायुवनारुव॥ ॐ सामगुवनात्राजनमा
नृषीप्रजा नृनिमृकिवक्रा॥ नृगीनस्मात्रुत्यमया॥ वाग्मस्यैवसंनिदिनश्रुत्वा
उ॥ एतवधूश्रुत्वा॥ ॥ वाक्कदपूजा॥ भक्तिकप्रवृत्ति॥ यवध्वान्यादि॥ मङ्गलिनैर्ध्या
ममल॥ गुमा॥ धृष्टम॥ लमारुजितिसद्वाय॥ अग्निविसर्जनं॥ वतिद्वय॥ यजमान
श्रुतिषक॥ सरुशान॥ कोमात्रादेर्जन॥ साधिकाय॥ समारुद्रुन्वादिसकलसर्ववि
या॥ ॥ वाक्कदोनक॥ नथपलपथ्यस॥ ॥ नृगीमकानयनकर्मसमापः॥

निर्वा

थडा मास पूत दकर्म लिखन ॥ ॥ गुरुदिवस वधू स्नात्वा ॥ कत ग पूजा वसप ॥ पञ्चवलिंग
द ॥ गम सको मात्री ॥ सूर्यादि आदि नवाय ॥ वाक् दान कत ग र्वनं क र्यात् ॥ धं कादि स्यु
ष्य राजनी ॥ सूर्यार्घ्य ॥ ग्यासा ॥ आसन ॥ ॐ नत्वा जा मित्यादि ॥ ॐ आदि प्रकत गी ॥ ॐ आदि प्र ॥ १० ॥
ॐ ज्ञाना न मिनु १० ॥ ॐ अग्निष्टोत्र ॥ ॐ अर्द्धमासा १२ ॥ स गम न पूजा ॥ वलि ईखा पिखा ॥ कवा
कस्तन सिन्दूर मूड पूजा ॥ ॐ बहु स्वस्ति ॥ धूप दापा ॥ जाप स्तोत्र ॥ वाक् द पूजा ॥ गमनिक पु
स्तिक ॥ ॥ मना रुना उवा पूजा ॥ विधूता सा लभारु ॥ स्वस्तिका सन पूर्व मुखे स्ति ॥ निम
दना वलि ॥ अर्घ्य पात्र कले न सिं वय न् ॥ ॐ सावनी महि न त्य कति १ यथा वान १ पुस्क त्रिती
१० समीक्ष प्रतिसर्व न ॥ एवा न गर्ह एज नु सका वे उज वा यना ॥ नु स्या यं उ १ कन १ साज
द १ सय मिति प्र य १ न मी नु निर्गु हि गर्ह त साव त १ सकृ ति ॥ स्नान न न क ॥ गमनिक स्नान वि
या ॥ मर्त रूना उवा स गम न न त्वा य ॥ वन्द नादि आगी र्वाद ॥ जात्रु रुडा न न स्य पूजा या य ॥ वि

दृष्टादिनडाकृत्तययनादयकय॥८०॥ पूजन॥ ॐ नत्वाजामि॥ आसनं॥ ॐ नवस्यत्वा॥ अत्युदनी॥
ॐ मन्त्रमृति॥ शुचीकनदी॥ ॐ प्रजापति॥ ॐ अन्नपति॥ ॐ मन्त्राकृतिप्रतिष्ठा॥ वाक्मन्त्राकृतिप्रतिष्ठा
कत्या॥ पृथ्वीपतिजातुनत्वाय॥ वधूलादाजानक॥ स्वस्तिवाचनं॥ ८१॥ स॥ गहनधलिनक
॥ कलैखय॥ तंखनकाय॥ आगीर्वाद॥ ॐ अन्नपति॥ सरुआत्रनिप्रतिष्ठा॥ ॐ मन्त्राकृति
॥ दक्षिण॥ वाचन॥ कलगाविसर्जन॥ वलिशुय॥ यजमानत्रिषक॥ आगीर्वाद॥ नगास
र्यसाक्षिर्दक्यान्॥ ॥ सन्तिकर्द्रपृथ्वीसकृत्तानयाय॥ धनैलिकगवाचनयाय॥
॥ ॥ ॐ नत्वाजामि॥ ॥ विधिसमाप॥ ॥ ॥ अथजानकर्मलिखन॥ ॥ नगादोषिणार्थ
कादिस्नानमायत्र॥ नान्दिमुखग्रन्थक्यान्॥ वाक्मन्त्राकृतिप्रतिष्ठा॥ पूजाजाल
नवसपा॥ पद्मय्यानीशुवा॥ ककुत्त॥ क१ नायडाकापाल॥ ग्व१ ग्वय॥ कांतावीय॥ धन॥ स
गहनसगा॥ वाक्मन्त्राकृतिप्रतिष्ठा॥ ॐ नत्वाजामि॥ ॥ विधिवत्कृत्वा॥ ॐ नत्वाजामि॥ ॥ विधिवत्कृत्वा॥ ॐ नत्वाजामि॥ ॥ विधिवत्कृत्वा॥

जाग्रत्स्वाप्नवाक्प्रदपूजा॥ गणितिकप्रष्टिक॥ **श्रीगो** बौद्ध॥ अन्नसंकल्प॥ दक्षिण॥ विसर्जुन॥ व
लिङ्गाय॥ पिता॥ अतिनविद्याडावानास्वस्तिकासनपूर्वमुखी॥ निर्मलुन॥ वलि॥ अरिषक॥
सतिमलासमावायार्तलखनय॥ वन्दनादि॥ **श्रीगो** बौद्ध॥ जानस्नानसपिनावाक्प्रतवन॥
सतिमलासकयातखनकाय॥ पितादुस्सन॥ मनु॥ ॐ प्रजुदगमास्यागहजिनायना
सरु॥ यथायंवायुत्रजतिथथासमुद्रप्रजति॥ प्रवायदगमास्याअजनायनासरु॥ यथे
नयद्विद्यागर्हयथेयानिर्दित्रथयी॥ अश्रन्यर्कनायस्यनन्मात्रासमजीगमठस्वाहाप
मनस्वस्तु॥ ॐ ममवेदुपृग्नि॥ मन्वत॥ संनधावनी॥ कस्मिन्ननायननमवर्जुना
यपयनी॥ स्नानराव॥ अविनायीनायी॥ यनमधुस्ववर्जुनकिर्दिनयातवंगपिशानना
मिकीगुठनपासनैकत्वा॥ मनु॥ ॐ रुस्वपिदधमि॥ ॐ रुवस्वपिदधमि॥ ॐ स्वस्वपि
दधमि॥ ॐ रुवस्व॥ स्व॥ सर्वस्वपिदधमि॥ क्मातभावम्॥ वन्दनादि॥ **श्रीगो** बौद्ध॥ क्मा

[illegible]

नस्तथा॥१॥ॐ विद्या न ज्ञानं त्रयानि विद्या न क्षम विद्या नोप नृणां विद्या न नाम पत्रम
शुक्रा यदि प्रा न मृत्सं य न थ ज घं थ॥२॥ॐ समुद्र त्वा नृम ना नृ पते न नृव क्ता षी (धदि वा नृ
(ननु धन॥॥तनी यत्वा नृ ज सि न सि न्वा हं सम पा मृ सु म हि षा नृ प र्च न॥३॥ॐ नृ कु न्द द ग्नि त स
न यं नि व द्यो ऽ क्रा मा ग रि रु द्धी नृ ध ऽ सम उ न॥ स धा य ह्ना ना वी रि मि द्धा नृ क्ता दा गा द गी रा
त्य क ॥४॥ॐ श्री ए म् दा ना ध नृ (ए न यी ए म् (ए न पा ऽ व सः स नः स द स नृ प स नृ जा वि रु
ह्य गृ उ ष सा सि ध न॥५॥ॐ वि ऽ व स्य क रु र्नु व न स्य ग र्क नृ ना द सी द गी नृ पृ ण क्रा य मा
न ॥ वि र्नु वि द्दि म रि न स्य ना यै उ ना य द ग्नि म य उ न प र्च ॥६॥ॐ उ सि क्ता व क्ता नृ न ति
१ स म धा व रु ष ग्नि न मृ ना नि धा यि ॥ वृ य र्हि ध म म नृ र्ष र्ति नृ द्बु क्ता (ए वि षा द्या मि
न क्ता न॥७॥ॐ दृ श ना नृ क्ता उ द्या य द्यो र्म ष मा यः ग्नि य नृ वा न ॥ नृ ग्नि नृ मृ ना नृ रु व
दु धा रि य द न्ते धो नृ न य स न ना ॥८॥ॐ य र्हि नृ द्बु क्ता व रु द्बु (ए न वृ य र्हि द व द्बु न वः

नमः॥ पुननयप्रननवस्था नृदाहिसूनीदवरुकांयविव॥ त॥ ॐ नानेरुउसोग्रवस
सुनउकु नरुउसस्यमान॥ प्रियःसुथप्रिया नृगारुवात्यज्ञानननरिनदुदुनिः
ले॥ १०॥ ॐ त्वामधेयजमाना नृनृनिधवसुदधितवाप्याहिलयासरुउविनमि
बुमानावृणं गमनकमणिषाविवकु॥ ११॥ ॐ निप्रकादगभवनउपन॥ पुनयजमान
नपूर्वोरिमखनक्यात्मनु॥ ॐ प्राधरिमखनक्यानुमनु॥ ॐ नृपाना॥ पश्चिम
मखनक्यात्मनु॥ ॐ व्याना॥ उलनारिमखनक्यात्मनु॥ ॐ उदना॥ मधुउद
मखनक्यानुः॥ पिनाकुमानजानसुननृनमनुः॥ ॐ वदनरुमिदुदयंदिविवनु
मसिग्रिन॥ वदादनसुनविद्यामपधमगत्रदःगनजीवमगत्रद॥ गनमिति॥ पुनः
पिदुदसुननृधकुमानमात्रमनु॥ ॐ नृसुदवपनगुरुवदितमगुरुव॥ नृ
सावेपुनामासिसजीवगद॥ गन॥ कुमानस्यमाननमनु॥ ॐ नृजसिमगवद

वीरवीरमजीउमथ॥सात्वीरवनीरुवयास्मावीरमनीरुवन्॥यउमानेनमानु॥४८
किंनसुनप्रकात्यकुमानायप्रयवृत्तिमनु॥ॐ॥म॥सुनमकुस्वनीधयापीप्रपीनम
नगनीरस्यम॥उत्संरुषस्वमधुमनसर्वसमुद्रिय॥सदनमाविगत्वा॥पुनर्वाप्तमसुन
प्रकात्यमनु॥ॐ॥यसुसुनःगगयायामयारुथ्यात्रलधवस्वविद्यःसदनः॥यनविग्म
पृथगिर्वोयोदिसत्रस्वतितमिदधववक॥॥कुमात्रस्यगघनसूनगित्रपुद॥गक
लगसुपनमनु॥ॐ॥आपादवषुजाग्रथयधदवषुजाग्रथ॥नवमस्या॥सुस्त्रिकाया
॥सपुत्रिकायांजाग्रथ॥॥तनानारिदुदनी॥वाक्क॥नस्यस्त्रिवावनंय॥६०॥पिनास्त्रानं
कुर्यान्॥पिनास्त्ररिषकादिआगीर्वाद॥॥॥॥तिजाककर्मविधिसमाक॥४॥॥॥
नगाद्यानद॥गस्तुतिकाग्नीर्वा॥सूर्यार्घ्य॥ॐ॥आक॥गयत्रीन्यास॥त्र्यपात्रपूजा॥आत्म
पूजा॥ॐ॥सुदवा॥पत्रिसंमूहनी॥ॐ॥मानस्माक॥गमयनापलपनी॥ॐ॥नंत्वावृत्त॥वङ्गीक

(ॐ)
कनली॥ तत्त्वा यामीति॥ अथूकलीगम यथा कनली॥ ॐ यन्त्रिमन दकि॥ समी कनली॥
ॐ सदसत्यति॥ धन्यविक्रयली॥ ॐ वीह यन्त्रम॥ वीहिविक्रयली॥ ॐ तत्त्वा यामीति॥ अ
र्घपाशादकेनाथूकली॥ ॐ हिनय गुरुः॥ विष्नासेन॥ ॐ यन्त्रानन॥ पीतव
र्णनपमं लिखत॥ ॐ तज्जाति॥ यन्त्रानन॥ ॐ नकाहरी॥ यन्त्रानन॥ ॐ वीह यन्त्रम॥ वीहिविक्रयली॥ ॐ
यूकनमनसा॥ वा॥ यन्त्रानन॥ ॐ हिनय गुरुः॥ लक्ष्मी पूजनं॥ ॐ तत्त्वा यामीति॥ का
हरी॥ ॐ वीह यन्त्रम॥ यन्त्रानन॥ ॐ अतवस्तु॥ कुरु पूजनं॥ ॐ अग्निमूर्त्ति॥ अग्निमा
नीय॥ ॐ कथादमग्नि॥ कुरु पूजा लयत॥ अर्घपाशादकेनाथूकली॥ अर्घपाशादकेनाथूकली॥ कथय
नार्थ॥ यन्त्रानन॥ ॐ अग्निमूर्त्ति॥ अग्निमूर्त्ति॥ ॐ अग्निमूर्त्ति॥ अग्निमूर्त्ति॥ ॐ अग्निमूर्त्ति॥ अग्निमूर्त्ति॥
पुदकि॥ ॐ मयि गुरुः॥ अग्निमूर्त्ति॥ ॐ स्वस्तिवाचनीय॥ ॐ मममिति॥ ॐ यन्त्रमन
मिप्रचाय॥ ॐ यन्त्रमन॥ अथूकली॥ वदासेन॥ ॐ अथूकली॥ वदासेन॥ ॐ अथूकली॥ वदासेन॥ ॐ

अग्निमी॥ पूर्व॥ ॐ वृषत्वा॥ दक्षि॥ ॐ अग्न आया॥ पश्चिम॥ ॐ मन्त्रा दवा॥ उरुन॥ ॐ अ॥
दाय अग्नि॥ गम गाय सादि॥ ॐ नृदि पूजा॥ अ॥ नृमि॥ त्रुमिकाग्रय स्वाहा॥ ॐ पुषा रुदव॥
अग्नीर्तमूखी कवर्ही॥ ॐ महाधनाय॥ वलिं गृह्ण २ स्वाहा॥ आवाहनादि॥ ॐ कामदवाय मूर्ध
य २॥ वलिं गृह्ण २ स्वाहा॥ ॐ पुषा लाय मूर्धय वलिं गृह्ण २ स्वाहा॥ आवाहनादि॥ तमिध॥ धाम
सिन्धुकाय॥ ॐ ॐ कार्त्तविराहा॥ ॐ ॐ तृष्णी शूद्रयात्॥ घृताहुति॥ ॐ गमन कर्त्तव्यवीन॥
ल्लेहि केय उलूखल॥ मलिमूखा॥ ॐ ॐ वमान स्पेतादिति॥ स्वाहा॥ पूनवा हुतिमनु॥
ॐ अलिखन निमिषकि शूद्रक उ॥ ॐ ॐ हय कर्त्तरी गृह्या प्रयाम निदही मुखः॥ गवपा
वस्यो गे गान स्पेतादिति स्वाहा॥ पून॥ तमिध॥ हाम॥ ॐ ॐ कार्त्तविराहा॥ ॐ ॐ तृष्णी शूद्रयात्॥
घृताहुति॥ गम॥ गृह्ण २॥ दग्ध स्वस्वमर्क शूद्रयात्॥ ॐ त्रुमिकाग्रय स्वाहा॥ ॐ महाधनाय॥
ॐ कामदवाय॥ ॐ व्या हुति धन॥ १०॥ ॐ सफल अ॥ घृताहुति पूरु॥ गम॥ तिलाहुति शूद्र
यात्॥ शूद्र॥ गमूल॥ सव्यपमूल बीजमिध॥ ॐ शूद्रयात्॥ आहुति उ॥ ॐ ॐ स्वाहुति॥ ॥

[illegible]

[illegible]

तुवा॥५॥ॐ नमो मासाद्यादि२१॥ पंचवत्यार्वनी॥ॐ गङ्गानीत्वा॥ॐ हूमात्रुडाय॥ॐ जानव
दा॥ॐ घनं घनपावान॥ॐ तमावतुगमय॥ नमो वति॥ ॥ॐ विश्वतन्त्रकृत्त॥ ब्राह्मि॥ॐ वी
रुयम्भम॥ गङ्गागमसकोमानीपूजा॥ॐ नमागदेत्या॥ॐ आयजेश॥ ॥ॐ ज्ञानवदस॥
सूर्यादिपुजनं॥ॐ शक्रपूजादि॥५॥ कृत्तनसिन्धुत्रमूडपूजा॥ॐ समिन०॥ॐ ग्रीष्मन्त॥
ॐ वसुन्त॥ धूपदीपप्रतिष्ठात्वा॥ जापस्मृति॥ नमो गन्धदि॥ साक्षात्पूजा॥ॐ य
जुवा॥ कायल॥ॐ स्येवेकम्भो॥॥ धमवातस॥ॐ नमो त्रयसंगितासंग नान्दम
मषत्यादि१०॥ पथं विसर्जति॥ वाजन॥ॐ त्वं जविष्ठदा॥ दासासप्वाकक१०॥॥ धत्तादावा
कापत्पीठवस्तुनहुयकाडादय॥ धीकादिवाक्कृत्तस्य॥ स्वस्तिवाचनं५०॥ रुयधुनडाडा
जाडपनिसुप्ताय॥ भावदय॥ प्रपूजतुनदिवकं॥ भातकिनिनस्य॥ राजनरिथय॥ ग्वयपा

उविद्याउ॥खिलाखिथय॥रुयवद॥कुंभ्रवष्टादंतसूकाःप्रीवीमात्राकगभयश्रीत्वावतुत्रथन
न०सामप्रिवृत्ताभावसंनअतुर्वस्तुविर्ष॥दक्षिणमात्राकृष्टिष्टावतुवृत्तासामपंचकगः
स्वामाग्रीष्मअतुःकृष्टविर्ष॥पुनीवीमात्राकृजगनीत्वावतुवेनूप०सामसफदगस्वामाव
र्षाअतुर्विष्टविर्ष॥उदीवीमात्राकानृष्टपुवतुवेनाज०सामकवि०गस्वाम०गत्रदृष्टुलं
दविर्ष॥उद्दीमात्राकपंकित्वावतुगभकननेवनिसामनीप्रिष्टवतुयसि०सोस्वामोदमननि
गिनादृष्टवर्षादविर्षपुष्टनम्वःगित्र०वाजनदिय॥वातकमामनजानक॥जातका
सासवी०गभकमामयागभसपातयवक॥पिष्टाजन॥साकावाभावाकापलरासवालसखा
लाखिथयकृवनथलिजानकाअपिष्टावनमूलतद्वात्रसउखअनुकायकमाल॥तसाय॥
नममवनादियाय॥लंखुनकायकवातक॥मामवन्दनादि॥आगावर्षाद॥पुनिष्टात्वीलंखध
लथयाउद्दीगारुय॥पदयथाकेरुस॥ननिसलंखधनमधुतसूरुलकेवातय॥मिर्षविय॥

पूर्वादिः श्रीगणनामं॥ यावत्वातधलनके॥ थंकादिनवातखयावपकलखद्वामातिवकी
वाय॥ नासिवकमामवातक॥ आगीर्वाद॥ ॐ वक्रममनं॥ निष्क्रमनं॥ ॐ मनाकृति॥ पुनि
॥ सूर्यदर्शनयावक॥ ॐ नवकृदवकिर्न॥ लासाताडादीनरु॥ धनीलिधासाकप्रजार्थ
य॥ ॥ ॐ निनिष्क्रमणविधिसमाफ॥ ॥ ननातामकनदीकथ्यानि॥ पूर्वमुखनकलगसा
पतंग॥ लसधलनयाडा॥ गमलावनननामयायलंन॥ कलसंसेया॥ पञ्चवलिंगन॥ गम
असकोमात्रीस॥ गम॥ द्वासाथनक्रयाकन॥ ॐ क॥ वलंगनप्रवि॥ ११॥ थंकादिस्यपुष्परा
जनकात्रयतु॥ वाक्प्रदेनविधिवत्कलगभवर्नकथ्यानि॥ वाङ्मयवनुयावदनजन्मपेतिपू
ज॥ रुतखातेपूजा॥ ॐ अस्तनमेश्वरवयः॥ आस्तु॥ सतिमासमयी॥ विष्णुमाताव
क्रमिषं वसुमतीम॥ गतनश्यामपशुर्षविष्णुत्वमसीत॥ ॐ नृवादीर्यमदु॥ गदू॥ द्वादि
नश्रास्तु॥ आपस्तु॥ वाक्प्रमपूजा॥ गमनिकप्रष्टिक॥ लागमतावरुवातकमामनआनक॥

निर्मलद्वनादि॥ नर्घपागुजलनसैवयत्॥ कि॥ गमउगानक॥ ॐ शो गमनि॥ गमनिकस्वानविय॥
न्रग्नितारुनका॥ वस्तुविय॥ वन्दनादिसगुनागीर्वादा॥ गमलसवाडघलनत्वाय॥ कायरः
तसा॥ उडाफ्रससकावरुलसाखडाफ्रससनामकल॥ नासिवक॥ पृतपासनपश्रग्रस
मन्दन॥ वाफ्र॥ धनस्वस्तिवावदीप॥ ॐ॥ नासिवकाडाकलंखद्वाय॥ पृत॥ गमजानस्तानसा
या॥ नामकननागीर्वादा॥ ॐ कायस्वादाकस्त्रेस्वादाविनाधीनायस्वादा॥ मनःप्रजापनय
स्वादाविरुविस्त्रनायादित्येस्वादादित्ये मन्त्रेस्वादादित्ये समुत्तीकायेस्वादासत्रस्वयेस्व
येवृरुयेस्वादापूषूस्वादापूषूपथ्यायस्वादापूषूनर्त्रधीषायस्वादात्वष्टुस्वादात्वष्टुउती
षायस्वादात्वष्टुप्रतृपायस्वादाविषूवस्वादाविषूवनिरुयपायस्वादाविषूवसिधिवि
स्त्रायस्वादा॥ नामकनदी॥ सरु॥ नानिष्टान्नसंकल्प॥ दक्षि॥ वावन॥ कतगमगावः
दा॥ न्यास॥ कतसोदिविर्जून॥ वलिविसर्जून॥ र्थकादिकलगमनिषकवन्दनादिनागीर्वादा॥

पुरुचनु॥सूर्यगमद्वितीक्यार्त्त॥अकविषयकादिनादिनमावाह्याय॥॥इतिनामकत्रतविधि
ः॥॥तनाग्रिमासरुतपासनंयस्मासन्नयुसनेकात्रयग्राह्यकृद्रूपिनकाससधलिवा
महंयकंयावरवाकीकासंतिकृद्रुमात्रस्नानयावक।कलगस।गमनपंचवलिगत।गमग्र
सकोमात्री॥द्विदिवलिसपिनिनिकायाथयातंवलित्तीकाइरापिरवांककोतअपिनिसरुव
लंडन॥गुसतयस्व।गमउवाव्यावापवापृषुकत्रलंकात्रसहिनेनस्नाप्य॥गुरुमाताकल
स्नाप्य॥गुरुमालाकनेप।०॥आदित्यंनकपाखादीववासीम्यंतथेववा॥कूठमगमत्रकंरूप्यग्री
षंर्तुवृधभवव॥पुरुअर्लिगुर्गविद्यादजगभ्रतुरुगर्गवं॥सादृगनेश्वत्रंविद्यारुतिनाद
रुथेवव॥मास्त्रिकंवनथकगुमित्यनाग्रुमालिका॥सिद्धार्थवकपृषीवपियेगुंनगकः
गर्त॥दूर्वाकृतसमायुक्तंम।ध्रुवुलिपूतकं॥स्वर्तुनापनाम्रातिद्विद्वंयकीर्तिना॥आ
दित्यादिक्रमनेवस्नानप्रदोपयतु॥थंकादिनपृषारुजना॥वाक्त्रेनविधिवतुक्त

गभर्वहो कर्मात् ॥ जापस्मात् ॥ ब्राह्मण पूजा ॥ गभनिक प्रस्तिक ॥ मन्त्रं नाउ वा पूजा ॥ कमात्रलासा
 लावरु ॥ पूर्वमेख नस्वसिकासन उपविश ॥ निर्मबुन ॥ ॐ नक्षारुही ॥ वलि ॥ ॐ अथवाय ॥ दीप
 ॥ ॐ तजामि ॥ ध्येप्रातः कलनासूक्तही ॥ ॐ दवस्यत्वा ॥ क (गभत ननक ॥ शुद्धगभनं ॥ गभनिक
 प्रथं दद्यात् ॥ ॐ ह्यो ॥ गभनिक ॥ मन्त्रं नाउ वास (गभनन त्वाय ॥ वन्दनादिस (गभनश्रीगार्वा ॥
 रुत्वं विनयि वक ॥ ब्राह्मणदि रुवपितिनित्नाय ॥ रुत्वं संकल्यः ॥ नवपितिनितिन त्वाय ॥ थर्स
 मा (धत्तवपितिनितिन सन ॥ आगधवाय ॥ कर्पून् (गभयमून् तलिका लन ॥ रुत्वं प्रासनया वक ॥ सः
 पितिनितिनामया नान ॥ उच्चैः कलं रववाय ॥ नासि वक ॥ श्रीगार्वा ॥ ॐ या ॥ रुत्वं लिनी ॥ रुत्वं
 सनं ॥ पुनः स (गभनन त्वाय ॥ पलिलं विय ॥ ॐ वसाः पवित्रमसि ॥ अर्लकात्रविय ॥ ॐ दि न
 धगर्ह ॥ वन्दनादिसि नून् स (गभन श्रीगार्वा विय ॥ गुरुमाला विय ॥ ॐ श्रीकृष्ण ॥ जापूजाय
 य ॥ नत्वा जामि ॥ आसनं ॥ ॐ दवस्यत्वा ॥ अस्मूक्तही ॥ ॐ त्वम (गभनश्री ॥ गुरुवीकनही ॥ ॐ प्र

जायत॥ ॐ नारुति॥ पुतिष्ठा॥ पं० रुं स पूजा॥ वद॥ ॐ श्री न्मा नासः सिली कमधमासः स०
सुनक्ष सोदिव्या सा न्माः॥ रु० सा रूव॥ ग्रुति साजउ न्मा नासिष्पुर्दिव्यमग्रमस्वाः॥ रुं स
यागिना काय॥ त्वाथन त्वाथन धियक॥ ॐ अग्नि मूर्धा॥ जायु न त्वाय॥ धा सामा धलायाव स्वः
सि कसता॥ श्रीवत्स आदिन न्मा मंगलन शायक॥ आगदवाय॥ अन्न संकल्य॥ अन्न प्रासन॥ ॐ
सग्न समकु॥ वाक्म॥ वन धलिवात॥ वीगपत काय॥ ३॥ जायु नामयतात॥ उद्विष्ट न्मा मंगलन
कलं खद्युय॥ नासि वक॥ लंखन रुय॥ आगीर्वा द॥ ॐ अन्न पना॥ सरु आगति पुतिष्ठा॥ ॐ म
नारुति॥ ॥ दक्षिणा॥ वायन॥ कलग आगीर्वा द॥ ॐ आजिप्र कलग॥ न्यास॥ ॥ ॐ न्यूनं न्यूनपा
दानः॥ कलग विसर्जनी॥ वलि द्याय॥ धंकादि आदिन॥ नृलिष कवंद नादि आगीर्वा द॥ पूरु
वदु॥ कोमानी दगनि॥ नता सूर्य साक्षि दी क्य्यान्॥ भावा पिनायन॥ शाक नला साय॥ पिरवाल
खस॥ ददत॥ ॐ १० क आसन नमाल अन्न प्रासन॥ इति रुत प्रासन अन्न प्रासन विधिसमाप्तः॥

संति ॥ त्रिपासन त्रिपासन पुण्यानं विधिः ॥ ॥ रुध्रकृष्णया (थं वसप ॥ तवपितिनिस ॥ पलितु
पालंन ॥ रुध्रकृष्णया त्रिपासनया हायुवाकेन ॥ वतामारुनपावुय ॥ थंकादिनपुष्यराजनंकात्रय
न ॥ वाक्क (१) नविधिवल्लगभर्जनं कुर्यात् ॥ जापस्तोत्रं ॥ गमनिकपुष्टिक ॥ लासोलावद ॥ नृमदु
न ॥ वलि ॥ मितंरुं नाउवास (गमननत्वाय ॥ वन्दनादि आगावादि ॥ ससानक ॥ नाशिवक ॥ जाशुनर्त्त
य ॥ आगहन ॥ पर्वग्रसकायक ॥ मारुनकदृष्टयाय ॥ उद्विष्टकलंखद्वयाय ॥ सयु आनतिप्रतिष्ठा ॥
दक्षिणा ॥ कसग विसर्जन ॥ वलिद्वेय ॥ अरुधके ॥ आगावादि ॥ सूर्यगमद्विष्टकुर्यात् ॥ समयराक्ष ॥
॥ ॥ गमनिकद्विष्टाविधिः ॥ ॥ ततः ४ वृत्ताकरैकृत्वा ॥ दिवसानुकुमवपी ० पूजां कानेयत् ॥ वृष्णादृक्
य ॥ रुध्रकृष्ण ० लसियाय ॥ प्राहित आदिन ॥ वापूजावनयानं मालकावसप ॥ पूजाजापेयक ॥ वा
पूजाजन ॥ इवया उयवादकयाय विधि (थं ॥ कृमात्रलासालाउरु ॥ स्वस्तिकासनपूर्वमुखं सि
त्वा ॥ नृमदुनयाय ॥ वलि ॥ मर्दंरुं नाउवास (गमननत्वाय ॥ ॥ गतवृंदिकानत्वाय ॥ गतवृंदिका
याय ॥ पु १०५ ॥ गिरासर्त्तं नृगुलि ॥ वस्यंका (था ॥ उं हितं ध्यवर्त्तुं ॥ वन्दनादिस (गमनागावादि ॥ स

दं श्रावति पुतिष्ठा ॥ दक्षि ॥ वाच न ॥ अरिषक ॥ यदा दकधूनक ॥ मासघल ॥ लासालावर्थ नायन ॥ स्वसि
कोसन उपविग्धा ॥ कुमार रुजनयाक ॥ धरुदुधर्द्रया विधिः ॥ ॥ सीतिकर्द्रया विधिः ॥ ॥ बुष्ठा अष्टक
लग्ना गपयक यकाही शीलक्षी वलिमालका ॥ द्वा पिखा आदि नवसप ॥ यदा दक विधिवत्कुला
॥ ॥ नायकाय ॥ अलिनिकाय ॥ वाकरु हीनयं ॥ गिवा वार्थन बुष्ठा पूजर् ॥ बुष्ठादिकल मजलनेन
नर् ॥ विधिवत्कुमात्र सादुया नमदुनादि ॥ मर्तु नाउ वा स गहनत लाय ॥ प्रादि नन सादुलिवा
न लाय ॥ सादुयर्थ कादीन ॥ कुं काष्टु नू ॥ कीउ नू ॥ कुं दीर्घायत्वा य ॥ वन्दनादि आगीर्वादि ॥ सरु
श्रावति पुतिष्ठा ली ॥ मासघउ ॥ लासालावयन लिवा सउपननयाय ॥ स्नानयाषक ॥ ब्राह्म ॥ धन
विधिवत्कुम्भदिकर्मका नयन ॥ यथ यथ विधिमनु दकलग्मर्बनं ॥ कुं नू लायामीत्यादि ॥ दानपू
जा ॥ कुं बुष्ठा ॥ धपुजायति मूर्त्यु रू दमा सनीनम ॥ धन ॥ यमा सनति नंदवीरु ससुं वतुनानन
। पीनपीनवतुर्वादी कुं कुं कुं कुं ॥ पूजनी ॥ कुं बुष्ठा ॥ धनम ॥ कुं पुजायतय ॥ वतुनानन
यश ॥ कुं रीतवारुनायशावेदा ॥ कुं बुष्ठा यद्वान ॥ कुं बुष्ठा धस्यन ॥ कुं ब्राह्म सशिवितन ॥ कुं धमव

ॐ ह्रीं माला ॥ ५ ॥

दग्निप्रिष्टुवृक्षादवावृक्षस्यति ॥ सवनसावि ॥ स्वदवायईयावकुन ॥ ३३ ॥ आवाहननादि ॥ नृषुकल
मपूजनं ॥ ॐ धनाय नमः ॥ ॐ यं उत ॥ ॐ धनाय ॥ ॐ ह्रीं विष्णुर्वि ॥ ॐ सामाय ॥ ॐ ह्रीं नावनी ॥ नृ
मा ॥ ॐ हवग्नो हव ॥ ॐ नितिलाय ॥ ॐ विष्णुर्लोक ॥ ॐ नतलाय ॥ ॐ दिवावाविष्णु ॥ ॐ प्रत्य
षाय ॥ ॐ पुनद्विष्णु ॥ ॐ प्रसासाय ॥ ॐ विष्णुनराटमसि ॥ सगहनपूजाविधिवत् ॥ ॥ यथायथा
ॐ नृत्तनरु ॥ यद्वा ॥ ॐ पुनायव ॥ गीये ॥ ॐ गीश्वर ॥ ॐ लक्ष्मी ॥ ॐ यावकान ॥ सनस्य
॥ ॐ नागयथा ॥ ॐ नमास्तुसर्पया ॥ ॐ गद्यपद्यथा ॥ ॐ नमागद्यथा ॥ नृनिन ॥ ॐ निवानामागि ॥ ॥
आदिद्यादिनग्रहया हृदमासनं ॥ ॐ आरुषू ॥ ॐ ह्रीं नृदि ॥ ॐ ग्रानामिन्दु ॥ १० ॥ ॐ नृश्व
रुवा ॥ १५ ॥ ॐ मासादि ॥ ॐ नृर्द्धमासा ॥ २२ ॥ पंचवलिपूजा ॥ गद्य ॥ गद्य ॥ सकोमात्रीपूजा ॥ ॐ नृ
स्माकमिन्दु ॥ ॐ समित ॥ ॐ गीश्वर ॥ ॐ वतु ॥ स्वस्ति ॥ ॐ धनसिधूप ॥ नृजासि ॥ दीप ॥ ॐ या
॥ रुलिनी ॥ रुत्ता ॥ ॐ नृन्नपन ॥ ॐ नृरुमी ॥ प्रतिष्ठा ॥ जाय ॥ स्तुति ॥ लाकर्गनपनीयगर्भम
लंकासासनं सर्वगी ॥ नानं वनपद्मयाति सरुगं सत्कृमा रुतनी ॥ वातुर्वदविधातिनीतिजग

नां कर्ता तम न प्रभुं पा (मे) प्रक जाप्य मा ल स हि नी व न्द स रे पू जि नी ॥ नृ गं धा दि ॥ ए न ता न
ई प दा सा ध नी कृ त्वा मा त ना न्नि द ग क्रि या ॥ नृ (न न्ना म ॥) कुं स ह्मा न य स्वा दा ॥ य ना कृ ति स
र्व द त्वा ॥ य ना कृ ति पू र्ण ॥ कुं स फ ते नृ (न ॥) न ता ति ला कृ ति रू द्र या नू ॥ क त ग प्र ति ष्ठा स र्वा द
ति ॥ न्नि कृ द्वा (मे) ना म्र पा ठु ज ल न फ ने क र्मा नू ॥ पि ना न का या व द्वा व न म ॥ द धि (य न ति
लं नि ध य ॥ ॥ न त १ क मा न मा ता स रु न्ना न य नू ॥ य द्वा कृ द्वा स उ रु न रू (ग स्व सि का स न उ प वि
य ॥ नृ म द्वा ना दि ॥ पि ना उ द्वा द क न न्नि वि व नू ॥ पुः गी ना द क न सि व य नू ॥ कुं उ धू न वा य ना उ
द क न कृ दि न क र्मा ल य नू ॥ पु नः पि ना उ द्वा द क रू द्वा त्वा ॥ कुं क मा न स्य सि त सि द्वा दि द रू (ग म
नु ॥) कुं स वि ना पु सू ना द वा न्ना प उ द क उ न न रू ॥ व सा व त्वा न सं ख य म नृ ॥ कुं दी र्घा य त्वा ॥ व
द्व द्वा रु व त्वा र्वा द दि (द द्वा व त्वा ॥) नृ ग्वा र्वा व द्वा म य म्नि म प्र व म व व ॥ स व द्वा म्नि
का म (ध यं व नि र्वा स्मा न द्वा क रू वि धि स्म न ॥ ॥ व द्वा व नि ना पू र्व वि द्वा ना र्वा क र स य ॥
द द्वा प य स म ति नी ॥ म (ध ॥

तना हं पुतिव भूति निरव बुद्ध्या प्रजा तवत् ॥ संवयक्रमः ॥ कृष्णवृद्धवल्गुः ॥ संवयमनुः ॥ ॐ उ
 षध गायस्त्रधितमेन ० हि ० सी ॥ मृपा पूजा ॥ मृपान दू नकायमनुः ॥ ॐ निवा नामा तिस्रधि
 तिष्ठ विता नमस्तु ॥ श्रु कु नामा हि ० सी ॥ संधि यकीत ॥ दू नेह मनुः ॥ ॐ निवर्त्तयाम्या यधे नाया
 य पुजल नाय वा यस्या घाय सुपुजा स्त्राय स्त्री य्याय ॥ ॥ कृष्ण दनमनुः ॥ ॐ येना वकत्स वि
 ता दू नेह सामस्य वा स्त्री वनू त स्प वि दान ॥ तन वा दू ॥ मय वत दन स्या यूपी जल दक्षि र्य अ सतु ॥
 दू दनया य ॥ संरु य कर्त्तु नान ॥ पूवा ॥ मम य लि वि वा सत ॥ पून ॥ पश्चिम रा ॥ दाता वाम
 नुः ॥ ॐ स विता पुस्त ता द व्या आप उद कं तु त नूनो ॥ नृ सिव लान संख यमनुः ॥ ॐ दीर्घा यस्तु
 * कृष्ण पुष्प पलास हि संवयमनुः ॥ ॐ उा षध गायस्त्रा ॥ पून ॥ मृपान संध मनुः ॥ ॐ ग्रा मृष जमे ॥
 मम यरा ॥ मुनि क्षय ॥ पून ॥ उरु वरा ॥ दाता वाम नुः ॥ ॐ स विता पुस्त ता द व्या आप उद कं तु
 त नूनो ॥ नृ सिव लान संख यमनुः ॥ ॐ दीर्घा यस्तु ॥ कृष्ण पुष्प उला गत हि संवयमनुः ॥ ॐ
 उा षध गायस्त्र ॥ ॐ निवा नामा तिस्र ॥ ॐ निवर्त्तयाम्या यधे ॥ कृष्ण दू दनमनुः ॥ ॐ येन त्रि
 वा दिव र्यो जपे ॥ म विस्त र्य ॥ तन तव पा निवु दू म जी वा त व जी वना य ॥ स ॥ काय स सुय ॥

दुःख॥ अमयरा॥ मुनिधाय॥ पूर्वकृदरुषी॥ दुःखयत्करी॥ अमयरा॥ मुनिधाय॥ ॥ कर्तुं रुद॥ लं मूल
महामूलन॥ मनु॥ कुरुप॥ अमाकुरुज्जग॥ सिनेत्री॥ गेसुसुवा ५ संसु नरि वसिमहिदवेदि
तं यदायु॥ नन॥ कुमारस्य गिनसि॥ कुं यत्कुरु नमार्जु यतास्य समावप्रावावयनिकं गभनृदि धिजिता
नात्यायुः॥ प्रभाषीः॥ सकल उरुखाडा रुवयाय॥ ॥ मयाननापिक वन्दु म लुलकाय॥ लोका नयू
जायाय कापा॥ ॥ कायमनु॥ कुं नृक नं पत्रिपणन॥ ॥ नापिक न गिखावादि कनसाखाया॥
अमयरा॥ मुनिधाय॥ धलिवानयाडानदीपुवाकुरुजे॥ कुमारस्य नयावक॥ सिनेसि॥ गभसावन
नलपन॥ स्वस्तिकवायमाउस॥ नरुसासाताडाक॥ यदुसिहासमस्य दधिधरा॥ गस्यस्तिकासन
उपविश॥ नृमदुनादि॥ अर्घपात्रुजलनायूकने॥ वृक्षादिस्वानननकी॥ मनंरुनाठवास॥ गभनन
त्वाय॥ वसुविषय॥ कुं वसा॥ पवित्रमसि॥ वन्दनादि अगावादि॥ गभनृदि कानुकास्वायक॥ कुं
श्रुष्टु॥ वाकुरुनिदाय॥ कुं गभानमिन्दु॥ कोमानीसुष्टु दवष्टुन॥ सिनेसि॥ कुं नृकाकुरुदा॥ ३॥ पाट
कानदिन॥ कुं पवित्रुष्टु॥ जाठरासानगमल॥ कुं नववायु॥ अलमिनत्वाय॥ कुं गिवा नामासि॥

प्रसादपितिमिविषय॥ॐ प्रजापते॥ कवेदावनवुय॥ॐ दीर्घाय स्वा॥ आहूति॥१०॥ ॥ॐ मूर्धनंदि
वा अत्रतिष्ठे धिया वेष्मन नमृतं श्रुतातमग्निर्नृ॥ कविः संम्राजमतिथिं जज्ञानासासनायाष्टं ज
नयन् कुरुवाः॥ॐ रुद्रैकैर्लुकि॥ स्वाय॥ आहूति॥१०॥ॐ मनाहूतिप्रतिष्ठा॥ सरु आत्रति॥ मास
धनि॥ॐ सखात्रधि॥ तासां ताउर्ध्वतायने॥ स्वस्तिकासन उपविश्य॥ ॥ गतवृद्धिका सहितस
तावसग॥ इति निवर्तितके॥ आगन सहिततयावा॥ ब्राह्मणेन स्वस्तिवाचनं प००॥ ब्राह्मण
पूजा॥ गमनिकयुक्ता॥ घवक्षन्यादि॥ अन्नसंकल्प॥ दक्षिण॥ पूर्वोऽष्ट॥ आसीसाप००॥ अग्नि
गीर्वाण॥ सषड्दाम॥ अग्निवि सङ्गुत॥ वलि द्वाय॥ ब्रह्मालेखन अरुषक॥ वन्दनादि श्रीगीर्वा
ण॥ कलगङ्गा यवब्राह्मणाय॥ कोमारी दर्शन॥ घिनाय लित॥ ब्रह्मालेखन लय॥ ॥ इति वृत्ता
कनटविधिसमाप्तः॥ ॥ अथ वृत्तवन्धविधिर्निख्यते॥ नत्तावदुक्तमर्पदिवसान्नक्रमेण सर्व
सवाक्षय॥ अस्मदिवसवा षष्ठ्या वदुर्थदिनवा॥ पी० पूजा कुर्यात्॥ ॥ ब्रह्माङ्ककाय॥ इत्यङ्क
लितुं सियाय॥ प्राहित आदिन मालक॥ वापूजावने॥ मङ्गीनाथं॥ पूजायाय॥ विधिवत्कान

यत्॥ गुरु श्राग स्वाविधिवत् उवाच ककुत्वा वा फलवा लासा लाडा रु॥ स्वस्तिकासन उपविश्य॥
 नृमेवुनादि॥ अग्नि लाह नक्ष॥ स्वातनेन नक॥ मर्तं नृना तु वा स (मनन ल्वाय॥ गत वृन्दी काः
 वाय॥ तु १००॥ वन्दनादि, श्रागीर्वाद्य॥ सरा, श्रावति पुनिष्टा॥ मासधत्त, लासा लाडा, थं का यः
 न॥ स्वस्तिकासन उपविश्य॥ रुजने का नयत्॥ छूतिदस लया विधिः॥ ॥ सैतिकुङ्कीयाः
 विधिः॥ निगुरुलस्त्रानया यमालका॥ बुष्मा नृष्टकलगा॥ २॥ नागकुरुयद्यप्यकली॥ ग्रील
 श्री॥ वरिष्ठा नाडु नादि॥ बलिगदलगा॥ ग्रसको मानी वाय॥ कामविधिः॥ पलागदत्त्रा गला
 त्रिकापति॥ कृष्णतिना॥ यागपाता॥ मिवकिर्ति॥ मृजुषिपाता॥ स्वस्तु शुलि, गोप्यी शुलि॥ ॥ प्र
 वस्तु नृनिधाय॥ सिरुला तु माथवाला॥ कामाल, सिजुल ना ला य॥ धनदयक॥ ॥ यिना
 काय॥ अनितिकाय॥ रुलिनिसकिन॥ जिवा वाय्येन विधिवत् बुष्मा नृजने॥ पूर्वादि क्रमः
 न बुष्मा नृष्टकलगादि पूनर्दी॥ बुष्मा गुं द्या य॥ दृष्टिविधक॥ यैकली स॥ वाप्प, वन वा ला सा
 लासा लाडा रुय॥ नृमेवुनादि॥ अर्घपात्रजलना रू कर्त॥ स्वातनेन नक॥ मर्तं नृना तु वा स

गमननत्वाय॥ सुबुधाय॥ कुं का कुं का कुं का॥ कोठ॥ कुं दीर्घाय स्वा॥ वन्दनादि आशीर्वादा॥ नापि
 कथा लाहा पूजा॥ वन्दुम कुतहाय॥ सरु श्रानति॥ कुं मना रूतिप्रतिष्ठा॥ मासघटि॥ लासाः
 लावलि विसृष्टिका सने उपे विष्ठा॥ उपतनया वके॥ लिलसि पावके॥ श्रुति स्याय विधिः॥
 ॥ ननरुलिति द्वा विधिः॥ पुनः लासा लावक॥ दक्षिणैरा गस्वस्तिका सने सुत्वा॥ निर्मम्वुना
 दि॥ अर्घपाशादक नासूक्ष्मै॥ स्नानननका॥ मनीरुता उवास गमननत्वाय॥ स्वस्ति वावनेप
 ॥ ५॥ वम्रालंकार विधय॥ रुलिन द्वाय॥ कुं शानात्र मि॥ गतवृन्दिका नकार वायक॥ कुं श्रीरु
 पू॥ वन्दनादि आशीर्वादा॥ अनितिनत्वाय॥ कुं शिवानामासि॥ जाहासान गमल॥ कुं तव
 वाय॥ प्रासादपिठितिविधय॥ कुं प्रजापतनत्वा॥ कवादावतद्वय॥ कुं दीर्घाय स्वा॥ सरु श्रा
 नति॥ कुं मना रूति॥ प्रतिष्ठा॥ मासघटल॥ कुं स्वानयित्रग्था॥ लासा लावर्थनायन॥ रुनि
 निवजिनके॥ दधिनाय॥ श्रगममालकनयाव॥ रुनिनितका नाय॥ धनरु निनि द्वा विः

विश॥ ॥ ननागुत्तम अग्निकार्यं कृत्वा ॥ पृथराजनयावक ॥ ऊर्ध्ववक्त्रा ॥ ह्युति ॥ अद्यादि ॥ सूर्यार्घ्यः ॥ वाक् ॥ उपनयनाङ्गमो जीवन्धनं गमय ग्रायुजानकर्मदिकृत् गमति यद्गुनिमित्तार्थं
शास्त्रार्थार्थार्थानमः ॥ ॐ अकृष्ण ॥ न्यास ॥ ॐ कान्तदगकन अर्घ्यपात्रपूजा ॥ आत्मपूजार्क
॥ ॥ ॐ महां ॥ ॐ स्त्रावज्जकृष्ण उसी गमय वृत्तु कृत्तु पाप्मानं या स्मो ह्यसि यैव वयं द्विष्य
॥ ॥ ॐ मकृत्तु गमय वामरुक्म न धृत्वा ॥ ॐ गमय नैवेति ॥ गमय नैवेति ॥ ॐ नमावसु गम
यद्यो धिनी नानी पतय नमानमा रुवस्य रुक्म उगती पतय नमानमा रुद्रा या ननाधि
नक्षत्रा नां पतय नमानमः ॥ कृत्तु वलि ॥ ॐ जानवदसनि ॥ दुर्गवलि ॥ ॐ चतुर्नयनपावा
नः प्रिवत वसां वसा पावानः प्रिवती तत्रि ह्यस्य रुवि तसि स्वाहा ॥ दिगः प्रदिग आदि ॥ ग
विदिग उदि ॥ गमदि स्य स्वाहा ॥ दिग वलि ॥ आवा रुनादि ॥ धूप दीप ॥ आप स्नात्र ॥ नित्या
नन्दमयी गमकं निर्विकारं निनामयी ॥ यो माती नै पत्रं गमकं रुद्रवर्तनमा म्यदं ॥ नृगगन्ध
दि ॥ वलि विसर्जनी ॥ ॥ ॐ स्वज विष्टदा ॥ लाजा विष्टपनी ॥ ॥ गमय ग्रीम रुद्रन

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
वत्सलं भक्त्युत्तमं सत्सङ्गं सत्सङ्गं सत्सङ्गं सत्सङ्गं
२३ दशमस्कन्धः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

मं तल म्य दं ॥ पीन वू ॥ हुन प मं लिख नू ॥ हुं न जा सि ॥ घृता स नी ॥ हुं न का रु नी ॥ त्रि सू वृ त क
 लु व पू ने ॥ हुं रि न ध व र्त्तुं रु नि तीं स व हुं न ज न म् जी व न्ती दि न म् मी ल श्री जा न व दा स
 मा व रू ॥ नाम आ व रू जा न व दा ल क्ष्मी मन प ग म मि नी ॥ ल क्ष्मी पू ज न ॥ हुं म् रुं मन सा व र्थ द व स्य
 स वि दुः स व स्र ग्भ यि ग क्का ॥ वा ग ग्भ नी पू ज मा न रु स न का षु ग रु न ॥ त्वा व रु षि धु ति का षु ग
 रु न ॥ हुं ॐ न्म ना स्ता ग न हुं रि मा द्य म न्क ० सं मि धी म दि वा व य स्य को व य स्य न ० स रु स्य न स
 रु स्य न म् ॥ त्र ॥ न स प त र्दे रु न म द्वा सा त्र दा र्थ वि श्रा व सा स्व नि न या न म सी य श ॥ ॥ य रु न त्र
 या रु न ॥ हुं अ न व स्रु नि ता वृ ध अ तु षा स्रु नि ता धृ ध ॥ घृ त ग्भु ना म धृ ग्भु ना वि त्रा जा ता मे काः
 म धृ या त्र क्षी या मा ना श ॥ रु हु पू ज न ॥ ॥ त ना त्र ग्नि सा ध य न ॥ सूर्य क्रान् थ वा व्रा ष्म ण स्य
 ग रु पि वा त्र ग्नि प्र का ल य न्वा क्र ता मु या द्रु सि ता न य न ॥ हुं अग्नि मूर्धा दि व १ क क त्य ति
 १२ पि द्या अ य म् ॥ अ पा १ न नो हुं सि जि न्च ति ॥ अग्नि मा नी य ॥ हुं न का रु नी ॥ नि र्म वृ त ॥ हुं न
 धृ वा व रू धि ॥ व लि प्र दा नी ॥ हुं न जा सि ॥ की प ॥ आ रु ति ॥ क्वा दा न य स्वा रु ॥ १ ॥ घृ त वा रु
 नी ॥ य ज ४

कर्त॥ कुं नता नृपा टनी आसन पूर्वक॥ कुं अ॥ ग्यदाय नृ दमा सनी ॥ कुं यरुर्वदाय नृ दमा स
 नं ॥ कुं सामवदाय नृ दमा सनी ॥ कुं अथर्ववेदाय नृ दमा सनी ॥ पूर्वम॥ ग्यदी स्वापनी ॥ कुं
 मिमील पुना किनं यद्रुस्यदवमृत्तु ॥ हाता नृ नत धातनी ॥ दक्षि॥ ययर्वदि स्वापनी ॥ कुं
 नृषत्वा यत्वा वायव सुदवाव ॥ सविता सप्राप्य यतु ॥ गृह नमाय कर्मदा ॥ आप्याय धूमः
 प्या ॥ नृदाय तार्य प्रजावती नृमीवा नृयखा मावस्तन ॥ गृह नमाय ग ॥ साधु वा नृस्मि
 न॥ गमय नृ स्या नव जी र्थ जमान स्य प्रग्न्यादि ॥ पश्चिम सामवेदी स्वापनी ॥ कुं नृ नृ आमादि
 वीतय नृ सना रुव्यदान यनि हाता ससि वरिषि ॥ उरु नृ अथर्ववेदी स्वापनी ॥ कुं गनादः
 वीरुय नृपा रुव कुपी नृम ॥ गं या नृ रिग्रव नृ न ॥ ॥ पुन ॥ पूजनी ॥ कुं अ॥ ग्यदाय नृ मि
 गम ग्राय साम देवताय गमय ग्री वृन्द सनम ॥ कुं ययर्वदाय नृ गदा ज॥ गम ग्रावक्र देवता
 रुद्र पुन स ॥ कुं सामवदाय का ग्यप॥ गम ग्राय नृ प्रवेवता यतु गती वृन्द स ॥ कुं अथ
 र्ववेदाय वेदान स्य॥ गम ग्रा नृ नृ देवताय नृ नृ पुन स ॥ ॥ कुं नृदाय नम ॥ कुं अ

४ न वि

मयश॥ कुंयमायश॥ कुंनेअसायश॥ कुंवन्क्षयश॥ कुंवायवश॥ कुंवनायश॥ कुं॥ श्रीमनायश॥ कुं
 श्रनकायश॥ कुंवक्र॥ (६१॥ ॥ इति पूजनं ॥ ॥ द्विसमिधहार्म॥ ॥ प्रकं कुं कान्तवत्वादा॥ ॥ प्रकं हृष्टी
 रुद्रयात्॥ कुं प्रषादुदवप्रदि॥ (मन्त्र सर्वोद्भवात् ॥ सउगर्हभक्त॥ ॥ सूक्तान्तसजनीषामान
 प्रत्यंजनातिष्ठतिसर्वनामुखी॥ अग्निर्सेमुखीकनर्दी॥ वक्रासनी॥ प्रदीनासनी॥ प्रहवनश्रामा
 सनी॥ ॥ इति वलासनी॥ ॥ कुं हिनक्षगर्ह॥ वक्रासनी॥ कुं विष्णुननाट॥ प्रदीनासनी॥ कुं श्रामासनी॥
 कुंदवस्यत्वा॥ अत्युददी॥ प्रदीतप्रनर्पदी॥ कुंप्रत्युष्ट० नक्षः प्रत्युक्ताश्रान्तयानिस्फु० नक्षानि
 स्फुक्ताश्रान्तपः॥ अतिमिनासिसपत्नदिद्वाजिनेत्वाबाउधायसमाक्षि॥ कुं (मन्त्र सर्वोद्भवात् ॥ कुं
 श्रामादिष्ठति॥ ॥ काका॥ (मन्त्र कनप्रदीतप्रनर्पदी॥ वक्रापूजनी॥ वक्रान्यास॥ कुंवक्र॥ (६१॥ कुंप्रदीना
 यश॥ कुंवजाधिपनयश॥ सर्वस्यादवस्था॥ कुंवक्रयहानी॥ प्रदीतपूजदी॥ कुं विष्णुवश॥ कुंप्र
 दीनायश॥ कुं श्रामाश॥ कुंवन्क्षयश॥ कुं अपीपनयश॥ कुंसर्वस्याश॥ कुं ॥ इति विष्णुर्विवश॥ ॥ इति
 वलासनपूजा॥ ॥ दक्षि॥ (६१॥ वक्रासपनी॥ कुं श्रामावक्रावक्र॥ (६१॥ वक्रावक्रसीजायनीमानाश्रुनाजः

नमः गुरुभ्यो नमः शिवाय नमः ॥ अथ ज्ञानाद्यन्तर्बन्धनानां सः सफिः पुनर्न्याय्याणि
स्मृतं ॥ अथः सरुयाय वास्य यजमानस्य वीना ज्ञानादिकामनिका मनःपङ्क्त्या वर्षतु रुतवशा
नडावधयः पयैर्नायागदमानः कल्याणी ॥ उरुगप्रदीतस्तुपनी ॥ ॐ विष्णुनामसि ॥ ॥ पुन
॥ पूर्ववत्पूजनी ॥ ॥ ॐ वक्र (होरादि) ॥ ॐ वक्रयज्ञनी ॥ ॐ विष्णुनामसि ॥ ॥ निसिना सनपूज
॥ ॐ नमस्तु नीलग्रीवाय सरुसा कायमादध ॥ ॥ अथ यत्र सत्त्वा नादक रसाक रन्मः ॥ ॐ
कमानादितुत्रा तुवदूनी सदावृधः सखाः कया सविष्णुयावता ॥ क (गनपतिस्तुतही ॥ यथा २
विधिमर्तु एकलम्बवनी ॥ ॥ गमयतीत्यासः ॥ दानार्चनी ॥ ॐ नत्वा यामि ॥ १२ ॥ वक्रा पूजनी ॥
ॐ वक्र (होरा ॥ ॐ प्रजापतिमूर्त्यय ॥ ॥ दमा सनी नमः ॥ पृथी ॥ ध्वनी ॥ ॐ पीनी पीनी वतुर्वादी
वक्रा हीवतु नाननी ॥ हीसयानी ववित्रा हीदधु क गृह मधुर्ल ॥ ॐ वक्र (होरा) न पृथी ॥ विन
॥ य ॥ ॐ प्रजापतय नमः ॥ वध स नमः ॥ सृतेष्टु य ॥ ॐ वक्र (होरा) ॐ क म ला सनाय ॥ ॐ
दिनस्य गार्हाय ॥ ॐ विधम ॥ ॐ वक्रा हीधियतय ॥ ॐ अत्रुयानय ॥ ॐ सृष्टि तूपाय ॥ विग

धिपतयश॥ ॐ पतमसि नश॥ ॐ मुखये श॥ वद॥ ॐ बुध्न हस्यन॥ ॐ प्रजापत॥ ॐ बुध्न हस्यन॥ ॐ
श्रवर्कवाक्का॥ ॥ ॐ गिवा नामा गि॥ ॐ किन ह गद्ग॥ ॐ उरुविश्रा॥ ॐ शाना रुद्रा इकनवा
जकुविग्यना दवा सा श्रपतिता सउलिहः॥ दिवासा यथा सदमृदुध श्रसन्नप्रायवात्रकिता
नादियदिव॥ ॐ धमदुदमिनि न्द्रा बुध्न दवा वरुस्यति॥ सवतसा विग्यदवा प्रावकुः॥
रा॥ ॐ स्वस्तिन न्द्रा॥ ॐ रुद्रवददकि दाना॥ ॐ नमः स्वस्तिनः स्वपतिन्यग्यवानमानमानमास्वा
मवर्द्रायवनमः सर्वा मवपगुपनयवनमानमः॥ ॐ सफमषय॥ ॐ रुद्रस्यन॥ श्रवा
दनादि॥ श्रवकलगा पूजा॥ ॐ धनाय श॥ ॐ यशः॥ ॐ धनाय श॥ ॐ न्द्र देविषूवि॥ ॐ सामा
यश॥ ॐ न्द्रावनी॥ ॐ श्रवना॥ ॐ धवगुती॥ ॐ अनिलाय श॥ ॐ विश्वान्की॥ ॐ ननलाय श॥
ॐ दिवावा॥ ॐ प्रसूषाय श॥ ॐ पुनद्विषू॥ ॐ प्रलसाय श॥ ॐ विश्वान्ता टमसि॥ ॐ यकाय श॥
ॐ श्रमि श्रवा॥ ॐ यकाय श॥ ॐ प्रहस्यदु॥ ॐ श्रियेश॥ ॐ श्रीग्यन॥ ॐ लक्ष्मी॥ ॐ श्रीमते

[illegible]

अवधाति मं॥ ॐ तन्वा दस्म मृती ष हं व सामा नान म न्य सः॥ अहि वत्स न्न स्य स न प्रु स्थ न व
 ॐ नृ गी र्ति हं वाम ह॥ पद्माला ग्री क न दी॥ अ व प्र त प्य दी॥ ॐ गु ता त्र मि नु म वि ना न मि ठ
 ॐ ह वे ह वे स ह व ॐ स न मि तुं क या मि ण कं पू नू क न मि नु ॐ स हि ना म घ वा क खि नुः॥ ॐ
 द व स्य त्वा॥ अ त्पू क दी॥ ॐ ॐ व त्वा कृ ति॥ आ का ला उ न॥ ॐ स वि नु स्त्वां पु न व उ त्पू ना म्य
 कि ड ल प वि णु द सूर्य न नि मि हिः॥ आ क मू न्न व न संप्र व न॥ ॐ प वि णु ष्ठा॥ आ क प वि णु मि धा
 य॥ आ का व क दी॥ आ र्थ पा प ह नं द ष्ठा आ र्थ पा प ह नं प र्ण॥ आ र्थ स न ग द्वा पी तं सर्व मा कृ प ति षि
 ती॥ नू तः ॐ वां गृ हि त्वा स र्व व त्सं स्का न॥ ॐ द वी ना यो॥ ॐ य म्मा ॐ नु॥ ॐ स वि नु र्वेः॥ ॐ दे वा य
 क र्मा र्दी॥ ॐ कृ ष्ण सार व न षा ग न य त्वा रु षं प्रा का मि व दि न सि वे र्हि य त्वा र्ण प्रा का मि व हि नः
 सिं ग्ग र्ग्य त्वा रु षं प्रा का मि॥ कृ तुं नि प द क दी कृ त्वा॥ ॐ अ दि से नू न न म सि वि कृ मु पा सृ ह्म षः

रु

[illegible]

ॐ॥ त्वत्तु स्वाहा त्वत्तु त्रीपाय स्वाहा त्वत्तु पुरतूपाय स्वाहा॥ विष्णुव स्वाहा विष्णुव गिपि विष्ठा य स्वा
हा॥ नामक नदी॥ ॐ बुधाय स्वाहा॥ निष्कुमनी॥ ॐ याः रुतिनीति॥ रुत प्रासनी॥ ॐ अन्नपन॥ अन्नप्रास
नी॥ ॥ ॐ मूर्धनदीवा अन्नति पृथिव्या वेग्नाननमृतः॥ अजानमग्नि॥ कवि० संम्राजनयनदवाः स्वाः
हा॥ ब्रुहाक नदी॥ ॐ रुद्रं क॥ रुद्रिः॥ गृध्यामदेवाः रुद्रं प॥ अधमा करिष्य ऊग्राः॥ स्थिनेनी॥ जेसुधुः
वा॥ संसक्तं रुद्रिष्यममदिदवादिनयदायः स्वाहा॥ क॥ रुद्रं रुद्रं॥ ॐ य॥ धर्मावावकत्वादीमावर्द
मिजनजनत्य॥ बुधनाऊन्यास्वा॥ गृध्याय स्वायवात्रधायवापियादवा नीदक्षिधमयेदगु
निरुह्यासमयममकामः समुध्तामदमादानमपुस्वाहा॥ वनवंधनी॥ ॐ अकृषू॥ सताः
वर्तनी॥ ॐ धीवर्क ऊऊम॥ पत्नीसीया॥ ॐ कादाकादात्या॥ रुमदायाग्रा॥ ॐ वृत्तनदीः
कामाप्रानिदीकयाप्रादिदक्षि॥ दक्षिधग्रामाप्राग्रदमासत्यमापान॥ काकाप्रदानी॥ ॐ
सफन॥ अतसमिधः सफडि॥ सफनिषय॥ सफधात्वायऊनि॥ सफधानीनापुदस्यपुननः
स्वाहा॥ श्रुतिश्रुतिदगक्रिया॥ ॥ नगानिध्वनी॥ मषातूरपनिद्याफगकिरुसीदगासन॥

कृतसुखारुत्रैवकुं प्रहृलैरुत्कृष्टनद्यतिं॥सफवर्तु रुवजिह्वाः श्रुवारिर्दक्षिः (वक्रः॥ स्वाहापत्नी
 स्मितावामः आगवुग्मनिकानक॥ अग्नयध्वानपूर्यन्मया॥॥ अष्टा रुगसमितघृतेबोधयनानिधि
 म॥ आस्मिन्नुवाङ्महातन॥ कुंतलवान्निस्तदादित्येऽतदायुस्तद्वन्दुमान्दवशुक्रं नद्रुक्कानाः
 पेः सप्रजापतिः॥ सर्वनिमषायस्त्रिं विद्युतः प्रवृषादधि॥ तेनमूर्धनतिर्य्यवं नमः (ध्वपत्रिजगुरु
 न॥ नतस्यपुतिमात्रस्त्रियस्यनाममहद्यसः॥ किंसीदित्येषायस्यान्नयानः स्वस्वस्वाहा॥ वाङ्म
 समिधस्तमः॥ अर्कं कुंकानदस्वाहा॥ अर्कंरुषीपुदीननिधाय॥ तिस्रवीर्य्यकृ (गनवृष्मापृष्ण॥॥
 कुंमनः प्रजापतयस्वाहा॥ रुंदमनः प्रजापतयस्यागः॥ कुंरुः स्वाहा॥ रुंदरुवैः त्यागः॥ कुंरुव
 : स्वाहा॥ रुंदरुवस्यागः॥ कुंस्वः स्वाहा॥ रुंदस्वः त्यागः॥ कुंरुर्गुवः स्वः स्वाहा॥ रुंदरुर्गुवः स्व
 : त्यागः॥॥ कुंअस्मिन्वधूना नक्षत्रावधूना नक्षत्रादित्यास्त्वगसिप्रतित्वा नितिर्विदुः॥ अदि
 त्सिबानस्य त्यागवासिपृथुवृधः पुतित्वादिद्यास्त्वगवदुः॥ तिस्रवीर्य्यकृत्वा नवद्विनिवातम
 लवीर्य्य॥ कुं रुद्रस्यवक्रासिबोजसास्त्वयार्यवाङ्मसन्॥ वाङ्मसन्प्रसवेमानत्रंमर्दमदिः

तिं नाम ववसा क नाम रु॥ यस्यामिदं विश्वं तु वनमा विवर्गनम्यां नादवः सविता धर्मः शविषतु॥
उपयमनक (ग) न वाम रु सुवन्धनी॥ पूजनी॥ ॐ ॐ शुभाय श॥ ॐ वज्र रु साय श॥ ॐ नेत्रावताः
सनायनम॥ ॐ सर्वथा धवस्थानम॥ ॥ नना वदत्रानयतु॥ श्रवम्या॥ यरुसिंहासनस्या रु
नरागावदपश्चिमा रुि सुखं सुखा॥ गुत्रुध पूर्व सुखं सुखा॥ ॥ नना गुत्रु पूजनी॥ श्रुयादि॥
सूर्याधि॥ ॐ गुत्रु सुखं सुखा॥ सुननम॥ पूषी॥ ॥ वरं पादा धरु साधं वन्दन पूषी॥ यद्वा
पवीत॥ पूषा धूप दीप॥ वद कर्म निमित्तार्थं गुत्रु सुखं सुखा॥ गुत्रुग धूप दीप यद्वा प
वीत पूजा विधे न सर्वं पति पूषु मस्तु॥ रु सुप्रमानम सुलं कर्मा न॥ नासा कनकायमनु॥
॥ ॐ मधु केतु रु मकन रुति नासि व सुन्धना॥ नना धाष समना थय सिंवा मिग न्धवा निधाः॥
सगन्ध वाति नो रु मोल पनी॥ ॥ अधिनायु धि वी व व गन्ध मातृ ग ल पिना॥ पूर्व उन्म रु नीया
पीद रु नी सु रु नी रु वतु॥ ॐ रु उन्म नि पा पा नी॥ ग्रहि उन्मी न नेष्व॥ विष्टि नी कर्म सुगु व उ

नमः कनकप्रव॥ कनकपुष्पाञ्जलिं कृत्वा मय नू कनकवनसा॥ नखममलादुल्लिख्य तत्र
 विविक्तयत्॥ प्रेषीव विविधकारं जायत विविधैकल॥ तस्यैव कर्मनांदवत्र कनकगिवस
 ब्रह्मा॥ पीतद्वे (ह्रुन) विविधैर्नमः कनकनयनू॥ कवावाय॥ पिथून्त्यादि॥ दथजयादि॥ इ
 थसथा जानादि॥ म (ध) व्रीदवश॥ चन्दनसिद्धनयस्य पवीतवाङ्मुदन
 वाजयलपूगुरुत्स्व १०॥ नान्मूलादिकं निधाय॥ द ४ ददि धा॥ न
 मस्तुलनिधाय॥ पूजनी॥ ॐ ह्रुन्त्यायनम॥ ॐ अग्नौ॥ ॐ यमायनम॥
 ॐ नेमत्यायश॥ ॐ वरुणायश॥ ॐ वायवश॥ ॐ कवेत्रायश॥ ॐ मेनायश॥
 ॐ ब्रह्म (ध) श॥ ॐ विष्णुवश॥ ॐ जयायश॥ ॐ विजयायश॥ ॐ अपराजिता
 येश॥ ॐ अजिनायेश॥ ॐ ऊर्ध्वायेश॥ ॐ सुमन्येश॥ ॐ भारुन्येश॥ ॐ शक
 श॥ ॐ सथा जानायश॥ ॐ वामदेवायश॥ ॐ अध्यानायश॥ ॐ श्रीगणेशायश॥ ॐ नेत्रायश॥



ॐ बुधमस्तु लाश ॥ ॐ विष्णुमस्तु लायश ॥ ॐ ब्रह्ममस्तु लायनम ॥ ॐ अग्निमस्तु लायश ॥ ॐ इन्द्रमस्तु
यनमः ॥ धूप दीप जाप स्नान ॥ मस्तु लायनमस्तु सत्यं सर्वं नत्वा विपायवरुर्गुवः स्वयं काशाय
मस्तु लायनमास्तु ॥ नृग न्नादि ॥ दक्षिणा ॥ पृष्ठा अर्लि वधा वतुप ० ति मक्तुः ॥ ॥
ॐ बुधमस्तु यत्नधीकानैरुदिभत्तत्तपाद्भू विधनैवेव शुद्धिपालयामिमयापुरु ॥ नृ
नपशुपिष्टुस्युददिभस्तनरुकिर्क विधनैवेव शुद्धिपालयामिमयापुरु ॥ नृ
यादवनाशलेप्रयत्नन ॥ गगममयायूनदरु इवक्राधकवर्नैवेव स्वयं यवेव
दिभ ॥ गील ॥ गेव नथास्तनपालयामिनवास्तु ॥ ० ति पथिलानमस्तुः ॥ ग्रावार्थ
नप ० ति ॥ बुधवर्मागमन ॥ वदू ० ति ॥ ॐ बुधवर्मागममि ॥ पुनरा ॥ वायं
नप ० ति ॥ ॐ बुधवर्मासाति ॥ वदू ० ति ॥ ॐ बुधवर्मासाति ॥ ॥ मेदुलविसर्जनैक
त्वा ॥ मस्तु लसिन्तवीजदलादिर्कशुद्धिनिवर्तन ॥ ० ति मस्तु लार्चनी ॥ नगावदः

[illegible]

किरुडधर्तनरु॥ मखलिना० नीयाया॥ वाक्कपुर्ववु॥ नमक॥ गग्रायनमकनामगमर्माहः
रुवुक्रवय्यसानि॥ ॥ पुनर्गयित्रीमनुनऊयलीथि॥ विजा॥ कुं वक्रयहानी॥ कुं विधानना
टमसि॥ कुं नमः॥ गनुवायव॥ इति पूजनी॥ गयत्रीऊपा॥ मूऊवासीदद्यात्॥ कुं वसा॥ १५॥ वि
व्रमसि॥ पुवास्यासा॥ १॥ पतिवीननामागनु॥ मउ॥ शुर्वांरुवतिजायमान॥ नैधीनास॥ के
वय॥ ३३॥ नयेनिसा॥ ॥ मनसाऊवयनः॥ यद्वापवीनैनद्यात्॥ न्यास॥ गयत्रीमनु॥ ६॥ अ
वायनऊवाय॥ ॥ कुं यद्वापवीनैपत्रमपवित्रं प्रजापतयत्सकृत् पूजकात्॥ ननत्वापुतिम्
अमिषुषवुक्र॥ ॥ ववर्चसाय॥ वद॥ धधन॥ मनु॥ १॥ कुं आयुष्यमर्कप्रतिमैवगुगुयह्याप
वीनैवलमकुनक्र॥ ॥ गुरु॥ धसिखावन्धनी॥ कुं वक्रयहानी॥ ग॥ मूलिकीतिवक॥ कुं य
दद्यक॥ ॥ गुरु॥ ॥ ॥ द॥ ॥ जिनेदद्यात्मकु॥ ॥ कुं मित्रस्यवक्रवर्तवैवलियसकजायग॥ ०
सुविनैरुपस्य॥ ॥ आनारुमस्मिन्ववर्तवैविनि॥ १॥ पतिनैवाजिने॥ ॥ वैरि॥ ॥ किंयुर्कदद्यान्म

कुः॥ ॐ पति धस्येयसा धस्येदीर्घायुत्वाय इदं दक्षिण गिम् ॥ गनीव जीवामिभनदः पुनूवीत्र
यस्यापरिसंख्यपुष्पा ॥ आयुष्मतीर्दं पति धस्यवासः ॥ ॐ यससा माद्यावापुचिवियससंसा
प्रवृत्तस्यति ॥ यः ॥ मरुगयमाविसद्यसामाप्रतिपद्यमी ॥ ॥ उरुनियेदद्यास्मन्तु ॥ ॐ
प्रवासवासाः पतिपीनमागन्तु ॥ सउद्युर्मांरुवमिआयमानः ननधीनासकवयउत्त्वय
निसा ॥ धामनसाधवयन्तु ॥ ॥ यागयेर्लीदद्यास्मन्तु ॥ ॐ ध्यायाया ॥ ॥ सुवस्मन्वाज
वाजकृत्वामर्क ॥ सदायन्तु सुनय ॥ पलागदलुं दद्यात्सु ॥ ॥ वदुष्टादलुगुदहाम
न्तु ॥ ॐ भामदलुः पतापतद्धकायसा धिरुम्पी ॥ नमदीपुनराददन्नायुषवृक्षहोवृक्ष
ववसाय ॥ गीरानिकाषपी ॥ न्दद्यान्मन्तु ॥ ॐ रुद्रानान्नगिनाफुनारुद्रानानि ॥ गुरुगुरु
दानधनम् ॥ रुद्राउत्तयगस्तय ॥ ॥ स्वर्गुल्लिपोपा ॥ ॐ रुद्रादद्यास्मन्तु ॥ ॥ ॐ किनध्व

नूपाउषसावित्रागडराविन्दुउदि ०० सूर्यस्य ॥ नारादंनंवरुदमिगुगहिनदग्धशानामिः
किदिनिवतिरुसिवरु(मसि) ॥ मित्रकसिनस्यकमनु॥ ॐ गभवउपावमावनेमकीयह
स्यनफ्रजा॥ इरुककुदिनध्वया॥ तुखातावियमनु॥ ॐ दीर्घायस्वाया ॥ उत्तपानुद
यात्मनुः॥ ॐ स्वसिन ०००॥ कर्मागुतिदद्यात् ॥ ॐ पवित्रेष्ट ॥ ॥ ननानावाय्यधवव
हस्तुउदकदद्यात् ॥ वदूय ०००॥ उदकहान ॥ ॐ आपाहिष्टामयागुवस्तानुर्जुदधगुनः
महवनायवदसे ॥ पथमस्तान ॥ ॐ यार्थशिवतामावसे ॥ द्वितीय ॥ ॐ तस्मागुवदुना ॥ तृतीय
॥ वदूशिवतिशिवयत् ॥ वदूनाहस्ताप्यजिलगहात्वाप ०००॥ ॐ उदूतजोतवदसदववह
निकेतवः ००॥ विष्टयेसूर्य ॥ ॐ विगुदवानामूदगमदनीकवदूमिष्टुस्यववृष्टा ००॥ आ
प्रायावाप्यधिवीगुनविद ००॥ सूर्यआत्माजगतकुष ००॥ ॐ तत्रदूदवहितपूर्वस्वावुकुम्ब
वत् ॥ न ००॥ नगवद ००॥ त ००॥ ग्यामगवद ००॥ तप्रवुवामगवद ००॥ नमदीना ००॥ धाममेवद ००॥

ममन्तु॥ वृत्तिजलसमर्पणं॥ वदन्तु हिकास्त्रानेकाग्रयन्॥ कुं भूय काम॥ वन्दनलपनी॥
 कुं उग्रेश्वर॥ ॥ वदन्तु दयात्रयमस्तु॥ कुं मम वृत्तनेष्टदयैर्दधामि मम विरुमन्वि
 लैर्न भूस्तु॥ मम वाचं मे कमना श्रुष्ववदन्तु निस्वानि यन्तु कामम्॥ वदन्तु दक्षिण
 सी गृहीत्वानामस्तु॥ कानामासि॥ वदन्तु उवाच नदी॥ अमुकं मम अमुकं मम अमुकं
 रु॥ ॥ आवाय्य दाय ० ति॥ कस्य वृत्तव्यसि॥ वदन्तु ० ति॥ वृत्तस्य वृत्तं रुवन्ति॥ अ
 वाय्य दाय ० ति॥ वृत्तस्य वृत्तव्यसि॥ वदन्तु ० ति॥ रुवन्ति॥ आवाय्य दाय ० ति॥ अ
 नावाय्यसि॥ वदन्तु॥ रुवन्ति॥ आवाय्य दाय॥ अहमावाय्य सुवासि॥ वदन्तु॥ रुवन्ति॥ ॥ पुनः
 नावाय्य दाय वदन्तु दक्षिण दक्षिण गृहीत्व॥ वदन्तु सा स्यात्कामं कनकं गृहीत्व॥ आवाय्य
 दाय ० ति मन्तु॥ कुं प्रज्ञापयन्तु त्वापनि दधामि॥ पूर्वजलं दद्यात्॥ कुं दवाय त्वा मपि
 यनि दधामि॥ दक्षिण॥ कुं अहमावाय्य दाय ० ति दधामि॥ पश्चिम॥ कुं दवाय त्वा मपि

स्त्रीत्वापतिददामि॥ उत्तर॥ ॐ विष्णवे स्वस्त्वा दवस्य ४ पतिददामि॥ ऊर्ध्व॥ ॐ सर्वस्वस्त्वा रु
न्नेत्य ४ पतिददामि॥ अधः॥ ॐ नित्यं जलसमर्प्य दी॥ पश्चात् नून्ना वा र्थ दवदुक्तं गृहीत्वा नू
न्निमलुपैतामयत्न॥ ॐ पुनर्दिदपि गृह्णन्ति॥ पुनः यद्भूसिंहासनस्येदं किं (तस्मात्) गसि
त्वा॥ ॥ नन ४ पुजापतिदवनामानसं विष्णुवक्रा पुद्गीतवदला कपालार्चनं॥ ॐ वृक्रधे
नमः॥ ॐ पुद्गीतो यश॥ ॐ अ (य) दायश॥ ॐ ययव दायश॥ सामवे दायश॥ ॐ अथर्ववः
दायश॥ ॐ ॐ दायश॥ ॐ अग्नयश॥ ॐ यमायश॥ ॐ नेत्रायश॥ ॐ वनधायश॥
ॐ वायव नमः॥ ॐ कवगायश॥ ॐ ॐ गनायश॥ ॐ अकौनेयश॥ ॐ वृक्रधेनू॥ ॐ
विपैवायश॥ ॐ वृक्रधेनो॥ ॐ वदुष्यवायश॥ ॐ दवाग्नवश॥ ॐ दिग्गेश॥ ॐ वि
दिग्गेश॥ ॐ स्वर्गयश॥ ॐ मर्यायश॥ ॐ पानालायश॥ ॐ गेयश॥ ॐ स्कन्धायश॥ ॐ
सूर्यायश॥ ॥ वन्दायश॥ ॐ यागीयतायश॥ ॐ हृष्याश॥ ॐ अजयीयाश॥ ॐ सर्व

स्नानमः॥ ॐ हव स्वाश॥ ॐ गि हव स्वाश॥ ॥ तत्ता जे न्ना म क न र्वा ॥ ॐ स म्पु बा न य स्वाहा ॥
 ॐ न मा ह व स्वा॥ पि ता न्ना वि मा न न ॥ द द्दि (धे) पि त्वा ॥ स्व धा ॥ उप ग्ध नां ॥ ॐ ॐ न ॥ ॐ ॐ
 बी र्वा म क (धे) द्वा द न न्ना स्वाहा ॥ न्ना जे न्ना वि त्वा म व नी स्वां या वा प्ति वी न्ना व न्ना
 वा प्ति वी वि त्वा द व स्वा ॥ न्ना जे न्ना वि त्वा म व नी स्वां या वा प्ति वी न्ना व न्ना
 ॐ त्वा न्ना ध न ॥ ॐ द मि द्रा य स्वाहा ॥ प्रा क्ती स न्ना स्वाहा ॥ न नः ॥ य द्वा द म ॥ ॐ न्ना जे न्ना म
 स्वा ॥ ॐ द न्ना जे न्ना स्वाहा ॥ ॐ सा मा य ॥ ॐ द सा मा स्वाहा ॥ ॐ न्ना जे न्ना म स्वां स्वाहा ॥ ॐ दः
 म न्ति सा मा स्वाहा ॥ ॐ न्ना जे न्ना वि त्वा म व नी स्वां या वा प्ति वी न्ना व न्ना
 स्वा ॥ ॥ न नः स प्ति द्वा द म ॥ ॥ ॐ द्दि न्ना म य स्वाहा ॥ ॐ द्दि न्ना म य स्वाहा ॥ ॐ द्दि न्ना म य स्वाहा ॥ ॐ द्दि न्ना म य स्वाहा ॥
 का य स्वाहा ॥ ॐ द्दि न्ना म य स्वाहा ॥ ॐ द्दि न्ना म य स्वाहा ॥ ॐ द्दि न्ना म य स्वाहा ॥ ॐ द्दि न्ना म य स्वाहा ॥ ॐ द्दि न्ना म य स्वाहा ॥
 ॐ द्दि न्ना म य स्वाहा ॥ ॐ द्दि न्ना म य स्वाहा ॥ ॐ द्दि न्ना म य स्वाहा ॥ ॐ द्दि न्ना म य स्वाहा ॥ ॐ द्दि न्ना म य स्वाहा ॥ ॐ द्दि न्ना म य स्वाहा ॥
 ॐ द्दि न्ना म य स्वाहा ॥ ॐ द्दि न्ना म य स्वाहा ॥ ॐ द्दि न्ना म य स्वाहा ॥ ॐ द्दि न्ना म य स्वाहा ॥ ॐ द्दि न्ना म य स्वाहा ॥ ॐ द्दि न्ना म य स्वाहा ॥

स्वाहा॥ ॐ दमश्वा॥ ॐ घट्टनूपाय स्वाहा॥ ॐ देव॥ ॐ सफनन (मसमिध॥ घट्टि का
बुदनी॥ ॐ कजि का कनक॥ ॥ ॐ ननयसिखुनयु स्वाहा॥ ॐ देन (नसिखुन॥
ननयपशुगयका म॥ विद॥ ॐ ॐ रावती॥ ॐ पवित्रहावे॥ ॐ ॐ देविषुर्वि॥ ॥ ननावे
कादुति॥ ॐ अ (यदोय स्वाहा॥ ॐ दअ (यदाय स्वाहा॥ ॐ पुथि ये स्वाहा॥ ॐ देयुथि॥
ॐ ननय स्वाहा॥ ॐ देव (नय॥ ॐ वक्र (त स्वाहा॥ ॐ देवक्र (त॥ ॐ पुजापनय स्वा
हा॥ ॐ देयुजा॥ ॐ देवयः स्वाहा॥ ॐ देववयः॥ ॐ अषियः स्वाहा॥ ॐ देअषि॥ ॐ व
न्यायः स्वाहा॥ ॐ देवन्दा॥ ॐ ग्रदाय स्वाहा॥ ॐ देग्रदाय॥ ॐ मधये स्वाहा॥ ॐ दे
मधये॥ ॐ सदसस्यनय स्वाहा॥ ॐ देसा॥ ॐ ननमन स्वाहा॥ ॐ दमनून॥ ॐ यईव
काय स्वाहा॥ ॐ देय॥ ॐ नननि काय स्वाहा॥ ॐ देन॥ ॐ वायव स्वाहा॥ ॐ देवाय
वे॥ ॐ वक्र (त स्वाहा॥ ॐ देवक्र (त॥ ॐ पुजापनय स्वाहा॥ ॐ देयुजापनय॥ ॐ देवय

[illegible]

[illegible]

आभाकरवर्ध
3462
ASHA ARCHIVES



१ श्री वीरवृत्तसिंहसाह
संवत् ८५५ वसाख शुक्ल पुष्य दिवस संवत् ८७१ ॥
संवत् ८८० देस दुनावयु कार्तिक शुक्ल एकादशी
संवत् ८९८ मचतं सुखायो ज्येष्ठ शुद्ध दशमी
संवत् ९०३ नसा भाद्र शुक्ल १९ वसाख शुक्ल

स्वलाह

स्वास्तिकरुद्रकल
वेककादशका

कुंजपति दुर्गा वक्रा वदला कपालादि के सर्व स्व स्व मन्त्रे गति लाहर्ति रुद्रयात् ॥ दवान्
क्रमेण स्व स्व वदन रुद्रयात् ॥ कलश प्रणिष्ठा ॥ कुंज मनाहति ॥ दग्ध पाठने ॥ धेव नित्य पा
ननादि के रुद्रयात् ॥ स्व स्व मन्त्रे कुंजा ॥ नना सी रवाहर्ति रुद्रयात् ॥ १०५ ॥ कुंज सी रवा ता स रु
जानि यत्र दाने धिरे म्याम ॥ तेषां स रुद्रया जने वध नानि तन्मसि स्वाहा ॥ नना
वदत्या इने सा सने ॥ ननो वदय रू सिंहा सन स्य उरु रु गति ध्याय ॥ गता गुरु दग्ध
यत्रो मन्त्रे दान्या संक्रयात् ॥ आवा र्थ दान् वयात् ॥ वक्र च र्थ सि ॥ वद पठति ॥ वारं ॥
पुनरावा र्थ दान् वयात् ॥ ओपा साने ॥ वद वारं ॥ आवा र्थ कर्म कुरु ॥ वद वारं ॥ आवा
र्थ दान् वयात् ॥ मादि वा स्व प्रदि ॥ वद वारं ॥ आवा र्थ दान् ॥ वा र्थ यदु ॥ वद वारं ॥ आवा र्थ
दान् समिध माददि ॥ वद वारं ॥ आवा र्थ दान् ॥ नित्य स्नायी रुवा ॥ वद वारं ॥ आवा र्थ दान् ॥
त्रिसं ॥ (ध्या) पा सने कुरु ॥ वद वारं ॥ आवा र्थ दान् ॥ अग्नि पूजां कुरु ॥ वद वारं ॥ पुन

नावा र्यः ॥ ८॥ अग ॥ मधु मासं वरुं य ॥ वदुर्वाटं वु या त ॥ अग म्या ग म नं वरुं य ॥ वदुर्वाटं ॥
 गुनु गुनु वली कुरु ॥ वदुर्वाटं ॥ दधु धा नदी कुरु ॥ वदुर्वाटं ॥ वदया ठं कुरु ॥ वदुर्वाटं ॥ गुनु गु
 या त ॥ याव हा ड प द मासं ता व दु तं व न सि ॥ वदुर्वाटी ॥ गुना न ॥ अ यान दू के गु वरुं य ॥
 वदुर्वाटं ॥ आ वा र्या वु या ता ॥ उच्चा वना रु दी उच्चे वा र्कं व वरुं य ॥ वदुर्वाटं ॥ मास र्या दः
 या वरुं नी या ॥ वदुर्वाटं ॥ मिया मय नं वरुं य ॥ अग म नं वरुं य ॥ वदुर्वाटं ॥ अद ला पा
 दानं वरुं य ॥ वदुर्वाटं ॥ अ न वरुं नी याः ॥ वदुर्वाटं ॥ तता ग म यु गी प दानं ॥ यरु क ॥ अ
 रु न हा ॥ ग ॥ गुनुः पूर्वा हि मूर्ख स्त्रि त्वा ॥ वदुः प न्क्ति मा हि मूर्ख स्त्रि त्वा ॥ तता गुनु वदु सि
 त व मु ल ॥ का य ॥ गुनु र्या सं कृ त्वा ॥ वटा नं ग ॥ अ म न ॥ ॐ न स न मः ॥ पा दी गु घे याः ॥
 ॐ वि २ ॥ अ य याः ॥ ॐ २ ॥ आ नू नाः ॥ ॐ व २ ॥ गु घे ॥ ॐ २ ॥ वृ ष म याः ॥ ॐ २ ॥ क याः ॥
 ॐ रु २ ॥ ना री ॥ ॐ २ ॥ उ द न ॥ ॐ २ ॥ रु न या ॥ ॐ व २ ॥ रु द य ॥ ॐ २ ॥ रु २ ॥ रु २ ॥

कुं धाशाक (६६) ॥ कुं मशा मरवा ॥ कुं दिशा गद्यथा ॥ कुं धिन ॥ नासिकाया ॥ कुं धाशा ननुया ॥ कुं
जाशा कर्तुया ॥ कुं नशा नुम (६७) ॥ कुं प्रशा तलाठा ॥ कुं वाशा मूर्द्धि ॥ कुं दशा मर्द्धि सुकवृत् ॥
कुं या नूनम ॥ सिखाया ॥ कुं रुतुवः स्वः नमानमः ॥ सर्वा (गष) ॥ ॥ त्रिन त्वन ॥ कुं वृक्षय
नी ॥ सिगसि ॥ कुं विष्णु त्राटम ॥ रुदय ॥ कुं नमः सीरुवायव ॥ पादो ॥ पादन जित्रत्वी ॥ मि
त्रपादत्वी ॥ वदुत्तल गृहीत्वा ॥ गमयत्री प्रथम प्रथवना ॥ दक्षिण नासिका त्र (धुन न्नाष्टा
दीकृत्वा ॥ वाम नासिका त्र (धुन वरिर्क्षितयता ॥ ॥ प्रथव प्रथानी ॥ ॥ गमयत्री प्रथानी ॥ कुं
रुतुवः स्वः नस विरुव न ध्व ॥ पुन १ दिर्क्षितय सावित्री प्रथानी ॥ ॥ कुं रुतुवः स्वः रुग्ण
दवस्यधी मर्द्धि ॥ पुन १ रुनीय सत्र स्वती प्रथानी ॥ कुं रुतुवः स्वः धियायानः प्रथानी
मातु ॥ पुन गमयत्री प्रथानी ॥ गुरु दक्षिण ॥ न्वय वाक् (धन स्वसि वावर्तीय (० न ॥ ॥
आकृति ॥ गमयत्री मनुदा ॥ १० ॥ वेद ॥ कुं प्रथन दीक्षा नाशानि ॥ कुं नुषन गमयत्री रुग

ॐ तिमसामायवुनादपतनुं कुरुता राग ॐ तिमसामायवुनादपतनुं कुरुता राग ॐ तिमसा
मायवुनादुन्मानामानां संसा मार्यग ॐ तिमसामायवुनादस्माकासि शुक्रस्तु शुभो विविन
स्त्वा विविन नु स्यादा ॥ १ ॥ श्रवान त्वाया ॥ वदुला सा ला डाय रुक् लु द्यक ॥ ॐ पु दक्षि दद वि ॥ व
दु दक्षि दला गय रु सि हा सन स्मि त्वा ॥ १ ॥ न त्वे न सा ध न ॥ म दा वा ह ति म नु श्रु ति ॥ १ ॥
ॐ म ना श्रु ति ॥ पु ति क्ता ॥ ॥ त ना व दू श्रु ति क र्म क र्मा ॥ उ द के ना ग्नी पु रु षा वी ॥ प रु का
रु रु क या न ॥ ॐ श्रु न य स्रु वः शु शु वः स मा क रु स्ता दा ॥ ॐ य थ त्व म न स्रु वः स्रु वा
भ्र सि स्ता दा ॥ ॐ व व मा र् स्रु वः सो व स मा क रु स्ता दा ॥ ॐ य थ त्व व नी य रु स्य नि धि
पा न्र सि स्ता दा ॥ ॐ व व म रु म न्वा नी व द स्य नि धि पा रु या स ० स्ता दा ॥ ॐ न्नि न्पु रु षा ॥
न न ॥ उ क्ता य स मि ध क र्मु ट्वा य ० त्म १ ॥ ॐ न्नि न स मि ध म रु अ र्क व रु न जा न
व रु स य थ त्व म न स मि ध स मि ध सि ॥ १ ॥ व व म रु मा र्वा म ध या व र्व सा प्र उ या य

[illegible]

प्रातिगुह्यमासत्यमाप्यत॥ आत्माशीर्वादा॥ ॥ वदरिक्काकनदी॥ मानरुवतुर्किक्कीमदरि॥
कुंस्वसिन्नीप्रतिवयनं॥ मागुरिक्कांदद्यानौ॥ मामेनरिक्कादूनागुआकिवअक्रियायद्वधु
नकाडावद्वयानअथयमात्त॥ सकलसेनरिक्कादूय॥ गुन्ववज्जदरिक्कानिवदनी॥
आवाग्धवृयान॥ सम्यागयनैवर्ज्य॥ वद्वर्दी॥ त्रिनातुज्जकातलवनीरुजनमाद
भाजनैकवीर्या॥ वद्वर्दी॥ यावद्वापुपदमासनाववर्ततिष्ठ॥ वद्वर्दी॥ एतत्तुज्ज
ववर्तकातयतुवद्व॥ श्रीकृति॥ ७४॥ कुंयथमावावकल्या॥ नीमावदामिऊनेत्य
ःवृक्काताऊन्यास्या॥ ७५॥ द्रायवाय्यायवस्वायवानक्षयवपिषादवानीदक्षिणयेदा
तुत्रिक्कात्मासमर्थमकामः समृद्धतामपमादानमनुस्वीकृ॥ आसूर्यनृपूरुलडा
वतानागद्यदग्नमरुडानिधवलससैध्वाकालधाय॥ ॥ आसूर्यनृपूरुलनाअ
वतुज्जयनाक्तसैध्वायावर्क॥ ॥ नताज्जस्तिकर्मपूर्ववतुक्क्यान्॥ ॥ गम्यावानक्ष

[illegible]

ॐ श्रीः भगवते नमः ॥ महाबाहोति ह्यनृषा वृत्रघ्नं हृदयान् ॥ ॐ सर्वं वाचं प० न ॥ प्रायश्चित्त काम ॥ रु
ः स्वाहा ॥ ॐ नमः ॥ स्वाहा ॥ उपयमनक ॥ गन उपस्यर्गनी ॥ उपस्यर्गनी ॥ ॐ रुद्रुवः स्वः स्वाहा
॥ उपस्यर्गनी ॥ ॐ त्वं ना ॥ गन ॥ ॐ नृ नृया ॥ गन ॥ ॐ सनत्वेना ॥ ॐ उतगते ॥ ॐ उदुहमी ॥
उपयमनक गम ॥ ग ॥ वपुः पादिनाम ॥ ॐ वपुः पादि नृ नृय स्वाहा पादिना विश्ववदस
स्वाहा ॥ ॐ यदुपादिना विश्ववस स्वाहा ॥ सर्वपादिस्विष्टकृतये स्वाहा ॥ ॐ नृनातिनि
कुरुहामि स्वाहा ॥ नृनाहृतं घनाहृतं तत्सर्वं क्रियते मम ॥ सर्वदमेकल्ययदिविदि
नतिदुतासनस्वाहा ॥ ॐ वेग्य नरायविष्णु रुद्र नकायधीमदित न्मावद्विप्रयादयाः
नृस्वाहा ॥ वद्विगमय ग्री ॥ ॐ धवकृतस्येन सावयजनमसि स्वाहा ॥ ॐ मन्त्रयकृतस्येन
सावयजनमसि स्वाहा ॥ ॐ पितृकृतस्येन सावयजनमसि स्वाहा ॥ ॐ शस्त्रकृतस्येनः
सावयजनमसि स्वाहा ॥ ॐ ब्राह्मणमना विश्वांग्यकाग्रयवा रुमना विश्वांस्तस्य सर्वस्ये
न सावयजनमसि स्वाहा ॥ ॐ रुद्र नृय वपुधिवी वमरुन स्वाहा नृवावायव स्वाहा वा

11

कत्रिद्यायवमरुतस्वाहा॥स्वःसूर्यायवदिश्ववमरुतवस्वाहा॥ॐरुर्तुवःस्वःवन्युमसव
 तुमसवनकपुत्यश्चदिग्ग्यप्रजापतयवमरुतवस्वाहा॥ॐस्वस्तिनः॥ॐपयःपृ
 थिव्या॥ॐविष्णुनराठमसि॥ॐनृगिर्द्वेवता॥ॐघोःगमनि॥॥ब्राह्मदादिक्रिस्तदानी॥वा
 वनी॥वलिहनेही॥गंश्रवचनप्रासनं॥ॐकामकामदूधधूमिग्रायवग्रहयव॥ॐ
 न्यायाग्नित्यापृष्णप्रजात्यःशुषधीत्यः॥पृथीतारिषक॥॥ॐस्मिन्निग्यानन्नापडाः
 वधयःसन्तुष्टमिन्द्रियास्तस्मैसन्तुयास्तौधृष्टियश्चवयन्दिष्य॥पवित्रमावर्त॥
 तन्नापृष्टमिन्द्रियास्तौ॥वाक्॥पृथ्वीवर्त॥ॐधवागमनुविदागमर्तुवित्यागमनुमिन॥
 मनसस्पतः॥मैरुवयहृष्टंस्वाहा॥वाक्॥स्वाहा॥॥ॐआप्यायस्व॥ॐरिसुस्यत्वा॥म
 उल॥पद्मयानिग्वदुर्गृहिस्तानतिवासितं॥सुप्तिकर्त्तुमकानिर्त्यनस्मैश्रीवृक्षः
 ननमः॥आसंशमसर्वपाथिता॥आसंसा॥यथायवस्य॥आगीर्वादा॥अग्निः॥आगीर्वादा॥
 ॐवस्यकर्मागृहृदुर्विक्रमः॥नस्मैधवान्नेधिप्रवतयववृक्षदत्यनि॥॥

यजमानसं॥ॐ दीर्घाय स्वाय॥ ॥ बुद्धाविसर्जनी॥ ॐ उतिष्ठ बुद्धास्तान् दधयन्तस्मिन् ॥ उ
पपुयन्तस्मिन् ॥ सुजानवः ॐ नृप्राशुरुवासवा॥ प्रदीनविसर्जनी॥ ॐ ॐ दीविषूवि॥ बुद्धा
भावनी॥ ॐ के स्वाविमृच्छन्ति स्वाविमृच्छन्ति कस्मे स्वाविमृच्छन्ति नस्मे स्वाविमृच्छन्ति पाषा
यनक्षसांता॥ गीति॥ सैवनी॥ ॐ श्रपाश्रयात्वाअष ० तसेन समसृक्ष्मदि॥ ये ये स्वान्न
आगतनीमास ० सृजवर्षसाप्रजयावधनेनव॥ ॥ अक्षपातनवदिक्कर्मवक्ष्म्यान्
॥ ॐ सैवर्हितज्ञा ० रुविषाद्यननसमादिष्वेव सृष्टिः सम्मरुद्धिः समिन्धाविग्येव
रुतज्ञान्दियन्नरोगकुरुयस्वाहा॥ ॥ सप्रनर्पदी॥ ॐ ननूपाश्र ॥ नसिनत्त्वमपा
श्रार्धश्र ॥ नसिवर्षामददि॥ ॥ नयन्मनत्वाउनकन्मन्नापृष्टा॥ मधीमददिवा
धनीपृष्कनसृजोर्गमनिउश्रप्यापनी॥ वाक्याद्यवक्ष् ॥ अर्धय ॥ गभवर्त॥ श्रुवनश्र
ग्निका ॥ दारुस्मि गृहीत्वा निलर्ककागयन् ॥ ॐ आश्रम ॥ नकस्यपस्य आश्रम

यद्दवप्राप्येननास्तुग्रायपम॥ नर्घपागोदकन न्निद्रुपुदकिदी॥ कुं यद्दयद्द
गदुस्वाका मरूपनिगदुस्वाका स्वीयानिगदुस्वाका प्रमनेयद्दयद्दपत्तसदुसुकावा
कः सर्ववीनसंरुषस्वस्वाका॥ न्निद्रुविसर्जनी॥ गदुस्वाका सुग (गुष्ट) न्निद्रुमासंसागवा
रुन॥ यद्दुप्रादया देवानुगदुस्वाकासन॥ कमस्य॥ न्निद्रुस॥ (गुष्ट) न्निद्रुमासः॥ कुं कर्म
यकर्म (दस्वाका॥ कुं न्निद्रुमासकर्म (दस्वाका॥ ॥ न्निद्रुनी वलंदयाका॥ ग्रावमाश॥
न्यास॥ कुं उद्दयनमसस्यनित्यः प (गुष्ट) न्निद्रुमास॥ कुं न्निद्रुमास॥ कुं न्निद्रुमास॥
रुमम॥ यद्दुविसर्जनी॥ ॥ न्निद्रुमासकर्म न्निद्रुमासकर्म न्निद्रुमासकर्म॥ ॥ वन्दनादि न्निद्रुमास
वाक॥ पुगुवदुयान न्निद्रुमासकर्म न्निद्रुमासकर्म न्निद्रुमासकर्म॥ सावित्रीकर्म॥ ॥ न्निद्रुमास
काऊनरिद्रुमासकर्म॥ कुं मातृतिरिद्रुमासकर्म॥ कुं स्वस्ति॥ कुं न्निद्रुमासकर्म॥
३॥ लीखनवडाकिवाय॥ लीखनवडाकिवाय॥ कुं न्निद्रुमासकर्म॥ कुं न्निद्रुमासकर्म॥

लंखविधय॥ ॥ ॐ पृथिव्ये स्वाहा ॥ ॐ पृथुना जाय स्वाहा ॥ ॐ प्रजापतये स्वाहा ॥ ॐ ज्ञे
 य स्वाहा ॥ ॐ मित्रे स्वाहा ॥ ॐ निषेव वलि ॥ ॐ रुत वलि विधय ॥ ॐ रुत पतये स्वाहा ॥ ॐ
 उवनपतये स्वाहा ॥ ॐ रुत नीपतये स्वाहा ॥ ॐ पिरुपतये स्वाहा ॥ ॐ वलिपतये स्वा
 हा ॥ ॐ न्न उपतपमकु ॥ ॐ न्नपतये स्वाहा ॥ ॐ रुत नमीनस्य ॐ न्नपतये स्वाहा ॥ ॐ
 ननात्रिषरुर्कना ॥ ॐ रुत नमीनस्य ॐ न्नपतये स्वाहा ॥ ॐ रुत नमीनस्य ॐ न्नपतये स्वाहा ॥ ॐ
 नसिरुतना ॐ रुत नमीनस्य ॐ न्नपतये स्वाहा ॥ ॐ रुत नमीनस्य ॐ न्नपतये स्वाहा ॥ ॐ
 ॥ पश्चिमसमकु ॥ ॐ प्राधय स्वाहा ॥ ॐ रुत नमीनस्य ॐ न्नपतये स्वाहा ॥ ॐ रुत नमीनस्य ॐ न्नपतये स्वाहा ॥ ॐ
 रुत नमीनस्य ॐ न्नपतये स्वाहा ॥ ॐ रुत नमीनस्य ॐ न्नपतये स्वाहा ॥ ॐ रुत नमीनस्य ॐ न्नपतये स्वाहा ॥ ॐ
 रुत नमीनस्य ॐ न्नपतये स्वाहा ॥ ॐ रुत नमीनस्य ॐ न्नपतये स्वाहा ॥ ॐ रुत नमीनस्य ॐ न्नपतये स्वाहा ॥ ॐ
 रुत नमीनस्य ॐ न्नपतये स्वाहा ॥ ॐ रुत नमीनस्य ॐ न्नपतये स्वाहा ॥ ॐ रुत नमीनस्य ॐ न्नपतये स्वाहा ॥ ॐ

सन्निकृष्टं प्रातःकालं प्रातःसंध्यां कात्रय। मन्थ्यां कृत्वा नादिकं विधाय मन्थ्यां कृत्वा संध्यां कात्रय
नामवर्धयति वसन्तं प्रिकालं संध्यां कृत्वा॥ सन्निकृष्टं कृत्वा विविधं गुणैरुक्तं दत्तांशं
श्रद्धात्रिकर्मणा वक्तुं शक्यम्॥ ॥ ननु वेदादौ विधिः वदुर्थं दियसः॥ ॥ वदुनि
त्येकं मन्थ्यानां दियसं कृत्वा॥ ॥ धिर्विवेकं नूय वा दकं कृत्वा॥ ॥ वदुनि मन्थ्यानां मित्यः
र्थः गुणैरुक्तं मन्थ्यानां कृत्वा॥ यथा यथा विधिं मन्थ्यानां कृत्वा लक्षणं वर्तते॥ वक्रायां श्रद्धा
श्रद्धा लक्षणं गीतं श्रद्धायां कृत्वा॥ संध्यानां यथा नागपयः॥ वास्यं नकायां यथा यथा स्व
वेदना॥ ॥ ननु नूयं यथा साधनां नूयं श्रद्धायां कृत्वा॥ श्रद्धायां नाम॥ नूयं सन्ध्यायां यथा
त्यादा॥ यथा वदुनि मन्थ्यानां कृत्वा सर्वं कृत्वा पृथुर्न॥ निला कृत्वा॥ कलशं यथा कृत्वा
त्वं॥ रथा कृत्वा॥ ॥ वदुयसि संध्यानां कृत्वा लक्षणं वर्तते॥ गुणैरुक्तं लक्षणं पूर्वव
त्॥ सकलं कृत्वा विधाय कृत्वा॥ ॥ यथा संध्यानां कृत्वा लक्षणं वर्तते॥ गवददीक्षायां कृत्वा॥

वदप्रबोधिर्नरं॥ब्रह्मवप्रदानं॥३

गुरुधामपि माहि मुखे सिद्धत्वा वदना पूर्वमुखे सिद्धत्वा॥तना नूप्रदानं॥गुरुधाम पूर्वव
त्तु न्यासादिकं कृत्वा त्रैलोक्यसाधनस्य पूर्ववत्॥गुरुवद्विना सरु सिद्धत्वा॥॥ॐ दक
र्मनस्तेनाध्यापनं नृधिकातः॥॥तना वदानमूः॥ॐ नृषत्वा कृत्वा वायवसुद
वावः॥सविता प्राप्य यदुः॥गुरुधाममायकर्मनः॥आप्यायदुः॥नृषत्वा वायवसुद
जावती नृधामीवा॥नृषत्वा मवसुनः॥ॐ गुरुधाममायकर्मनः॥आप्यायदुः॥नृषत्वा वायवसुद
स्यानृवकीर्युत्तमानस्य पशुन्यासः॥१॥ॐ तमी धर्मिन् नृवसुतयुतेर्वाधयता
तिथिम्॥आस्मिन् नृवसुतयुतेर्वाधयता॥२॥ससमिद्धाय॥गुरुधाममायकर्मनः॥आप्यायदुः॥नृषत्वा वायवसुद
लिवद्व्यानृपतवके॥ॐ निवद्विद्धा॥गुरुधाममायकर्मनः॥आप्यायदुः॥नृषत्वा वायवसुद
दीक्षामाप्नाति॥ॐ आदिति॥१०॥ॐ मन्त्रानृनृपुतिष्य॥तना गुरुधाममायकर्मनः॥आप्यायदुः॥नृषत्वा वायवसुद
मयन्॥ॐ प्रदक्षिणं दक्षिणं॥तना यदुः॥सिद्धासनस्य दक्षिणं दक्षिणं॥गुरुधाममायकर्मनः॥आप्यायदुः॥नृषत्वा वायवसुद

१०॥ॐ श्रुतिमीलं॥ वदुश्च वा न स्वाय॥ तता वदुः श्रुतिनिकर्मका नयत॥ पूर्ववत्॥ ॥ वाक्
लपजा॥ भक्तिके पृष्टिक॥ यवक्षन्त्यादि॥ भूतसंकल्प॥ दक्षिण॥ यद्वपुर्ध्वं॥ श्रुतिं तौ प१०
तु॥ श्रुत्याणीर्वादि॥ यद्विसर्जनी॥ वक्ताया लखन श्रुतिषक विय॥ चन्दनादि॥ श्रुतीर्वादि
॥ कलश॥ ज्ञाय॥ ॐ नायलितम्॥ वाक्कलशजनी॥ वदुलवन रुकटी॥ ॐ नित्यं चतुर्थदिवसवर्द
नरुविधि समाप्तः॥ ॥ ॥ अथ भवतिकर्मविधिलिख्यते॥ वदुर्नद्यां स्नानमाचरेत्
॥ वदुः श्रुतिनिकर्मका नयत॥ श्रुत्याः कलशं च नमृषितर्पणं दिकं कृत्वा॥ वदुना सहस्रं
र्षार्घ्यं कुर्यात्॥ न्यासादि॥ पूजनी॥ ॐ तत्सवामीलं॥ कलशं॥ ग्रहपर्वि पूजनी॥ श्रुतगन्धः
दि॥ तता दक्षिणं तौ कुर्यात्॥ यवाकृतमिष्टितर्पणं कुर्यात्॥ पिण्डावकववालादीं स्पर्प
यत्॥ श्रुतगन्धदि॥ ॐ नित्यं कलशं च न॥ ॥ ततः श्रुत्याः कुम्भलिकर्म कुर्यात्॥ निधिवत्
॥ यथा श्रुतिमनुकलशं च न॥ अर्थयदा साधना कुरुर्गदमक्रिया॥ समूहवाग्नयस्यो

॥॥प्रश्नवात्र॥नकयतादृति॥चुतादृतिपूर्व॥तिलादृतिपूर्व॥ ॥कलशप्रतिष्ठा॥
संख्यादृति॥वेदकर्मपूर्ववत्॥कसाविर्यनिसम्भोऽश्विनत्वं॥श्रादृति॥ॐपवित्रुषा
॥वद्यद्ममर्षुषासयित्वायेद्मसिंहासनदक्षिणतारागस्तित्वा॥नरुद्रिकर्मकात्रयः
तु॥पूर्ववत्॥ ॥तताग्नुनगुनिकवलपुतिष्ठा॥ॐत्वंजविषुदा॥ॐमन्त्रादृतिप्रति
ष्ठा॥श्रवणस्यद्वा॥रिक्षाप्रदानं॥धनासिय॥वाक्कवपूजा॥मनिकपूषिक॥यवध
न्यादि॥ननसंकल्प॥दक्षिण॥ ॥पूर्व॥नग्निविसर्जनं॥सषडाम॥ ॥कोठालसखः
सिर्लखनयाडा॥सषिप्रविष्टुधरिषकंकत्वा॥वद्यद्मसिंहासनस्तित्वावक्काकलसः
ननरिषकंकूर्यात्॥ॐदवस्यत्वा॥वन्दनादि॥श्रीगीर्वाद॥कोठालसषिमेवयके॥ॐ
समृद्धिगयु॥नक्षोवन्धनमन्त्रु॥ॐयदावध्रन्दाद्वा॥वदूयान॥नक्षोप्रदानं॥कोमात्रावि
सर्जनं॥वदृतिष्ठाकनदी॥धनावलिसनय॥कार्यकत्वा॥प्रकरुके॥ ॥ॐनिश्रव

लीकर्मविधिसमाप्तः॥ ॥ ॥ ततोसमावर्तनकर्मविधिः॥ ॥ वदन्ति एतानादिकैः
कृत्वा॥ अहोत्रिकर्मयादाउति ए अहोत्रिकर्मलं धूतकं॥ गुरुयानिएकर्मधूतकं॥ व
दयानिएकर्म अहोत्रियादाकृत्वा विहर्तुनी॥ ॥ आचार्यद्वयद्विविधवसप॥ बुद्धा अष्ट
कलः॥ ताहापोडे तय॥ ॥ तौ अर्धकन बुद्धा पूवर्त॥ समावर्तनकर्महि आर्यदेक य
वादेक कावयत विधिवत्॥ धं कादीन॥ ॥ ततो आचार्यद्विकृत्वा कर्मकृत्यात्॥ ॥
यथा १ विधिमनुह कलः सेवनी॥ बुद्धा पूजा॥ ॐ तत्सामा मी एा दि॥ ॐ बुद्ध (हानमः॥ ॐ ह्रीं
सनाय १॥ ॐ न॥ यानि पातं च पुर्वीं बुद्धा दी च पुनाननी॥ ह्रीं सयान १ विज्ञा दी दत्ता दी के
मस्तुर्ल॥ ॐ बुद्ध (हान १॥ ॐ पुजापतय १ च पुनाननाय १॥ ॐ ह्रीं कर्त्तय १॥ ॐ बुद्ध यहा
नी॥ ॐ बुद्ध हस्यतय॥ ॐ आ बुद्धन्॥ ॐ अम बुद्ध नि विन्दा बुद्धादवा वृ हस्यति॥ सर्वतसा
वि (४४) देवायावकुनः॥ १॥ ॐ ह्रीं॥ अगुर्गं धादि॥ अष्टकलः पूजा॥ ॐ व वाय १॥ ॐ यं जत॥

ॐ धृताय २॥ ॐ हृदविषुर्वि॥ ॐ सामाय २॥ ॐ वृत्रावनी॥ ॐ वृक्षा २॥ ॐ दवगुनोदवा॥
॥ ॐ अतिलाय २॥ ॐ दिवावावि॥ ॐ प्रहृषाय २॥ ॐ प्रनदिषू॥ ॐ प्रलासाय २॥ ॐ विष्णुमना
ठमसि॥ ॥ सगहनपूजा॥ ॐ दधिका॥ ॐ यदयक॥ ॐ त्वंजविषुका॥ ॐ दीर्घाय स्वा
या॥ ॐ वसाः पविर्त्त॥ ॐ यकाय २॥ ॐ अने अद्व॥ ॐ यद॥ ॐ प्रजाय २॥ ॐ प्रियेश॥
ॐ श्रीश्वर॥ ॐ लक्ष्मी २॥ ॐ श्रीमाल॥ ॐ नागय २॥ ॐ नमस्तु सत्यस्था॥ स्यानाग॥ ॐ
या वृषवा॥ ॥ ॐ आदित्यादि॥ ॐ आकृष्णि॥ १॥ ॐ हृन्दादि॥ ॐ ज्ञानात्रमिन्दु॥ १॥
ॐ अश्वत्थामादि॥ ॐ अश्वस्तुवा॥ २॥ ॐ मासादि॥ २२॥ पञ्चवल्यावनी॥ ॐ गनीमेत्वा
॥ ॐ वृमात्रुदाय॥ ॐ जानवेद॥ ॐ घृत्तं घृत्तया॥ ॐ नमो वसुधा॥ गगनगमसकोमा
नीपूजनी॥ ॐ नमो ग॥ ॐ आय॥ ॐ जानवेदस॥ ॥ सूर्यादिपूजनी॥ ॐ
आकृष्णि॥ ३॥ द्रवापि रवा॥ ॐ समरथदया॥ ॐ असीरवाका॥ आकाशमाला॥ ॐ अस्मि

कमिन्दु॥ कस्कन॥ ॐ समि ॥ सिन्दु नमः ॥ ॐ श्री गुरु ॥ ॐ वहुस्वस्ति ॥ ॐ ॥ धूप दीप प्रति
ष्ठात्वा ॥ अग्न्यादि ॥ आपः स्नातु ॥ ॐ लोकेशी नमो नीयुगार्हममर्त्यसर्वशेष
गतं वनपद्मानि गुरु शीसर्क कमी रुं न नै ॥ बाहुर्वदविधानि नद्रि उगनी कर्त्तु
मही पुत्रु पादो प्रपूजक जायमा लसदि नै वन्द्य स्तः पूजितै ॥ अग्न्यादि ॥ ॥
नना अर्थ पदा साधनै ॥ अग्नि दश क्रिया ॥ अग्ने नमः ॥ ॐ सूर्याग्नेय स्वाहा ॥ अना
मि सर्व दत्ता ॥ अनामि पूरु ॥ निलाहनि ॥ कलश प्रतिष्ठा ॥ संख्या हनि ॥ ॥ नना
वदु नानयन ॥ नना गुरु पूजा ॥ आचम्य ॥ ॥ नना यद्दसि हा सना रुन हा हा वदु पवि
नारि मर्ये स्ति ॥ गुरु पूर्व मर्ये ॥ अथादि ॥ वाक् ॥ समावर्त्तन कर्म दि गुरु पूजा
निमित्तार्थ श्री सूर्याग्नेय नमः ॥ ॥ ॐ श्री कृष्ण ॥ ॐ गुरु मूर्त्यु यद्द मा सन
नमः ॥ अर्च्य पादार्च्य रुक्माद्य चन्दन यद्द पवीन प्रपूज्य धूप दीप ॥ अग्न्यादि ॥

रुक्मप्रमानमनुलीक्यन्ति॥ मधुकेठरुमदनरुतिनासिवसन्धना॥ तद्वाषसमनाथ
यसिवामिगन्धवानिधम॥ नासाकवननरुमीलेपदी॥ गमधितानपथिवीवेवगीधवा
नितिलपिना॥ पूर्वजन्मकनपापं दृष्टुं सकरीरुवन्तु॥ इहजन्मनिपापानीप्र
रुजन्माकनगेषुवावसिर्नकर्मसुगुहाजन्मजन्माकनगेषुवा॥ कनपृष्ठाजलिक
त्वाशमयकनवेनसा॥ नखलुमलुलाहृडि॥ उनात्र॥ प्रविर्वित्वयन्तु॥ पृथिविवि
विधकाकन आयविविधकल॥ नसर्वकम्यगीधवनकनुगिवसर्वका॥ पीनरु
रुनप्रिवसिर्ननिःक्षिपन्तु॥ कवावाय॥ पिथूरुत्यादि॥ १०॥ दधुज्यादि॥ ८॥ दधु
सयाजातादि॥ ५॥ म॥ धृतिदव॥ ३॥ चन्दनसिन्दूरयक्ष्मापवीतपूषाबीजरुलवाचोदः
नपूगरुल१०॥ ताम्बूलादिकम॥ धृतिधाय॥ ८॥ दधुदिक॥ ८॥ कमनपूजन॥ वाया॥ ८॥ उं वुम्
मधुलायनम॥ ८॥ उं विष्णुमधुलाय२॥ उं नूदमधुलाय२॥ उं अग्निमधुलाय२॥ उं पुन

दुलाय २॥ धूप दीप जाप स्मार्त ॥ म धुलाय नमस्तुभ्यं सर्वतत्त्वाधिपायय ॥ तं शुभं
 प्रकाशय मधुलाय नमस्तुते ॥ अगुर्गमदि ॥ दक्षिण ॥ हस्ताञ्जलि वक्ष्ये वदुप ० ति ॥
 मनुः ॥ पुं वदुप चर्यावतं ॥ पुं वदुप चर्यावतं ॥ पुं वदुप चर्यावतं ॥ पुं वदुप चर्यावतं ॥
 मया ॥ हानवृद्धिर्हवद हा आशीर्वाद ददातु मे ॥ वतय राव वदुप चर्यावतं ॥ पुं वदुप चर्यावतं ॥
 ॥ गुनस्वस्ति प्रणमि वचनं ॥ वदुप ० ति ॥ सस्ति स्माहि मि ॥ आचार्य हस्ति हि ॥ ॥ गता वदुप
 हानी कर्म कावयत् ॥ पूर्ववत् ॥ पंच काष्ठं शूद्रयात् ॥ पुं अग्रय सूत्र वलादि ॥ ५ ॥ स
 मिध हाम ॥ पुं अग्रय सस्ति ॥ वलादि ॥ अग्निपुश्या ॥ पुनर्यं शूद्रयात् ॥ ॥ घृणादु
 ति ॥ तिलादुति पूर्वर्तुर्न ॥ ॥ गता चर्यावतं पूर्ववत् ॥ आसीत् ॥ अग्नाशीर्वाद ॥ स्याशीर्वा
 द ॥ न्यास ॥ ० ति अस्ती कर्मः ॥ ॥ गता आचार्य वदुप यद्दुस्ति सै हो नाह नरा ॥ ग
 द्दुग्ना दगासनं स्वस्ति कासन उय विष्णु ॥ निर्मचुनी ॥ पुं नदा हर्ष ॥ वलि ॥ पुं अथवा

सनश्रु १

व॥ दीप॥ ॐ नमो॥ आचार्य॥ गामुपाध्याय॥ अथ कलहदकस्तोत्रं ॥ १ ॥ ह्रीं स्वाव दूस्त्रा
नमस्तु ॥ ॐ य अ पूर्ण गतेने य ४ पु वि दू ॥ सु ध म ॥ अ ॥ द्वितीया ॥ ॐ उ य ॥ अ ॥ ए ती
या ॥ ॐ म यू षा ॥ च तु ॥ ॐ म ना हा ॥ ॐ प च मा ॥ ॐ स्व ल ॥ ष ष ॥ ॐ वि नू ज ॥ स फ म ॥ ॐ न
न दू ष ॥ अ ॥ ॐ नू द्रि य हा सि ॥ समू द क पूर्व व ॥ द्वि प ल्म नु ॥ ॐ ता वि ऊ हा मि ॥ ॐ
नि अ र्घ म र्घ स्ताने ॥ ॥ पु न नू न्य ऊ ल न ग न प या व वे द हा य म नु ॥ ॐ या ना व न रु मि हे
ग क्ता मि ॥ गामुपाध्याय ॥ नृ रि षि व न म नु ॥ ॐ न ना रु मा रि षि वा मि ऊ स स्वी न
ज स्य वृ क्त व र्व सा य व ला य नू द्रि या र्था वी र्या या ना द्या या ना स्या षा य तु द्वा य अ प वि
स्ये य ना म्नी म कृ तं त प ध ना या म स ना सृ गी य न द्वा न रि षि श्रु ति ॥ य न मी पृ थि वी म
द्वि य द्वा न के द ग्नि ना य स नै ना मा रि षि व नि ॥ पु नः नू न्य द्वा म नु ॥ ॐ या ना व ना स्ता
व ग क्ता मि ॥ ॐ न ने व म रि षि श्रु मि श्रि ये य ग स वृ क्त व र्व सा य ॥ ॥ पु न न

रुद्राक्षमन्त्रः॥ ॐ यात्रावनस्तुमिहगृह्णामि॥ ॐ यन्नमिषमरुह्यनायनावस्तुना ० सुनी॥ य
नाकावर्यर्षिवनीयदानमग्निनायगः॥ पुनः श्रुत्युक्तमन्त्रः॥ ॐ यात्रावनस्तुमिहगृ
ह्णामि॥ ॐ आपादिष्ठा मया तु वस्तानं उर्ध्वं दधाम नमस्तु नक्षत्राय वक्षसा॥ ॐ यात्रावः
नस्तुमिहगृह्णामि॥ ॐ यावः जिवन्मानसस्तु स्यवाजयन्तु नः उगतीनिवमानसः
पुनरुक्तमन्त्रः॥ ॐ यात्रावनस्तुमिहगृह्णामि॥ ॐ नस्मात्त्रेण मम वायस्य क्रिया
यजिन्मथः आपाज्जनयथावनः॥ पुनः श्रुत्युक्तमन्त्रः॥ ॐ यात्रावनस्तुमिहगृह्णामि॥
रुषीमस्तु कर्णवद्॥ ॥ पञ्चद्ववस्तु कोटाय॥ तुष्टी॥ ॥ नतावलान्क्रमनमृजका
टाय॥ जित्तथकायमन्त्रः॥ ॐ उद्गुरुमवर्तय पाशमस्मदवाधमविमध्यम ० ग्रथमा॥
अथवयमादित्यवृत्तेन वा नागसाश्रितयश्चाम॥ द० (६) वस्तुयनिम्न॥ कृष्णजि

न. का. पति. रू. श्री. वि. य. उ. न. या. न. ॥ म. व. प. सु. न. ति. य. क. ॥ व. द. श. र. म. य. ॥ श्री. सूर्या. य. उ. ल. नि. व. द.
न. म. नुः ॥ ॐ. उ. द्य. श. उ. रू. षू. ति. न्द्रा. म. नृ. दि. न. स्या. तु. ति. य. वि. रि. न. स्या. द. ग. नि. त्र. सि. द. ग. नि.
म. कि. र्वा. वि. द. मा. ग. म. य. ॥ पु. थ. म. ॥ पु. नः. उ. द. का. श्रु. लि. क्षि. पे. न् ॥ ॐ. उ. द्य. श. उ. रू. षू. ति. न्द्रा.
म. नृ. दि. न. स्या. दि. वा. व. त. या. व. दि. न. स्या. न् ॥ ग. न. स. नि. त्र. सि. ग. न. स. नि. म. कि. र्वा. वि. द. मा.
ग. म. य. ॥ द्वि. ती. य. ॥ पु. नः. उ. द. का. श्रु. लि. क्षि. पे. त. म. नुः ॥ ॐ. उ. द्य. श. उ. रू. षू. ति. न्द्रा. म. नृ. दि. न.
स्या. न् ॥ सां. य. या. व. दि. न. स्या. स. द. मु. स. मि. त्र. सि. स. द. मु. नि. म. कि. र्वा. वि. द. मा. ग. म. य. ॥ रू.
ती. य. ॥ नू. ति. सूर्या. र्ध. ॥ ॥ त. नो. वा. क्. श्रु. द. न. ॥ त. न. वा. य. ॥ मा. न. वा. न. क. ॥ न. दि. क. ग्य. त. द.
स. वा. ध. र्ध. थि. य. क. ॥ त. इ. लि. स. ले. ख. द्ध. य. ॥ द. धि. ष्य. न. ति. ल. न. य. ॥ न. नो. व. द्ध. या. सि. त्र. स.
ले. ख. न. यि. ले. ॥ य. ग्ध. न. ना. पि. क. न. स. खा. य. ॥ सि. खा. वा. दि. क. न् ॥ ॥ त. नो. स्त्रो. न. क. त्वा. ॥ उ.
श्म. न. ध. द. क. ध. व. न. ॥ म. नुः ॥ नृ. न्ना. यो. य. बू. रु. ध. ॥ सा. मा. त्रा. जो. प. मा. ग. न. ॥ स. म. मृ. र्वे. पु.

मां कुरु नमो गसावरु (गनवा॥ ज्ञावम्य॥ उपस्य गर्गनी॥ पुनः गन प्रयागवद्॥ नतः सग
 (न्या) दुरुनैरुषी॥ पुनः जेष्टकल (ग) दक न सान नमस्तुः॥ कुं यत्र प्रयत्न नमः प्रवि
 ष्ठा॥ प्रथमा॥ कुं (ग) मक्र॥ द्वितीया॥ कुं उप (ग) मक्र॥ कुं हृतीया॥ कुं मयूषा॥ वहु (थी)॥ कुं म
 नाका॥ पञ्चमा॥ कुं स्वल्॥ षष्ठा॥ कुं विरुज॥ सप्तमा॥ कुं नन्द॥ अष्टमा॥ कुं वृन्दिय
 लासि॥ सप्तदश पूर्ववत्॥ द्विपञ्चमः॥ कुं नाविडा कामि॥ ॥ वृन्ति स्नान विधिः॥ ॥
 वद् ज्ञावम्य॥ यद्गुप्तिहासना हृत्तरु (ग) निष्ठति॥ गुरु धा यद्गु पवी न प्रदान नमस्तुः॥
 कुं यद्गु पवीनै॥ वद्मध्या क्रसं ध्या हृत्वा॥ वद्गु स्तन वन्दनै गृहीत्वा नृव नासिका
 वद्गु कर्तुया लपन नमस्तुः॥ कुं प्रादीपाना नमस्तु यत्न वद्गु मर्त्य यत्न (ग) गृह मर्त्य
 यत्न॥ वद्मदत साति सा दकै दद्यात्॥ पितुनि रुसन्धं॥ पिपाव हृत्त यत्न स्रष्टा मर्क

त्वा॥ वद्धुस्तु वन्दनी गृहीत्वाप (०) सक्तुः॥ ॐ स्वस्ति नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ स्वस्ति नमो
सर्वकर्मणि स्वास्ति नमो॥ नमो नूनन वस्तुपत्रिधनतमस्तुः॥ ॐ पत्रिधनस्येयसाध
स्येदीर्घा यस्तु ययन दोस्तिनग्नि॥ गतेय जीवामि गतदः पृथ्वीनाय स्यावमरुतस्य
वयिष्य॥ उत्तुति यदद्यास्तुः॥ ॥ ॐ यगसाद्यावापृथिवी यगसन्दायवद्धुस्तुतिः
॥ यग (ग) रुगग्निमाविद्य सा मा प्रतिपद्यताम्॥ उत्तुष्टीर्षदद्यास्तुः॥ ॐ यवास्वासा
पत्रीवीनमागस्तुत्तु (ग) र्ग्या रुवति मायमातः॥ नन्नधीनासकवयडन्वयर्नसाध्वा
मनसादवयक्त॥ सुगन्धवन्दनी दद्यास्तुः॥ ॐ यदयकववत्तु॥ त्वाकस्वानवि
य॥ ॐ नो हातजमदग्निः प्रर्द्धये कामायेन्द्रियाय॥ नामदीप्रतिगृह्णामि यगसा
वरु (ग) तय॥ मातापृथीदद्यात्तु॥ ॐ यद्यसास्रतसामिन्दुग्यकातविपुलपृथुः॥ न
नसंयन्तितास्मनसाध्वावधामि जिगाय (ग) मयि॥ नृत्तंकारं दद्यात्तु॥ ॐ नृत्तं क

[illegible]

तत्राहुतिविषय॥ॐ श्राकषू॥समावर्तनी॥ॐ मन्त्राहुति॥प्रतिष्ठा॥श्रुवनवदस्य॥ ॥
नरुमातासंराषदी॥रुमान॥धर्मकर्तृगमिष्यामि॥पिरुआन॥पिमानपत्रिवर्जस
खायवाडायेन॥ननामावुसन॥वदुसीवाधितान्नानयनु॥ ॥धनवाउनथवक॥ध
नदवदुजाकृष्णा॥श्रावानन॥धकादिनदवस्तुदक्षिणवायवास्तुपूजादव
याकेसिन्दूरकालेसिन्दूरयात्रायाडाडरुय॥श्रायानागरुदात्रनिर्मयुनादिसर
श्रागतिप्रतिष्ठात्वंकृत्वा॥लैखधनपयाडाडनार्थदे॥यद्रुमपुपप्रविग्ध॥यद्रुसि
हासनाश्रुतरु॥गमिष्या॥श्रुधृष्टितत्वेनसाधनंकृत्वा॥ ॥श्राहुति॥१०८॥ॐ
श्राकषूनत्रजसा॥समावर्तनप्रतिष्ठा॥ॐ मन्त्राहुति॥ ॥ततावास्तुपूजा॥गमि
कषुष्टिक॥यवधन्यादि॥श्रुनसंकल्प॥दक्षिण॥यद्रुपुष्टु॥श्राससाय॥०८॥श्रु

[illegible]

[illegible]

कु। ग३ क३ धूमरना॥ वृत्तिकुलुल द३॥ वदूया रुक्म नकु१३ कृ३ श्रुवाया॥ ॥ धनन सयख
वाथया अमुमान। थययक॥ गीरुनिसिया कपति॥ कृष्माजिन॥ यागया तासिहिन दयके
माला॥ ॥ कापल द्रस३ कृ३ दूरुला अली डस्यक॥ पलिली डस्यार्थ सयक माला॥ ॥
नमः वेग्न नराय॥ गीका त्याय॥ धवाव॥ पावक स्य म्स्वव द३ यदृकं पप्रयानिना॥ ब्राह्म
नानां रुतार्थ सैस्कात्रा॥ र्थनुवा ग्नय॥ पावका रु३ का ना मला कि का दृवृवात्मक॥ कीर्ति
कं वनामानि नृनी वेव प्रु प्रु कीर्तिना॥ नृनि सुमन नाना मग क्वा धन विधी यन॥ पु३ व३ ध
वनुम सा गुरु कर्म तु सा रुन गी मना मङ्गला नाम क३॥ स३ विष्णु प्रा सन सिना वृ३ ठा क३॥
सादिना मवुतव॥ स३ समुद्र वी॥ वृत्तमा क्वा वरु३ र्थ वसू र्थाना मानि कीर्त्यन्॥ ग३ नाने सुर्म
नामाग्नि विवा रुया उ कस्त॥ वरु३ र्थानु गि रवाग्नि सुधृति नग्नि तथ प३॥ नृव स सूरुवा
नाम वे॥ ग३ वरु३ पावक॥ वृष्ठा गम निरूप र्थानु३ ग्नी ग्नी द क३ धन य॥ द३ वानी रुय वा रुनः
पिहृ र्मा क३ वा रुन॥ प्रायश्चित् रु विनीये व॥ पाक यदृप् सा रु सः॥ ग३ वन ग३ व॥ ग३ ग्नि ग्नी

[illegible]

नवसंकारः नैव कर्मरुलं सरुत ॥ निशीका ल्या य (सक कार्य वि (गष अग्नि नाम अष
मपठतः ॥ विवाह सर्व यद्रूपे के त्या द क क्रिया ॥ अदीवुत समा नय ना सो व न
सूतक ॥ ग्राम मङ्गल सिद्धि र्थ मा ह अदीवका नय न ह्यु ग्य य उ मान ग्य सा ग कर्म समा
फितः ॥ सूतका दिन वृत्ति स्या ह त्या कार्य य बो दकी ॥ न क वि गति य द्रुष्ट विवाह
द ग र्ति दि न ॥ ग्रि ना उ म्प न य न स्या न (ग षा स द्य उ का न य न ॥
२ श्री मन्त्र पाल वष जि रिव य म वि ल य् के तु मा स ६ थ वे न ३ के पे क ६ क्रि धा न
तु न ग र स म्पू न वे ध नो या ग म् र य ॥ वा न गु के र पि सूर्य ६ उ उ ग ० ० वि वि
म ष (ग वृ दि ना उ पु श ६ ल र वी ल्प मा थ ध न वि स्र न व न ४ पु स्त कं पि ह वा का
न ॥ सै व न् २ ३ चै न् ३ क दि ती या अ स्ति नी न क उ वे य ति या ग उ क वा न थ क क सि द्ध या न ॥

॥
॥

१ श्री गणेशाय नमः ॥ २ श्री गणेशाय नमः ॥ ३ श्री गणेशाय नमः ॥ ४ श्री गणेशाय नमः ॥ ५ श्री गणेशाय नमः ॥ ६ श्री गणेशाय नमः ॥ ७ श्री गणेशाय नमः ॥ ८ श्री गणेशाय नमः ॥ ९ श्री गणेशाय नमः ॥ १० श्री गणेशाय नमः ॥

१ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॐ ब्रह्मणे नमः ॥ अथ षष्ठीयागविधिर्लिख्यते ॥ ॥ कुमारयस्त्रानंकारयेत् ॥ कुमारयातं लुं अंगुलीद्वये ॥ ॐ हिर
ण्यवर्त्महुरिणीं सुवर्त्मरजतश्रुतीं च त्वां हिरण्यमीं लक्ष्मीं जामवेदो ममावहतां श्वावहजातवेदो लक्ष्मीं मत्पुत्रा मिति ॥ ॥ द्वारसखण्डयल्लिखि
ये र्थिकादिना ॥ विविधार्थकेशवार्चनयाया ॥ ॥ र्थकादिनपुष्पाभाजना ॥ अथादि ॥ नमोस्त्यनंताया ॥ आदित्यशशिमंगलो ॥ सुद्धशानं ॥ सिद्धि
रस्तु ॥ यथावा ॥ ॥ ब्राह्मणस्य पूजायाया ॥ अर्घ्यकृत्वा ॥ ॥ ॐ अग्ने तव श्रवो वयो महि प्राजने अर्चयो विभावसी वह्नौ सवसा ब्राज मू
दधासि दाशुषे कवे ॥ वा ॥ ॐ अग्ने तव श्रवो वय इति धूमो वा अस्य श्रवो वयः सद्ये न ममुषि त्वो के आवयति महि प्राजने विभावसविति मह
द्ब्राजने अर्चय पु नूवस ॥ ॥ ब्रह्मज्ञानो सवसा ब्राज मुक्या मिति वलं वै सवो यज्ञानो वलेनानु क्यमिति सथो सिदाशुषे कवे इति यजमा
नो वै दास्यं दधासि यजमानाया ॥ ॐ अग्नि मू ॥ ॥ ॐ त्वं देवधावती
तद्यथाया र्चकल्याणं ववेदा मुक्षाय ॥ नो वै त्वमस्य लं वै त्वमेव तस्मादसि ॥ ॥ न्यासात्प्रपूजानं ॥ ॥ ॐ ये तीर्थानि ॥ ॥
॥ रजतपूरणा ॥ आत्मपूजा ॥ तत्त्वायामि ॥ ॥ त्वमग्ने पुति ॥ आपो अस्मान्मा ॥
देवस्य त्वा ॥ गणानां त्वा ॥ ब्रह्मस्य ते ॥ चत्वारि शृंगा ॥ द्वारो देवी ॥ हिरण्यगर्भ ॥ सप्रसन्नय ॥ ब्रह्मयज्ञानं ॥ दिद्यारराष्ट
नमः शंभवाय च ॥ आवाहनादि ॥ ॥ ततो केशवपूजा ॥ केशवाय श्रीसहिताय नमः ॥ नारायणाय वागीश्वरी सहिता
य ॥ माधवाय कान्ति ॥ विष्णवे शान्ति ॥ मधुसूदनाय नमः ॥ त्रिविक्रमाय इच्छा ॥ वामनाय प्रीति ॥ श्रीधराय रति ॥ हृषीके

माया ॥ पद्मनाभाय श्रीगामोदराय महिमा ॥ गुरुघोत्तमाय लक्ष्मी ॥ १३ ॥ ध्यानं ॥ चतुर्बाहुवरं नित्यं लक्ष्मीवामांगसंस्थितं ॥
सदादेव्यां तं देवं ध्यायते सर्वसिद्धिदा ॥ वेदार्चनं ॥ ॐ दिवो वा विष्णु उत वा पृथिव्या महो वा विष्णु उरो रत्नरिक्षा त उभा हि
स्ताव सुनाय ॥ स्वायच्छुद्धक्षिणा दानसया द्विद्वयवेत्वा ॥ १ ॥ ॐ श्रीभ्यते

॥ २ ॥ ॐ विष्णो कर्माणि पश्यत यतो व्रतानि पश्यन् सो यश्च तस्य ज्यैष्ठ्यं ॥ ३ ॥ ॐ

रुचं वा स्यं जनय नो देवा अग्ने तदधु व न् ॥ यस्त्वेवं व स रणे विद्या तस्य देवा अ स न्व शो ॥ ४ ॥ ॐ प्रतद्विष्णु
वते वीर्येण मृगो न भीमः कुचरोगरिष्टाः ॥ यस्योरुषु त्रिषु विक्रमणो ष्वधिष्ठियन्निभुवना निविश्व ॥
पा ॥ ॐ यो देवेभ्यो व्या त पतियो देवा नां युरो हितः ॥ पूर्वो यो देवेभ्यो जातो जा न मो रु वा य वा स्रये ॥ ६ ॥
ॐ अग्ने तन्नूरसि विष्म वेत्वा श्ये नाय त्वा सोमस्य तन्नूरसि विष्म वेत्वा तिथे रतिथ्ये सतिथ्ये मसि विष्म वेत्वा श्ये
नाय त्वा सोमभृते विष्म वेत्वा ॥ ७ ॥ ॐ प्रजायति श्वरतिगर्भे अन्नरजायमानो व द्गु धा विराजति तस्य यो
निपरिपश्यन्निधीरा स्रस्मिन् हस्तुर्भुवना निविश्व ॥ ८ ॥ ॐ इदं विष्णुर्विवक्रमे त्रैवानि दधे पदं ॥ समूहमस्य
या छमिरे स्वाहा ॥ ९ ॥ ॐ वेदाहर्मतं युरुर्षम हान्तं मादित्यवर्णं तमसः परस्तात् ॥ तमेव विदित्वा न्मृत्युमेति ना

नः यंथा विद्यते यनाय ॥ १० ॥ ॐ ततो विराड्जायत विराजोऽपि पुरुषः ॥ स जातो अत्यरिष्य पश्चाद्भूमि
मथो पुरः ॥ ११ ॥ ॐ अद्भ्यः संभृतं यथिवोरसाच्च विश्वकर्मणः समवर्ततायेतस्त्वष्टा विदधद्रूपमेतितन्मन्त्र
स्य देवत्वमज्ज्ञातमये ॥ १२ ॥ ॐ त्रीणि पदा विचक्रमे विष्णुर्गोपा अदाभ्यः ॥ अतो धर्माणि धारयन् ॥ १३ ॥
ॐ धाम्ना लेखी रत्न रिक्षं मादि छंसी पृथिव्या संभव ॥ अयं छं हित्वा स्ववितितेति जानः प्रणिनाय मरुते सोम
गाय ॥ १४ ॥ ॐ दृष्ट्वा स्यात्खरेष्ठो रग्नये त्वा जुष्टं प्रोक्षामि वहिरसि अग्नये त्वा जुष्टं प्रोक्षामि ॥ १५ ॥















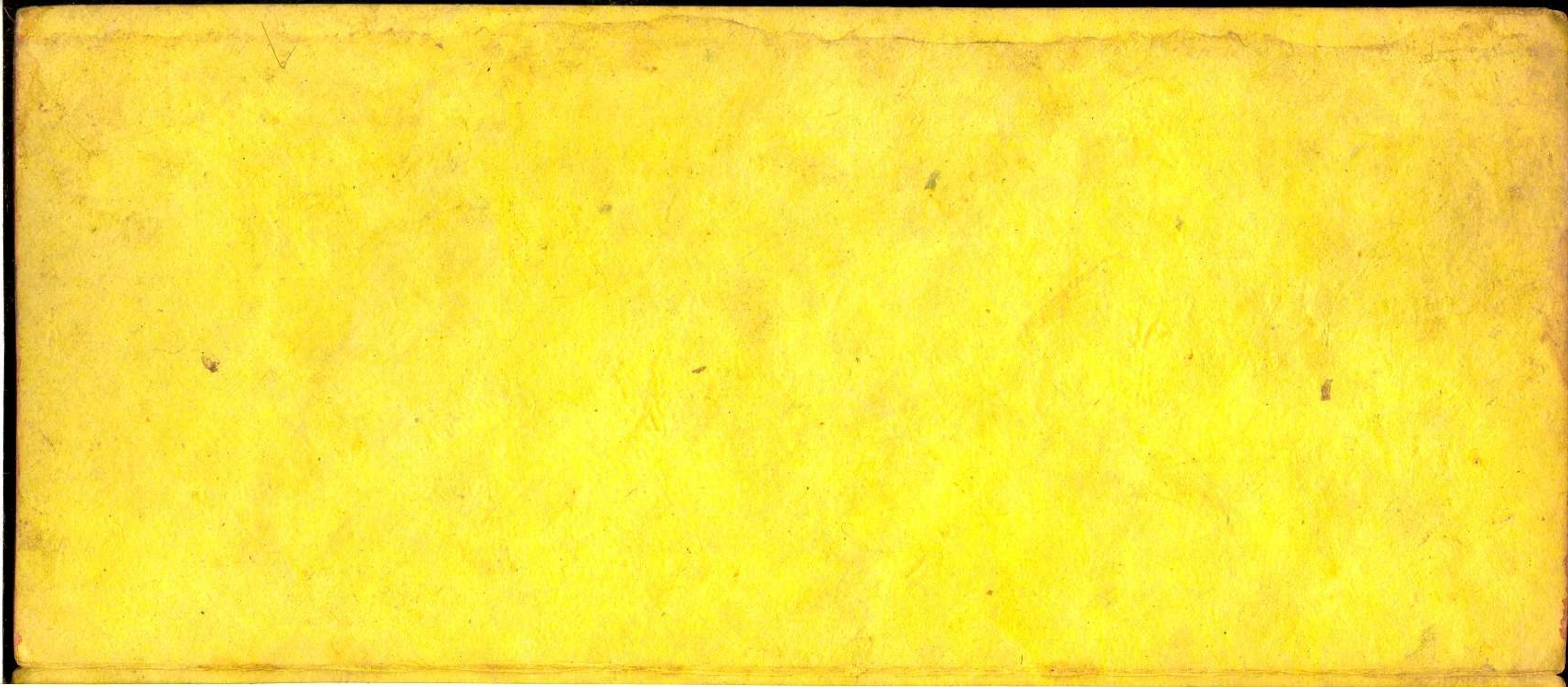




























































































































































111
80







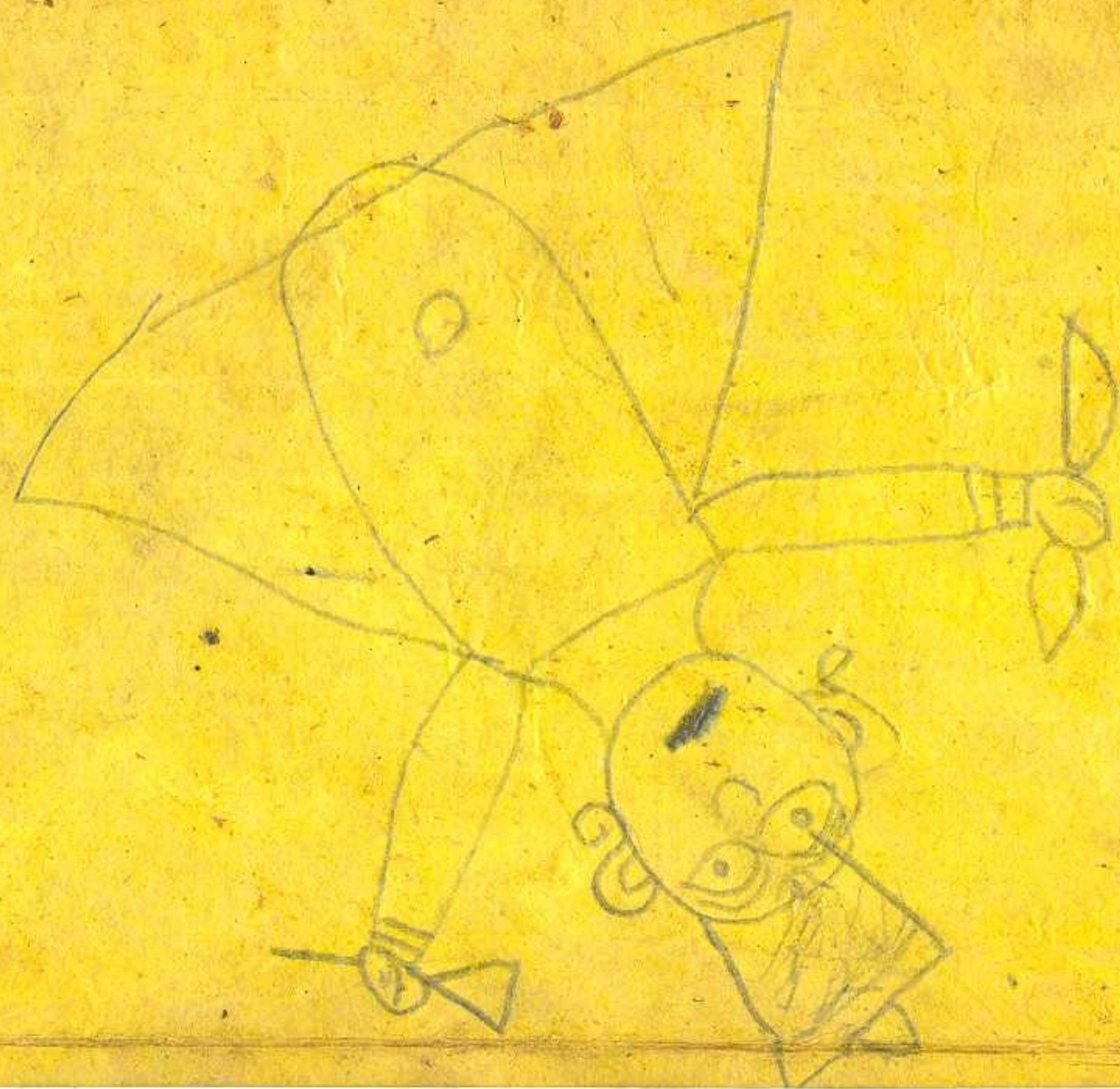








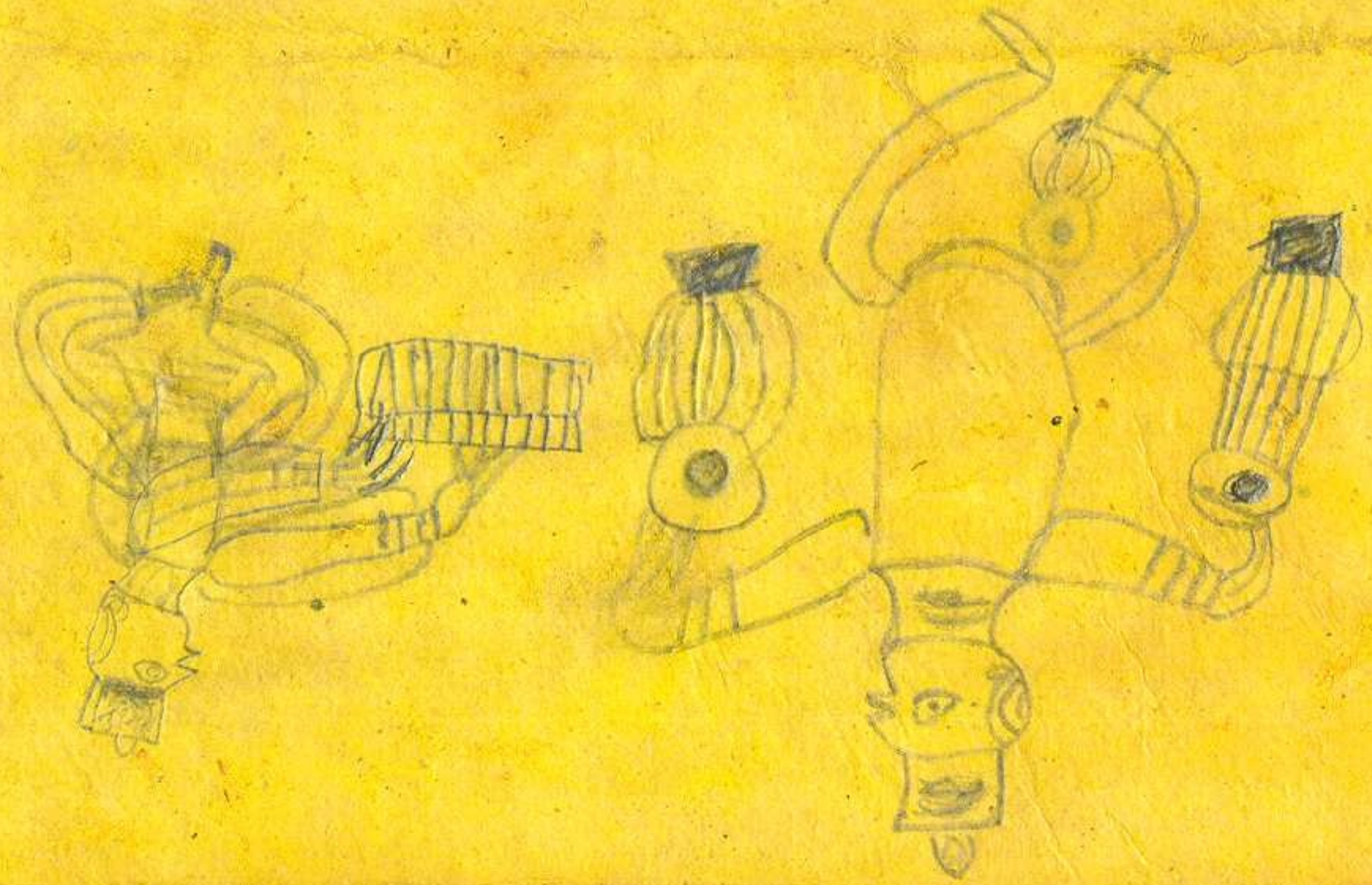


























Spencer

